वर्ष-22 ■ अंक-339
■ पृष्ठ-8 ■ मूल्य-2.00
भोपाल
■ गुरुवार ■ 10 जुलाई 2025
आषाढ़ पूर्णिमा
विक्रम संवत्-2082
E-mail
dainiksamayjagat@gmail.com
insmjagat@gmail.com

प्रधान संपादक : अशोक त्रिपाठी

म.प्र. के सर्वाधिक केंद्रों तक प्रसारित प्रदेश का एकमात्र समाचार पत्र

दैनिक
समय जगत

भोपाल, दिल्ली, म.प्र., उ.प्र. और अन्य राज्यों से एक साथ प्रकाशित

एक संदेश-पूरा देश

ईश्वर से अधिक मूल्यवान दुनिया में कुछ भी नहीं...

शीर्ष की ओर 'समय जगत'
Facebook
asksamayjagat
Instagram
@asksamayjagat
Twitter
@asksamayjagat
यूट्यूब पर
'खबर समय जगत'
को भी सब्सक्राइब करें
www.dainiksamayjagat.in

मंत्रि-परिषद की बैठक : गुरु पूर्णिमा 10 जुलाई को भोपाल के कमला नेहरू सांदीपनि विद्यालय का होगा लोकार्पण

प्रदेश की लाड़ली बहनों को 12 जुलाई को मिलेगी राशि : मुख्यमंत्री

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि लाडली बहनों के खाते में 12 जुलाई को राशि अंतरित की जाएगी। उन्होंने कहा कि अगले माह अगस्त में रक्षाबंधन के अवसर पर लाड़ली बहना योजना के तहत वर्तमान में दी जा रही मासिक आर्थिक सहायता राशि के साथ 250 रूपए की विशेष सहायता राशि भी अंतरित की जाएगी। उन्होंने कहा कि प्रदेश की करीब 1.27 करोड़ लाड़ली बहनों को इसका सीधा लाभ मिलेगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव बुधवार को मंत्रालय में मंत्रि-परिषद की बैठक से पहले मंत्रीगण को संबोधित कर रहे थे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बताया कि मध्यप्रदेश सरकार के एक नवाचार को दिल्ली के जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय ने भी अपना लिया है। मध्यप्रदेश की तरह जेएनयू दिल्ली में भी कुलपति अब कुलगुरु के नाम से जाने जाएंगे। जेएनयू ने मध्यप्रदेश से प्रेरणा लेकर यह कदम उठाया है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि गुरु पूर्णिमा 10 जुलाई को है। इस दिन प्रदेश के सभी विद्यालयों एवं महाविद्यालय में दो दिवसीय गुरु पूर्णिमा उत्सव कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। इन कार्यक्रमों में जिले के प्रभारी मंत्री भी प्रमुखता से शामिल होंगे। उन्होंने कहा कि गुरु पूर्णिमा कार्यक्रम में स्थानीय जनप्रतिनिधि, प्रबुद्ध नागरिक, गुरुजन एवं साधु संतों की भागीदारी भी सुनिश्चित की जाए। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि गुरु पूर्णिमा के अवसर पर भोपाल शहर में (कमला नेहरू स्कूल) सांदीपनि विद्यालय का लोकार्पण किया जायेगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि बीआरटीएस हटाने से बड़े ही सकारात्मक परिणाम सामने आए हैं।

मुख्यमंत्री ने एक रिपोर्ट का जिक्र करते हुए कहा कि बीआरटीएस हटाने से हादसों में 51 प्रतिशत और हादसों की वजह से मृत्यु में 70 प्रतिशत तक की कमी आई है। यह मध्यप्रदेश सरकार के जनहित में लिए गए निर्णयों के सुचारू क्रियान्वयन का सुखद परिणाम है। उन्होंने बताया कि सरकार ने जनवरी 2024 में बीआरटीएस हटाने का निर्णय लिया था। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने सभी मंत्रीगण से कहा कि मध्यप्रदेश सरकार के विजन 2023 के संदर्भ में अपने-अपने प्रभार के जिलों में भ्रमण करें और शेष रह गयीं विधानसभा से विज़न डाक्यूमेंट तैयार करने संबंधी कार्यों को अगले 10 दिन में पूर्ण कर लें। उन्होंने कहा कि विधानसभा के विकास से संबंधित कार्यों को बजट में शामिल करायें और इनके क्रियान्वयन के लिए भी समुचित कार्रवाई करें।

निषादराज सम्मेलन होंगे 12 जुलाई को

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रदेश में मत्स्य पालन के क्षेत्र में कार्यरत सभी व्यक्तियों के समग्र कल्याण एवं सम्मान के लिए निषादराज सम्मेलन आयोजित किए जाएंगे। उन्होंने बताया कि निषादराज जयंती 10 जुलाई को है, परंतु प्रदेश में समन्वित रूप से 12 जुलाई को निषादराज सम्मेलन आयोजित किए जाएंगे। इस सम्मेलन में मत्स्य पालन क्षेत्र में कार्यरत व्यक्तियों की पारिश्रमिक दरों में वृद्धि, बोनस वितरण, उनके विश्राम के लिए जलाशयों के किनारे प्लेटफॉर्म्स की स्थापना के संबंध में प्रयास किए जाएं।

लुधियाना के उद्योगपति भी जुड़ेंगे एमपी से

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने गत 7 जुलाई को पंजाब के लुधियाना में उद्योगपतियों के साथ हुए संवाद के अनुभव साझा करते हुए कहा कि मध्यप्रदेश में निवेश के अवसरों पर वहां बड़े उद्योगपतियों से चर्चा हुई। इन्टरैक्टिव सेशन में उद्योग जगत के 400 से अधिक प्रतिनिधियों ने बड़ी आत्मीयता और सक्रियता से भाग लिया। उन्होंने बताया कि लुधियाना सत्र में सरकार को 15606 करोड़ रुपए के निवेश प्रस्ताव मिले हैं। इस निवेश के धरातल पर आने से मध्यप्रदेश में लगभग 20275 से अधिक नये रोजगार सृजित होने की संभावना है।

13 से 19 जुलाई के बीच दुबई और स्पेन यात्रा

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बताया कि मध्यप्रदेश का एक प्रतिनिधिमंडल 13 से 19 जुलाई के दौरान दुबई और स्पेन की यात्रा पर रहेगा। इस दौरान प्रतिनिधिमंडल व्यावसायिक बैठकों और विभिन्न कंपनियों के साथ वन-टू-वन मीटिंग भी करेगा। उन्होंने बताया कि इस भ्रमण का उद्देश्य प्रमुख क्षेत्रों में निवेश प्राप्त करना, प्रौद्योगिकी के पारस्परिक हस्तांतरण और अंतर्राष्ट्रीय बाजारों तक अपनी पहुंच बनाना, रोजगार के नए अवसर सृजित करने एवं अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में और अधिक इजाफा करना है।

मुख्यमंत्री के युवाओं को रोजगार संपन्न बनाने की घोषणा पर हो रहा अमल

समय जगत, भोपाल। सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम मंत्री चैतन्य कुमार काश्यप ने बताया कि प्रदेश में रोजगार सृजन और आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देने के लिये राज्य शासन द्वारा निरंतर प्रभावी पहल की जा रही है। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के उद्योग और रोजगार वर्ष की घोषणा के अनुरूप विभाग लगातार एमएसएमई की स्थापना और रोजगार सृजन के लिए गंभीर प्रयास कर रहा है। केंद्र और राज्य की विभिन्न योजनाओं के माध्यम से युवाओं, महिलाओं और स्व-सहायता समूहों को ऋण, अनुदान और तकनीकी सहायता प्रदान कर उन्हें स्वावलंबी बनाया जा रहा है। मंत्री श्री काश्यप ने बताया कि प्रदेश में 18 लाख पंजीकृत एमएसएमई इकाइयों द्वारा 56 हजार करोड़ रूपये से अधिक निवेश कर 94 लाख से अधिक लोगों को रोजगार दिया गया है। इसी तरह 5,342 स्टार्टअप, 72 इनक्यूबेटर और 2,542 महिला स्टार्टअप्स के माध्यम से 54 हजार से अधिक लोगों को रोजगार मिला है। वर्ष 2024-25 में मुख्यमंत्री उद्यम क्रांति योजना और प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम के अंतर्गत 10,352 युवाओं को स्वरोजगार से जोड़ा गया। मंत्री श्री काश्यप ने बताया कि रोजगार सृजन के इस सबसे सशक्त माध्यम को और प्रभावी बनाया गया है। एमएसएमई विकास नीति 2025, स्टार्टअप नीति 2025 और औद्योगिक भूमि आवंटन नियम 2025 के माध्यम से प्राथमिकता क्षेत्रों को विशेष प्रोत्साहन दिया जा रहा है। स्टार्टअप नीति का लक्ष्य 10 हजार डीपीआईआईटी मान्यता प्राप्त स्टार्टअप्स को सहयोग प्रदान करना है।

हाल ही में रतलाम में संपन्न हुई रीजनल इंडस्ट्री, स्किल एण्ड एम्प्लॉयमेंट कॉन्क्लेव इसका उदाहरण है, जहां वित्तीय वर्ष 2025-26 में प्रदेश में अभी तक लाभान्वित हुए 2.37 लाख से अधिक लोगों को जिन्हें लगभग 2400 करोड़ रुपये से अधिक का ऋण बैंकों/वित्तीय संस्थाओं के माध्यम से मिला है, उनकी उपलब्धि को प्रदर्शित किया गया। साथ ही विभिन्न स्वरोजगार योजनाओं के तहत प्रदेश के 4 लाख से अधिक हितग्राहियों को 3861 करोड़ रूपये से अधिक का ऋण वितरित किया गया है। इसी तरह 880 एमएसएमई औद्योगिक इकाइयों को 269 करोड़ रूपये की वित्तीय सहायता उपलब्ध करवाई गई है। इन प्रयासों की अनेक सफल कहानियां भी नवउद्यमियों को प्रेरित कर रही है। पन्ना जिले के गांव गिरवारा निवासी रवि पाठक ने अर्चना राइस मिल नाम से अपना व्यवसाय आरंभ किया। इससे धान प्रसंस्करण के क्षेत्र में उन्हें विशिष्ट पहचान मिली है। रवि ने यह व्यवसाय एमएसएमई प्रोत्साहन योजना की सहायता से प्रारंभ किया। इसमें उन्होंने 133.83 लाख रूपये का निवेश किया, योजना के तहत उन्हें 53.53 लाख रूपये की सहायता मिली। इस योजना के लाभ से रवि का व्यवसाय बहुत अच्छा चल रहा है। इस व्यवसाय के शुरू होने से न सिर्फ रवि ने प्रगति की है बल्कि उन्होंने सात अन्य जरूरतमंद लोगों को रोजगार से जोड़ा है। रवि बताते हैं कि हमारी इकाई में गुणवत्ता का खास खयाल रखा जाता है जिससे कि ग्राहकों को किसी प्रकार की परेशानी न हो। इस पहल से वे आत्मनिर्भर हुए हैं साथ ही गांव के युवाओं को प्रेरणा भी मिली है। अब रवि गांव के अन्य लोगों को योजना की जानकारी दे रहे हैं और आवश्यकता पड़ने पर वे युवाओं को व्यवसाय प्रारंभ कराने में मदद भी कर रहे हैं। धार जिले के धानमंडी निवासी राकेश गहलोत ने पेंट और हार्डवेयर शॉप प्रारंभ की और आज वे अपने परिवार को आर्थिक संबल प्रदान कर रहे हैं। राकेश ने बताया कि शॉप शुरू करने के लिए उन्होंने जिला व्यापार एवं उद्योग केन्द्र से एमसएसएमई विभाग की मुख्यमंत्री उद्यम क्रांति योजना का लाभ लिया। इसमें उन्हें 25 लाख रूपये का ऋण स्वीकृत हुआ जिससे उन्हें रोजागार स्थापित करने में सहयोग मिला। धीरे-धीरे व्यवसाय ने गति पकड़ ली। अब उनके व्यवसाय से लगभग 50 लाख रूपये प्रतिवर्ष टर्नओवर मिल रहा है। श्री राकेश बताते हैं, एक समय था जब मैं बहुत हताश हो चुका था। अपने साथियों को जीवन में आगे बढ़ते देख में भी चाहता था कि मेरा भी अच्छा रोजगार स्थापित हो जाए। परिवार की जरूरतें पूरी करना, बच्चों की पढ़ाई और उनके शौक पूरे करना चाहता था। मेरा एक ही उद्देश्य था कि सभी प्रकार की आर्थिक परेशानियों से परिवार को मुक्त करना। इसके बाद मैंने शासन की योजना की सहायता लेकर समस्याओं का समाधान किया। आज श्री गहलोत अपने क्षेत्र में आईकान बन गए हैं।

मंत्री श्री काश्यप ने कहा एमएसएमई इकाइयों को उपलब्ध कराई जा रही है सहायता

वायुसेना का जगुआर हुआ क्रैश पायलट और को-पायलट की मौत

चूरू। राजस्थान के चूरू में भारतीय वायु सेना का फाइटर जेट क्रैश हो गया है। सेना के सूत्रों के मुताबिक यह जगुआर फाइटर जेट है। इस हादसे में विमान के पायलट और को-पायलट शहीद हो गए हैं। मौके पर फाइटर जेट जैसा मलबा बिखरा पड़ा है। चूरू एसपी जय यादव ने बताया कि राजलदेसर थाना क्षेत्र के गांव भाणूदा में प्लेन क्रैश हुआ है। इसमें दो लोगों की मौत हुई है। मौके पर राजलदेसर पुलिस को भेजा गया है। मलबे के पास से बुरी तरह क्षत-विक्षत शव के टुकड़े मिले हैं। सेना के सूत्रों के मुताबिक यह जगुआर फाइटर जेट श्रीगंगानगर के पास सूरतगढ़ एयरबेस से उड़ा था। यह जेट ट्विट सीटर था, ट्विन सीटर जेट ट्रेनिंग के लिए उपयोग किया जाता है। स्थानीय लोगों के मुताबिक उन्होंने पहले विमान की गड़गड़ाहट सुनी, फिर जोरदार धमाके की आवाज आई।

गुरू पूर्णिमा के पावन अवसर पर
सभी गुरूजनों को
शत् - शत् नमन्
रवीश त्रिपाठी
अध्यक्ष
श्रावणमास समारोह महासमिति झांसी

गुरूपूर्णिमा के पावन अवसर पर
सिद्धेश्वर सिद्ध पीठ के सद्गुरू
आचार्य पं. हरिओम पाठक जी
के गुरूचरणों में
शत् - शत् नमन्
रवीश त्रिपाठी
अध्यक्ष
श्रावण मास समारोह महासमिति झांसी
पं. जितेन्द्र तिवारी
केन्द्रीय अध्यक्ष
जिला जन कल्याण महासमिति झांसी

गुरूपूर्णिमा के पावन अवसर पर राजगढ़ के बल्लमपुर रोड पर स्थित राज राजेश्वरी त्रिपुर सुन्दरी मंदिर के सद्गुरू वेद्य
पं. रामेश्वरदास शास्त्री
(गुरू जी)
के गुरूचरणों में
शत् - शत् नमन्
रामगोपाल निरंजन, प्रधानाचार्य
बिलेज इण्टर कॉलेज राजगढ़, झांसी

गुरूपूर्णिमा के पावन अवसर पर
सिद्धेश्वर सिद्ध पीठ के सद्गुरू आचार्य पं. हरिओम पाठक जी
के
गुरूचरणों में
शत् - शत् नमन्
पं. गोकुल दुबे
प्रदेश अध्यक्ष
ब्राह्मण समाज उ.प्र.
श्रीमती सुशीला दुबे
पूर्व उपसभापति
नगर निगम झांसी

VANASTHALI
COLLEGE OF PHARMACY, REWA
ADMISSION
Counselling
2025-26 OPEN
B.Pharma
4 Years, PCI Approved
Eligibility : 12th Passed
(Maths/Biology)
D.Pharma
2 Years, PCI Approved
Eligibility : 12th Passed
(Maths/Biology)
नोट - काउंसलिंग एवं प्रवेश हेतु संस्था रविवार एवं अन्य अवकाश के दिनों में खुला रहेगा।
Contact: 9111100493, 8109412689
Add.: JNCT Campus, Near Bypass Crossing, Ratahra, Rewa.

गुरूपूर्णिमा के पावन अवसर पर अन्तर्राष्ट्रीय भागवताचार्य, ज्योतिषकर्ता, वैदिक अनुष्ठानकर्ता, आचार्य पं. श्री कमलाकांत अरजरिया के गुरूचरणों में शत्- शत् नमन....
आचार्य पं. कमलाकांत अरजरिया
गुरसरांय वाले
हाल निवास- गल्ला मण्डी रोड झांसी
जयराम गुप्ता
जयराम सेल्स स्टोन निवाड़ी
मनोज अग्रवाल
श्री गनेश ट्रैक्टर एण्ड एग्रीकल्चर गुरसरांय
अरूण चतुर्वेदी
वरिष्ठ पत्रकार गुरसरांय
गुणसागर गुप्ता
श्रीराम एसोसिएट झांसी
वीरेन्द्र कुमार साहू
विश्वनाथ ट्रेडर्स
इंजन पाइप व्यापारी गुरसरांय
यश अग्रवाल
होजरी व्यापारी झांसी
वैभव अग्रवाल
होजरी व्यापारी झांसी

फूलसागर पुल की जर्जर स्थिति से मंडलावासियों की जान जोखिम में, ध्यान दे प्रशासन

समय जगत, मंडला। जिले के फूलसागर क्षेत्र स्थित पुल की हालत दिन-ब-दिन खराब होती जा रही है, लेकिन संबंधित विभाग और प्रशासन की खामोशी आमजन के लिए खतरे की घंटी बनती जा रही है। बारिश के चलते पुल पर कई स्थानों पर गहरे गड्ढे बन चुके हैं, जिनमें गिट्टियां और लोहे की रॉड तक साफ दिखाई दे रही हैं। बारिश का पानी भर जाने के कारण ये गड्ढे और भी खतरनाक हो जाते हैं, जिससे आए दिन हादसे हो रहे हैं। स्थानीय लोगों ने बताया कि कई राहगीर इन गड्ढों में गिर चुके हैं, वहीं दोपहिया वाहन सवार भी इन खतरनाक खाइयों की चपेट में आ चुके हैं। जबलपुर से

लौट रहे यात्रियों ने भी पुल की स्थिति को भयावह बताया। उनका कहना है कि पुल अब पूरी तरह से दुर्घटना को न्योता दे रहा है, लेकिन जिम्मेदार अधिकारी आंखें मूंदे बैठे हैं। नागरिकों का कहना है कि ऐसा प्रतीत होता है जैसे विभाग किसी बड़ी दुर्घटना का इंतजार कर रहा है, तभी मरम्मत कार्य शुरू किया जाएगा – जैसा कि पहले भी कई बार देखा गया है। मंडला-जबलपुर मार्ग पर घाट कटिंग के दौरान की गई तकनीकी लापरवाही का खामियाजा आज भी जनता भुगत रही है। आए दिन चट्टानें खिसकने और दुर्घटनाओं के कारण यातायात बाधित होता है, लेकिन जिम्मेदार ठेकेदारों को न तो कोई फटकार मिली और न ही उनकी कार्यप्रणाली में सुधार आया है। जनता की ओर से प्रशासन से मांग की गई है कि स्थिति की गंभीरता को समझते हुए तत्काल स्थल का निरीक्षण किया जाए, दोषियों के विरुद्ध कार्रवाई हो और समय रहते पुल की मरम्मत कराई जाए, ताकि आमजन की जान जोखिम में न पड़े। प्रश्न यह है कि आखिर कब तक प्रशासन यूं ही मूकदर्शक बना रहेगा।

इनका कहना है

फूलसागर पुल की हालत देखकर साफ कहा जा सकता है कि प्रशासन किसी बड़ी दुर्घटना का इंतजार कर रहा है। गड्ढों में पानी भर जाने से गिट्टी और रॉड जैसे खतरनाक हालात बने हैं, लेकिन विभाग पूरी तरह उदासीन है। हर बार हादसे के बाद ही रिपेयरिंग की जाती है, यह रवैया बेहद दुर्भाग्यपूर्ण है।

डॉ. अशोक मर्सकोले
पूर्व विधायक

सार-समाचार

डूंगलावदा में हर्षोल्लास से मनाया जाएगा गुरु पूर्णिमा का पर्व

नीमच। मिशन विश्व गुरू जिलाध्यक्ष भूरालाल प्रजापति के डूंगलावदा स्थित निवास पर गुरू पूर्णिमा का पर्व हर्षोल्लास के साथ मनाया जाएगा। इस आयोजन में अयोध्या धाम, हनुमान गढ़ी के अनंत श्री विभूषित श्री श्री 1008 धर्म सम्राट श्री स्वामी गर्गाचार्य भी सम्मिलित होंगे। आषाढ़ी पूर्णिमा 10 जून गुरुवार को प्रातः 9 बजे गुरू पूजन होगा तथा 11 बजे स्वामी गर्गाचार्य के मुखारबिंद से प्रवचन होंगे। जिसके बाद दोपहर 2 बजे से प्रभुइच्छा तक भोजन प्रसादी का आयोजन होगा। इस अवसर पर मिशन विश्व गुरू जिलाध्यक्ष ने सभी धर्मप्रेमी जनता से आग्रह किया है कि वे सभी गुरू पूर्णिमा के पावन अवसर पर आयोजित इस आयोजन में पधारकर धर्मलाभ अवश्य ले। उक्त कार्यक्रम की जानकारी मिशन विश्व गुरू जिला मीडिया प्रभारी अरूण यादव द्वारा दी गई।

श्रद्धालुओं ने आकर्षक ताजियों को खूब निहारा, दिखा व्यापक उत्साह

समय जगत, कुक्षी, (निप्र)। शहर में आपसी स्नेह, भाईचारे, और साम्प्रदायिक एकता की मिसाल पेश करते हुवे कुक्षी का मोहर्रम पर्व हर्षोल्लास के साथ शांतीपुर्वक सम्पन्न हुआ। मुस्लिम समुदाय के पवित्र पर्व मोहर्रम पर बने आकर्षक ताजियो को निहारने हेतु कुक्षी के सभी समुदाय के लोगो ने अपनी उपस्थिति दर्ज करा कर आपसी सोहार्द की अनुठी मिसाल पेश की है। इस वर्ष मोहर्रम पर्व पर यादे हुसैन में ताजियादारो ने बड़े ही शानदार व आकर्षक ताजिये बनायें जिन्हे निहारने व मन्नते पुरी करने हेतु नगर के सभी समाजजनों की भारी भीड़ रात भर बनी रही। ताजियो मे यादे हुसैन कमेटी, एआरजी ग्ररुप भट्टी मोहल्ला, जमादार मोहल्ला कस्साब जमात मंगलवारिया के बारिक नक्काशीदार ताजिये, सिनेमा चौपाटी के विशाल ताजिये, बढ़ ?पुरा व गंजी मोहल्ला आदि कई ताजिये भी आकर्षक का केंद्र रहे। नगर के जानेमाने अखाड़े हुसैनी लश्कर अखाड़ा भट्टी मोहल्ला के जांबाजों ने ताशे नगाड़े की धुनो पर हैरत अंगेज कारनामे कर सभी को रोमांचित किया। कुक्षी नगर में इस वर्ष मोहर्रम का पर्व पूरी श्रद्धा, शांति और भव्यता के साथ मनाया गया। चारों ओर से श्या हुसैनर की सदाएं गूंजती रहीं और नगर की गलियां हुसैनी रंग में रंग गई। आकर्षक ताजियों की झलक पाने के लिए जायरीन बड़ी संख्या में उमड़े। नगर में जगह-जगह मुस्लिम समाज के रुग्प, पेनल व कमेटीयों दिल खुश पैनल, हुसैनी दिवाना, यादे हुसैन, निगाहे हुसैन, कुरेशी कस्साब फैमिली, एआरजी ग्रुप, आदि द्वारा लंगर में चाय, नाश्ता, सबील और शरबत, पानी के स्टाल लगाकर आने-जाने बालों को रात भर खाने-पीने की खिदमत की गई। अमलनेर के हबीब नाश बैंड, कुक्षी व महाराष्ट्र की ताशा पार्टी ने अपनी अद्भुत प्रस्तुति से सभी जायरीनों को मंत्रमुग्ध कर दिया।

शराब की दुकान पर 5 प्रतिशत ओवर रेट लेने पर कलेक्टर ने की शराब ठेकेदारों पर की बड़ी कार्यवाही

कालापीपल। शाजापुर कलेक्टर द्वारा हर विभाग में ताबड़तोड़ कार्यवाही करने के लिए जानी जाती है, वही एक दिन पूर्व ही शराब ठेकेदारों की जांच के दौरान 5 अतिरिक्त लिए जाने पर विभागीय कार्यवाही करते हुए कलेक्टर द्वारा अजेन्द सिंह सिकरवार पर 26053 की शास्ति अधिरोपित कंपोजिट दुकान पर एवं जगत सिंह सिसोदिया पर 52475 रुपए की राशि शास्ति अधिरोपित की गई, इस कार्यवाही से शराब ठेकेदारों हड़कंप मचा हुआ है। पूरे शाजापुर जिले सहित कालापीपल में निजी स्कूलों द्वारा अभिभावकों के साथ किताब, ड्रेस, फीस आदि पर खुली लूट मचा रखी है, यहां सब कुछ शाजापुर कलेक्टर महोदय सुश्री ऋजु बाफना को नहीं दिखाई दे रहा है, कालापीपल बी.आर.सी का यहां आलम है कि उन्हे नहीं मालूम होता है कि कालापीपल की निजी दुकानों पर निजी स्कूलों के द्वारा कौन सी पुस्तक विक्रय करवाई जा रही है, और कौन से निजी स्कूलों द्वारा ड्रेस बेची जा रही है जब मीडिया द्वारा बीआरसी से इस विषय पर बात की जाती है तो उनको जानकारी नहीं होती है, मीडिया के द्वारा निजी स्कूलों में चल रही पुस्तकों की लिस्ट जब इन से उपलब्ध करवाई जाती है प्रमाणित प्रति देने के बाद भी बाजार में पुस्तकें निजी स्कूलों द्वारा दुकानदारों को जो लिस्ट दी गई, उसके हिसाब बेची जा रही है, निजी स्कूलों द्वारा बीआरसी को जो लिस्ट दी गई, बाजार में जो पुस्तकें दी जा रही है वह अलग है जब अभिभावक पुस्तक लेने दुकानदारों के पास जाता है, तो दुकानदारों द्वारा जो पुस्तक अभिभावकों को दी जाती है, उस पुस्तक के रेट बीआरसी की लिस्ट के अनुसार 1365 रुपए का होना चाहिएफ्रफर्स्ट क्लास का कोर्सफ्रलेकिन जब दुकानदार के पास कोर्स लेने अभिभावकों जाते हैं तो दुकानदार 1665 रुपए में देता है।

दादा दरबार में आज भी गुरु–शिष्य परंपरा का किया जा रहा है पालन

गुरु पूर्णिमा पर दादाजी दरबार में उमड़े श्रद्धालु भक्तों की सेवा- स्वागत में जुटा पूरा शहर

खंडवा। गुरु पूर्णिमा के अवसर पर खंडवा के श्री दादा दरबार में लाखों श्रद्धालु पहुंचे और उन्होंने दादाजी के चरणों में शीश नवाया। गुरु पूर्णिमा पर दादाजी और उनके भक्तों के बीच गुरु-शिष्य का रिश्ता होने के कारण यहां बड़ी संख्या में श्रद्धालु आते हैं. भगवान शंकर के अवतार कहे जाने वाले संत केशवानंद जी महाराज की भव्य समाधि स्थापित है। यहां उन्होंने सन 1930 में अपना देहत्याग किया था। केशवानंद जी महाराज यानि बड़े दादाजी अपने निकट हमेशा एक धूनी जलाए रखते थे। वो धूनी आज भी खंडवा में लगातार पिछले करीब 90 वर्षों से जलती आ रही है।खंडवा अवधूत संत केशवानन्द की तपोभूमि कहलाता है। हमेशा अपने सामने आग की धुनी रमाये रखने वाले संत की समाधि खंडवा में है। जिन्हें भक्त दादाजी धुनी वाले के नाम से याद करते है।तीन दिनों तक चलने वाले इस महोत्सव में 10 लाख से अधिक श्रद्धालु दर्शन करते हैं. श्रद्धालु देश के विभिन्न हिस्सों से यहां पहुंचते हैं, कुछ तो 300

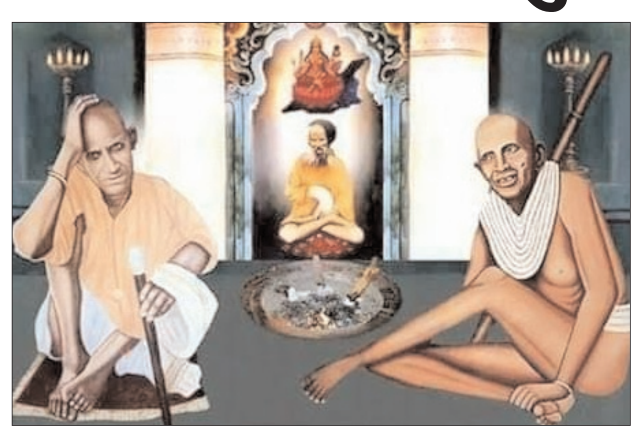

किलोमीटर से भी अधिक की पदयात्रा करके. गुरु पूर्णिमा पर दादाजी के दरबार में सेवा का अद्भुत माहौल होता है, और कोई भी भक्त भूखा नहीं लौटता, अवधूत संत श्रीधूनीवाले दादाजी की समाधि पर शीश नवाने के लिए श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ रही है। बुधवार से ही पूर्णिमा तिथि शुरू होने पर कल भी यहां बड़ी संख्या में श्रद्धालु दादाजी दरबार पहुंचे। देर रात तक समाधि पर करीब एक लाख श्रद्धालुओं ने दर्शन कर लिए थे। भज लो दादाजी का नाम भज लो हरिहरजी का नाम के जयकारे से दरबार गूंज उठा।

गुरु और शिष्य की समाधि आजू-बाजू: मध्यप्रदेश और महाराष्ट्र के अनेक जिलों से लोक पैदल ही निशान लेकर यहां पहुंचते हैं. कई दिनों का सफर पैदल तय करते हुए यहां पहुंचने वाले लोगों का मानना है कि उनके लिए दादा जी महाराज का स्मरण करना ही पर्याप्त है उनकी सभी मनोकामनाएं पूर्ण हो जाती हैं।गुरु पूर्णिमा के पावन पर्व पर दादा दरबार में विशेष पूजा अर्चना की जाएगी जिसमें महा आरती का आयोजन किया जाएगा साथ ही दादाजी को समाधि पर मालपुआ और अन्य व्यंजनों का विशेष भोग लगाया गया। इधर महाराष्ट्र, गुजरात, दिल्ली, सहित अन्य क्षेत्रों से बड़ी संख्या में आए श्रद्धालु सुबह से ही समाधि दर्शन के लिए आतुर नजर आएगुरु पूर्णिमा के पावन पर्व पर अन्य राज्यों से आए दादा भक्तों की सेवा के लिए पूरे शहर जिले में और अन्य जिलों में भी जहां से ज्यादा भक्त आ रहे हैं उनके लिए भंडारे चाय नाश्ता निशुल्क व्यवस्था की जा रही है जिसमें दादा भक्तों को कुछ भंडारा स्थलों पर श्रद्धालुओं को बैठाकर भोजन प्रसादी उपलब्ध कराई गई तो कहीं कतार में लगाकर व्यंजन दिए गए। विभिन्न प्रकार के पकवान के साथ आने -जाने के लिए टेक्सी और स्वास्थ्य खराब हो जाए तो दवाइयां भी मुफ्त मिलती है। मुफ्त की यह व्यवस्था सरकार नहीं बल्कि खंडवा के निवासी आपसी सहयोग से करते हैं। क्योंकि गुरुपूर्णिमा के पर्व पर इस शहर का नजारा बेहद अलग होता है।

हिंदू समुदाय के लोगों ने असामाजिक तत्वों की गिरफ्तारी के लिये अनुविभागीय अधिकारी को सौंपा ज्ञापन

समय जगत, खाचरोद। नगर में सोमवार की रात्रि करीब 12 से 1 बजे के बिच किसी असामाजिक तख्तों द्वारा जानबुझकर बेजुबान केडे की पूछ व पैर पर धार-दार हथियार से केंडे की पूछ व पेर को काट दिए जाता हैं फिर जब हिंदू संगठन के कार्यकर्ताओं को सूचना मिलती है तो पुलिस प्रशाशन को भी सूचना की जाती है और फिर पशु चिकित्सालय सूचना कर डॉक्टर बुलवाकर इलाज करवाया जाता है और फिर गोपाल गौशाला में छोड़ दिया जाता है उसके 48 घंटे बीत जाने के बाद भी अभी तक यह कृत करने वाला पुलिस की गिरफ्त में नहीं होने से सर्व हिंदू संगठनों व समाज जानो में आक्रोश है व हिंदू भावनाओं को ठेस पहुंचा ने का और नगर की शांति व्यवस्था को भंग करने का प्रयास किया जाता है इसी को लेकर सर्व हिंदू समाज जानो ने तहसील परिसर में पहुंच कर नारे बाजी करते हुए अनुविभागीय अधिकारी नेहा शाहू ओर थाना प्रभारी धन सिंह नलवाया को ज्ञापन सौंप कर 48 घंटे के अंदर यह निंदनीय कृत करने वाले की गिरफ्तारी की मांग की। अगर यह भी कहा नहीं पकड़ा जाता है तो सर्व हिन्दू समाज खाचरौद में उग्र आदोलन व धरना प्रदर्शन करेगा।

अपनी आस्थाओं के साथ राष्ट्रीय भावना को भी सुदृढ़ करे समाज : जादौन

गंज बासौदा। मुस्लिम राष्ट्रीय मंच गौ सेवा प्रकोष्ठ के राष्ट्रीय संयोजक अंतर्राष्ट्रीय गौ कथा वाचक, संत, गौ वत्स मोहम्मद फैज खान साहब के जन्मोत्सव के अवसर पर शंहशाह ऐ रेलवे के नाम से विख्यात सूफी संत सैयद सुमेर शाह बाबा साहब (रह.)की दरगाह सुमेर स्टेशन पर चादर फूल तवरूख पेश कर मुल्क मे अमन शांति और विकसित भारत निर्माण के लिऐ दुआ की गई। इस अवसर पर राष्ट के वरिष्ठ नेता डा राकेश सिंह जादौन ने मुस्लिम समाज के ऐतिहासिक, सामाजिक और सांस्कृतिक पहलुओं पर गहन विचार प्रस्तुत किए। उन्होंने कहा कि भारत के मुस्लिम समाज को अपनी आस्थाओं के साथ-साथ राष्ट्रीय भावना को भी सुदृढ़ करना चाहिए। उन्होंने यह भी बताया कि किस प्रकार समाज की अवस्था को बेहतर बनाने के लिए व्यवस्था में सकारात्मक भागीदारी आवश्यक है। आगे कहा कि समाज के हर वर्ग को राष्ट निर्माण में सहभागी बनना होगा। हमें धर्म के आधार पर नहीं, बल्कि कर्तव्य के आधार पर एकजुट होना चाहिए। उन्होंने युवाओं को राष्ट के विकास में सक्रिय भागीदारी के लिए प्रेरित किया और समाज में आपसी सद्भाव बनाए रखने पर बल दिया।इस अवसर पर मंच के राष्ट्रीय सह

संयोजक सैयद शफाकत हुसैन कादरी ने कहा सूफी संत, इंसानियत के रास्ते पर चलने वाला होता है जो सबको अपनाता है वो किसी जाति वर्ग पंथ समुदाय धर्म का नही होता इसलिए उसे संत या सूफी संत या बाबा साहब कहते है। हम प्यार से चल सकते है लड़कर नहीं। किसी भी ग्रंथ या पुस्तक में लड़ने का नहीं प्यार और मोहब्बत का संदेश दिया है। हमे कटरता का संदेश किसी ने नहीं दिया। पैगम्बर हजरत मुहम्मद साहब, भगवान श्रीराम, श्री कृष्ण के बताऐ मार्ग पर चलकर ही राष्ट्र आगे बढ सकता है यजीद, रावण कंस, कौरव, कसाब के मार्ग पर चलकर नही इस अवसर पर राष्ट्वादी नेता सोनू जैन बडकुल, यशवंत सिंह रघुवंशी ने कहा सूफी संत की दरगाह से पूरी दुनिया को मोहब्बत का पैगाम जाएगा।

इंदिरा प्रियदर्शिनी अवॉर्ड के लिए डॉ सुवि मनीष स्वामी मुंबई का हुआ चयन

समय जगत, धार। पत्रकार सुरक्षा एवं कल्याण के लिए प्रतिबद्ध अखिल भारतीय संगठन प्रेस क्लब ऑफ वर्किंग जर्नलिस्ट्स का तीसरा राष्ट्रीय अधिवेशन मुंबई में आगामी 23अगस्त को सम्पन्न होगा । इस अधिवेशन में संगठन के विशिष्ट सम्मानों के लिए चयनित महानिभूतियों के नामों की आज घोषणा हुई। संगठन की राष्ट्रीय संगठन महासचिव तथा अधिवेशन आयोजिका श्रीमती शशि दीप मुंबई के अनुसार संगठन की स्थापना के सातवें वर्ष में इस वर्ष तीसरा राष्ट्रीय अधिवेशन 23अगस्त 2025को मेयर्स ऑडिटोरियम हाल जुहू लेन अंधेरी वेस्ट मुंबई में राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉक्टर सैयद खालिद कैस एडवोकेट की अध्यक्षता में आयोजित किया जाएगा। संगठन का शीर्षस्थ सम्मान इंदिरा प्रियदर्शिनी अवॉर्ड इस वर्ष कैंसर पीड़ितों की माता, मानवता की प्रवर्तक , ईश्वरा

लाईफ साइंसेज मुम्बई की निदेशक श्रीमती डॉक्टर सुवि मनीष स्वामी मुंबई को नवाजा जाएगा। इस वर्ष के विशिष्ट सम्मानों के लिए चयनित महानिभूतियों के नामों की घोषणा अनुसार इस वर्ष का राष्ट माणिक सम्मान शांति दूत महान समाज सेवी श्री सुधीर तारे को दिया जाना है। संगठन द्वारा दिया जाने वाला मणिकर्णिका सम्मान श्रीमती ए डी मानेक मुंबई को दिया जायेगा। संगठन द्वारा दिया जाने वाले स्त्री शक्ति सम्मान के इस वर्ष श्रीमती रवीना घोष कोलकाता श्रीमती पुष्पा चन्देरिया मध्य प्रदेश का चयन किया गया है। इस वर्ष का भारत गौरव सम्मान शाकिर मलिक गुजरात, हकीम इलियास भाई शाह गुजरात सहित पिंकी खनूजा ,गजेन्द्र खनूजा मध्य प्रदेश को दिया जायेगा। इस वर्ष के प्राइड ऑफ नेशन अवॉर्ड के लिए रियाज़ खान राजस्थान का चयन किया गया है। संगठन द्वारा दिया जाने वाला भागवत प्रसाद स्मृति सम्मान इस वर्ष कवि राकेश गुप्त निर्मल मुंगेली छग को दिया जायेगा। मानवता के प्रवर्तक निर्माता निर्देशक रविन्द्र अरोरा की स्मृति में इस वर्ष से आरंभ किया जाने वाला रवींद्र अरोरा स्मृति सम्मान वरिष्ठ पत्रकार आनंद शर्मा नागपुर को दिया जायेगा।

बैराड़ में अन्नदाताओं को दिया जा रहा नकली बीज, खेतों में डालने के बाद उग रही 30 प्रतिशत फसल, थाने में की शिकायत

समय जगत, शिवपुरी। शिवपुरी जिले के बैराड क्षेत्र में इन दिनों किसान कृषि विभाग की उदासीनता से परेशान हैं। आरोप है कि क्षेत्र में मिल रहा सोयाबीन और ज्वार बाजरा का बीज घटिया और खराब क्वालिटी का है, जो खेतों में अंकुरित ही नहीं हो रहा। इससे किसानों की मेहनत और पैसा दोनों बर्बाद हो गया है। मामले को लेकर किसानों ने बैराड थाने में लिखित शिकायत भी दर्ज कराई है। बैराड क्षेत्र के दर्जनों गांवों के किसानों का आरोप है कि उन्होंने बैराड कस्बे की खाद-बीज दुकानों से सोयाबीन का बीज

खरीदा था। लेकिन जब उन्होंने इसे खेतों में बोया तो करीब 30 प्रतिशत ही बीज अंकुरित हुआ। यही नहीं, कई किसानों ने पशुओं के चारे के लिए ज्वार बाजरा का बीज भी खरीदा, जो बिल्कुल भी अंकुरित नहीं हुआ। कुछ किसानों ने जब बीज की बोरी खोलकर देखी तो उसमें पहले से ही बीज अंकुरित अवस्था में मिले।

किसानों ने जब यह शिकायत दुकानदारों से की तो किसी ने भी बीज की गुणवत्ता को लेकर जवाबदेही नहीं ली। विरोध बढ़ता देख दुकानदार अपनी दुकानों पर ताले डालकर भाग गए। इसके बाद किसानों ने बैराड थाने पहुंचकर पूरी घटना की शिकायत दर्ज कराई। बैराड थाना प्रभारी रवि शंकर कौशल ने कहा कि किसानों की शिकायत पर संबंधित दुकानों के दस्तावेजों की जांच की जाएगी। दोषी पाए जाने पर वैधानिक कार्यवाही की जाएगी। इस मामले में कृषि विभाग के एसएडीओ आरपी पचौरी का कहना है कि वे खुद बैराड की सभी खाद-बीज दुकानों का निरीक्षण करेंगे। यदि किसी दुकान पर घटिया या अंकुरित बीज पाया जाता है तो दुकानदारों के खिलाफ सख्त कार्यवाही की जाएगी।

सिलवानी पशु चिकित्सालय में डॉक्टर की लापरवाही उजागर घायल गाय को उपचार न मिलने पर हिंदू संगठनों ने किया प्रदर्शन

समय जगत, सिलवानी। सिलवानी स्थित पशु चिकित्सालय में पदस्थ डॉक्टर विष्णु पाटीदार की लापरवाही एक बार फिर चर्चा का विषय बन गई है। बुधवार को एक सड़क दुर्घटना में गंभीर रूप से घायल गाय को इलाज के लिए अस्पताल लाया गया, लेकिन डॉक्टर की अनुपस्थिति के चलते समय पर उपचार नहीं हो सका। इससे नाराज होकर विश्व हिंदू परिषद, बजरंग दल और अन्य हिंदू संगठनों ने जोरदार विरोध प्रदर्शन किया। प्रदर्शनकारी कार्यकर्ताओं ने चिकित्सालय का घेराव करते हुए डॉक्टर विष्णु पाटीदार के खिलाफ कार्रवाई की मांग की। कार्यकर्ताओं और स्थानीय नागरिकों का आरोप है कि डॉक्टर पाटीदार अक्सर अस्पताल में अनुपस्थित रहते हैं। जब उनसे संपर्क किया जाता है, तो वे ÷फील्ड में होने÷ का बहाना बनाकर जिम्मेदारी से बचते हैं। आरोप है कि वे महीने में एक या दो बार ही अस्पताल आते हैं और सामूहिक रूप से हाजिरी रजिस्टर में हस्ताक्षर कर लौट जाते हैं। हिंदू उत्सव समिति के अध्यक्ष राजीव सोनी ने बताया कि जब

डॉक्टर पाटीदार से इलाज में को लेकर बात की गई, तो उन्होंने जवाब दिया कि अस्पताल में बजट की भारी कमी है। डॉक्टर के अनुसार, यदि घायल पशुओं का इलाज कराना है तो स्थानीय नागरिकों को आर्थिक सहायता जुटानी होगी। इस मामले की गंभीरता को देखते हुए तहसीलदार भरत मंडरे मौके पर पहुंचे और अस्पताल का निरीक्षण कर हाजिरी रजिस्टर को जब्त कर पंचनामा बनाया। प्रदर्शन कर रहे संगठनों का कहना है कि जब प्रशासन एक ओर 162 मोबाइल वैन चलाकर पशुओं को अस्पताल पहुंचाने की बात करता है, वहीं दूसरी ओर अस्पताल में तैनात डॉक्टर इलाज के लिए बजट का रोना रोते हैं। इससे प्रशासन की कार्यप्रणाली और जवाबदेही पर गंभीर सवाल खड़े हो रहे हैं। वहीं नाराज हिंदू संगठनों ने चेतावनी दी है कि यदि जल्द ही डॉक्टर पाटीदार के खिलाफ ठोस कार्रवाई नहीं की गई, तो वे उग्र आंदोलन शुरू करेंगे। हिंदू संगठन एवं स्थानीय लोगों की मांग है कि- डॉक्टर विष्णु पाटीदार को तत्काल निलंबित किया जाए। अस्पताल में डॉक्टर की नियमित उपस्थिति सुनिश्चित की जाए। घायल और बीमार पशुओं के त्वरित उपचार के लिए अतिरिक्त स्टाफ और संसाधन उपलब्ध कराए जाएं। यह घटना न केवल प्रशासनिक लापरवाही को उजागर करती है, बल्कि यह भी बताती है कि ग्रामीण क्षेत्रों में पशु चिकित्सा सेवाएं कितनी उपेक्षित हैं। इस दौरान वरिष्ठ समाज सेवी महेश नामदेव संजू सेन बजरंग दल जिला संयोजक राहुल नामदेव बजरंग दल प्रखंड मंत्री हीरा कुशवाहा लकी कुलकर्णी हरदयाल मेहरा शुभम सोनी आयुष साहू उपस्थित रहे।

इनका कहना है

तहसीलदार भरत माडरे ने बताया कि इस मामले में विस्तृत जांच प्रतिवेदन बनाकर वरिष्ठ अधिकारी को सौंपा जायेगा ताकि दोषी डॉक्टर पर उचित कार्रवाई हो सके।

बजरंग दल के जिला संयोजक राहुल नामदेव

सिरमौर जनपद अध्यक्ष को हटाने की सियासी पटकथा तेज, 19 सदस्यों ने जताया अविश्वास

कलेक्टर को सौंपा प्रस्ताव

रीवा। जनपद पंचायत सिरमौर में इन दिनों सियासी हलचल तेज हो गई है। अध्यक्ष पद को लेकर उठा बवंडर अब साफ तौर पर सत्ता के गलियारों में गूंजने लगा है। जनपद अध्यक्ष के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव लाने की कवायद अंतिम चरण में पहुंच चुकी है। मंगलवार को सिरमौर जनपद के कुल 19 निर्वाचित सदस्यों ने कलेक्टर कार्यालय पहुंचकर अविश्वास प्रस्ताव का ज्ञापन सौंपा। यह कदम सिरमौर की राजनीति में एक बड़े परिवर्तन के संकेत के रूप में देखा जा रहा है।

क्या है मामला?: सिरमौर जनपद पंचायत में वर्तमान अध्यक्ष के कार्यकाल को लेकर लंबे समय से असंतोष की खबरें सामने आ रही थीं। आरोप है कि जनपद अध्यक्ष की कार्यशैली से अधिकांश निर्वाचित सदस्य नाखुश हैं। योजनाओं के क्रियान्वयन, विकास कार्यों में पारदर्शिता की कमी और जनसुनवाई की उपेक्षा जैसे मुद्दों को लेकर अध्यक्ष के खिलाफ नाराजगी बढ़ती गई। अब यह असंतोष अविश्वास प्रस्ताव के रूप में सामने आ चुका है।

किसने जताया अविश्वास?: अविश्वास जताने वाले कुल 19 जनपद सदस्यों ने हस्ताक्षर सहित एक सामूहिक ज्ञापन रीवा कलेक्टर को सौंपा है। इनमें उपाध्यक्ष मिश्रीलाल तिवारी उर्फ भोले सहित प्रमुख सदस्यों के नाम शामिल हैं सरोज आदिवासी , सिया शरण आदिवासी, मुन्नी दाहिया, निशा सिंह, राजेंद्र सिंह वार्ड ,शांति नारायण पांडे वार्ड ,रामलाल कोल, श्यामकली साकेत, तेजा साहू, सावित्री साकेत,राधे केवट प्रतिभा सिंह , सारथी सिंह,शैलेंद्र शुक्ला , सविता केवट, बृजमोहन सिंह ,अभिषेक त्रिपाठी,रामकली सोधिया का नाम शामिल है। इन सभी सदस्यों ने संयुक्त रूप से अध्यक्ष पर जनहित की उपेक्षा और जनप्रतिनिधियों को दरकिनार करने का आरोप लगाया है।

कलेक्टर को सौंपा ज्ञापन: जनपद सदस्यों का प्रतिनिधिमंडल कलेक्टर कार्यालय पहुंचा और रीवा कलेक्टर विवेक सिंह को प्रस्ताव सौंपा। सदस्यों ने मांग की कि जनपद अध्यक्ष को हटाकर नए अध्यक्ष का चुनाव कराया जाए, जिससे पंचायत की कार्यप्रणाली को फिर से गतिशील बनाया जा सके।कलेक्टर ने मामले की संवेदनशीलता को देखते हुए विधिसम्मत कार्यवाही का आश्वासन दिया है। अगले कुछ दिनों में जनपद पंचायत के विशेष सत्र की तारीख तय होने की संभावना है, जहां प्रस्ताव पर मतदान कराया जाएगा।

राजनीतिक समीकरण में उलटफेर: इस प्रस्ताव से सिरमौर की स्थानीय राजनीति में बड़ा उलटफेर होने की संभावना है। गौरतलब है कि जिन 19 सदस्यों ने अविश्वास जताया है, वह जनपद के कुल सदस्यों का दो-तिहाई से भी अधिक हिस्सा है, जो प्रस्ताव को पारित कराने के लिए पर्याप्त माना जाता है। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि यह केवल प्रशासनिक मामला नहीं है, बल्कि इसके पीछे राजनीतिक शक्ति संतुलन को लेकर एक बड़ी साजिश या रणनीति हो सकती है। यह भी कयास लगाए जा रहे हैं कि जनपद अध्यक्ष की जगह उपाध्यक्ष मिश्रीलाल तिवारी या किसी अन्य सशक्त नेता को कुर्सी सौंपी जा सकती है।

विपक्ष की भूमिका और बयानबाज़ी: विपक्षी दलों के स्थानीय नेताओं ने इस घटनाक्रम पर प्रतिक्रिया देते हुए कहा है कि यह अविश्वास प्रस्ताव जनसरोकारों की जीत है। एक वरिष्ठ नेता ने कहा, जो नेता जनहित से ऊपर निजी हित को रखेगा, उसे कुर्सी पर बने रहने का कोई नैतिक अधिकार नहीं है।÷ वहीं अध्यक्ष समर्थक खेमा इस पूरे मामले को राजनीतिक षड्यंत्र बता रहा है। उनका आरोप है कि जनपद की स्थिरता को भंग करने की कोशिश की जा रही है। समर्थकों का कहना है कि अध्यक्ष ने पूरे कार्यकाल में पारदर्शी तरीके से काम किया है, अविश्वास प्रस्ताव व्यक्तिगत रंजिश का नतीजा है।

आगे क्या हो सकता है?: अब सारी निगाहें कलेक्टर द्वारा प्रस्तावित विशेष बैठक पर टिकी हैं, जहां जनपद अध्यक्ष के खिलाफ प्रस्ताव पर औपचारिक मतदान कराया जाएगा। यदि प्रस्ताव पारित हो जाता है तो अध्यक्ष को पद से हटाना पड़ेगा और नए अध्यक्ष का निर्वाचन होगा। यदि प्रस्ताव खारिज होता है तो यह अध्यक्ष की राजनीतिक जीत मानी जाएगी।

जनता की प्रतिक्रिया: स्थानीय जनता इस पूरे प्रकरण को मिश्रित दृष्टिकोण से देख रही है। एक तरफ जहां कुछ लोगों को उम्मीद है कि नए नेतृत्व के आने से विकास कार्यों में तेजी आएगी, वहीं कुछ लोगों को आशंका है कि इससे जनपद में अनावश्यक अस्थिरता और अराजकता फैल सकती है। सिरमौर जनपद पंचायत में अध्यक्ष के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव राजनीतिक हलचल का केंद्र बन चुका है। यह मुद्दा अब केवल एक प्रशासनिक कार्यवाही नहीं, बल्कि पूरे इलाके की राजनीतिक दिशा तय करने वाला मामला बन गया है। आने वाले दिनों में यह देखना दिलचस्प होगा कि क्या यह प्रस्ताव जनसमर्थन और लोकतांत्रिक भावना की जीत बनकर सामने आता है, या फिर सियासी जोड़-तोड़ से यह मुद्दा भी ठंडे बस्ते में चला जाएगा। राजनीति के इस खेल में फिलहाल गेंद प्रशासन के पाले में है।

सार-समाचार

अमहिया पुलिस की कार्यवाही 5000 का इनामी हत्या के प्रयास का आरोपी गिरफ्तार

रीवा। पुलिस अधीक्षक रीवा विवेक सिंह एवं अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक रीवा श्रीमती आरती सिंह के निर्देशन में तथा नगर पुलिस अधीक्षक– 1 रीवा श्रीमती डा. रितु उपाध्याय के मार्गदर्शन में थाना प्रभारी अमहिया उनि शिवा अग्रवाल ने थाना स्टाफ के साथ मिलकर दिनांक घटना 27.05.25 के 19.15 बजे घटना स्थल लोटस टावर के सामने मेन रोड़ के किनारे खुटेही रीवा में फरियादी दीपक पाण्डेय स/ह हरिचरण पाण्डेय उम्र 28 वर्ष निवासी वार्ड क्रमाक 11 सिरमौर थाना सिरमौर जिला रीवा मप्र के साथ लोहे की रॉड और बेल्ट से मारपीट कर बेहोशी की हालत में छोड़कर भाग जाने वाले आरोपियों के विरुद्ध थाना अमहिया में अप क्र. 153/25 धारा 296 (2), 109 (1), 115 (2), 351(2), 3(5) बीएनएस कायम किया जाकर विवेचना में लिया गया और आरोपियों की पता तलास हेतु टीम गठित कर अलग अलग स्थानों में दबिश दी गई जिसमें आरोपी अंकुल तिवारी पिता कौशलेष तिवारी उम्र 19 वर्ष निवासी ग्राम बगदरा थाना सगरा जिला रीवा को गिरफ्तार कर पेश न्यायालय किया गया जहां से न्यायालय द्वारा जेल भेज दिया गया है ।गिरफ्तार आरोपी – अंकुल तिवारी पिता कौशलेष तिवारी उम्र 19 वर्ष निवासी ग्राम बगदरा थाना सगरा जिला रीवा (म.प्र.) महत्वपूर्ण भूमिका :– उनि शिवा अग्रवाल, उनि आर.एन बागरी, विकास तिवारी, शंकरदत्त जैसवाल, आरक्षक रामलाल वर्मा की सराहनीय भूमिका रही ।

कमिश्नर 11 जुलाई को करेंगे राजस्व कार्यों की समीक्षा

समय जगत, रीवा। कमिश्नर बीएस जामोद संभागीय बैठक में 11 जुलाई को राजस्व कार्यों की समीक्षा करेंगे। बैठक दोपहर 12 बजे से कमिश्नर कार्यालय सभागार में आरंभ होगी। बैठक में आरसीएमएस पोर्टल में राजस्व प्रकरणों के निराकरण, दो वर्ष से अधिक समय से लंबित प्रकरणों के निराकरण, सीएम हेल्पलाइन, स्वामित्व योजना, फार्मर रजिस्ट्री, प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना, राजस्व वसूली, धारणाधिकार तथा भूअर्जन के प्रकरणों की समीक्षा की जाएगी। बैठक में बाढ़ से निपटने की तैयारियों, प्रतिबंधात्मक कार्यवाही, आबादी भूमि के चिन्हांकन तथा लैण्ड बैंक निर्माण की भी समीक्षा की जाएगी। बैठक में संभाग के सभी जिलों के कलेक्टर तथा एसडीएम शामिल होंगे।

कमिश्नर करेंगे स्वास्थ्य तथा महिला बाल विकास विभाग की समीक्षा

रीवा। कमिश्नर बीएस जामोद 16 जुलाई को कमिश्नर कार्यालय सभागार में आयोजित बैठक में स्वास्थ्य विभाग तथा महिला एवं बाल विकास विभाग के कार्यों की समीक्षा करेंगे। बैठक सुबह 11 बजे आरंभ होगी। संबंधित अधिकारियों को अद्यतन जानकारी के साथ बैठक में उपस्थित रहने के निर्देश दिए गए हैं।

कमिश्नर 14 को करेंगे निर्माण कार्यों की समीक्षा

रीवा। कमिश्नर बीएस जामोद 14 जुलाई को सुबह 11 बजे से संभागीय बैठक में विभिन्न विभागों के निर्माण कार्यों की प्रगति की समीक्षा करेंगे। बैठक कमिश्नर कार्यालय सभागार में आयोजित की गई है। बैठक में लोक निर्माण विभाग, पीआईयू तथा मध्यप्रदेश सड़क विकास निगम के कार्यों की समीक्षा की जाएगी। बैठक में अति वर्षा तथा बाढ़ की स्थिति से निपटने की तैयारियों की भी समीक्षा की जाएगी। संबंधित अधिकारियों को बैठक में उपस्थित रहने के निर्देश दिए गए हैं।

गोपनीय प्रतिवेदन समय पर करें प्रस्तुत: श्री जामोद

रीवा। कमिश्नर बीएस जामोद ने सभी संभागीय अधिकारियों को वर्ष 2024–25 का वार्षिक गोपनीय प्रतिवेदन समय पर प्रस्तुत करने के निर्देश दिए हैं। कमिश्नर ने कहा है कि सभी अधिकारी शासन द्वारा निर्धारित प्रपत्र में निर्धारित प्रक्रिया और समय सीमा का पालन करते हुए गोपनीय प्रतिवेदन प्रस्तुत करें। अधीनस्थ जिला अधिकारियों को भी इस संबंध में निर्देशित करें। अधीनस्थ अधिकारियों और कर्मचारियों के गोपनीय प्रतिवेदन प्राप्त कर उनमें मतांकन के पश्चात अग्रिम कार्यवाही के लिए प्रेषित करें। निर्धारित समय सीमा में गोपनीय प्रतिवेदन नहीं लिखने वाले और प्रतिवेदित करने वाले अधिकारियों के विरूद्ध विलंब का निर्धारण करके अनुशासनात्मक कार्यवाही की जाएगी। विलंब करने वाले अधिकारियों के गोपनीय प्रतिवेदन में भी इसका उल्लेख किया जाएगा। इसलिए सभी अधिकारी शासन द्वारा तय समय सीमा में गोपनीय प्रतिवेदन अनिवार्य रूप से प्रस्तुत करें।

उपायुक्त जनजातीय कार्य का प्रभार श्री मालवीय को

रीवा। कमिश्नर बीएस जामोद ने संभागीय उपायुक्त जनजातीय कार्य तथा अनुसूचित जाति विकास विभाग का प्रभार कमिश्नर कार्यालय के संयुक्त आयुक्त सुदेश कुमार मालवीय को देने के आदेश दिए हैं। आदेश के परिपालन में श्री मालवीय द्वारा 8 जुलाई को नवीन पद्भार ग्रहण कर लिया गया है।

जिला पंचायत की सामान्य सभा की बैठक 17 को

रीवा। जिला पंचायत की सामान्य सभा की बैठक 17 जुलाई को दोपहर 2.30 बजे से जिला पंचायत सभागार में आयोजित की गई है। इसकी अध्यक्षता जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती नीता कोल करेंगी। बैठक में विभिन्न योजनाओं से स्वीकृत निर्माण कार्यों की प्रगति रीवा तथा मऊगंज जिले में उप स्वास्थ्य केन्द्र भवनों के निर्माण, बिजली विभाग की ट्रिपल आरडीएसएस योजना के क्रियान्वयन, जल जीवन मिशन के कार्यों तथा ग्राम पंचायतों में बस्ती विकास योजना के कार्यों एवं प्रस्तावित कार्य योजना की समीक्षा की जाएगी।

सफाई अपनाओ, बीमारी भागाओ

रीवा। स्वच्छ सर्वेक्षण 2025 के अंतर्गत निगमायुक्त डॉ. सौरभ सोनवणे के निर्देशानुसार ''सफाई अपनाओ, बीमारी भागाओ'' थीम पर आधारित नगर पालिक निगम की स्वच्छता टीम द्वारा जोन क्र. 04 के अंतर्गत वार्ड 39 स्थित रानी तालाब (धार्मिक एवं पर्यटक स्थल) में एक दिवसीय विशेष स्वच्छता एवं जागरूकता अभियान चलाया गया। जिसमें उपस्थित श्रद्धालुओं, पर्यटकों एवं आम नागरिकों को मानसून के मौसम में फैलने वाली बीमारियों जैसे डेंगू, मलेरिया, चिकनगुनिया, हैजा, उल्टी-दस्त, वायरल बुखार आदि से बचाव हेतु विशेष जानकारी दी गई। साथ ही लोगों से अपील की कि वे धार्मिक स्थलों एवं पर्यटक स्थलों को स्वच्छ बनाए रखने में अपना सहयोग दें एवं कचरे को इधर-उधर न फेंकें बल्कि डस्टबिन में ही डालें। साथ ही तालाब परिसर एवं आस-पास के क्षेत्र में विशेष सफाई अभियान चलाकर वहां फैली गंदगी को हटाया गया। इसके अतिरिक्त, नगर निगम स्वच्छता टीम द्वारा वार्ड क्रमांक 33 की कालोनियों एवं रहवासी क्षेत्रों में नालियों की सफाई सफाई की गई जिससे जल भराव की स्थिति उत्पन्न न हो और मच्छरों के प्रजनन को रोका जा सके और संक्रामक बीमारियों से बचाव किया जा सके। कार्यक्रम के अंत में उपस्थित सभी नागरिकों को अपने घर, मोहल्ले, धार्मिक स्थल और सार्वजनिक स्थानों को स्वच्छ बनाए रखने की शपथ दिलाई गई।

संजय गांधी अस्पताल के वाहनों पर पुलिस की तीखी नजर

रीवा में एम्बुलेंस अनियमितताओं पर बड़ी कार्रवाई, प्रशासन ने बरती सख्ती

रीवा। रीवा जिले के सबसे बड़े सरकारी अस्पताल संजय गांधी अस्पताल में संचालित एम्बुलेंस सेवाओं में लगातार सामने आ रही अनियमितताओं पर अब पुलिस प्रशासन ने सख्ती बरतनी शुरू कर दी है। मरीजों से मनमाने ढंग से किराया वसूलने, बगैर रजिस्ट्रेशन और फर्जी नंबर प्लेट के एम्बुलेंस संचालन की शिकायतों को गंभीरता से लेते हुए रीवा के पुलिस अधीक्षक विवेक सिंह के निर्देश पर थाना अमहिया में एक अहम बैठक आयोजित की गई। इस बैठक में क्षेत्र में संचालित सभी निजी और संविदा एम्बुलेंस मालिकों व चालकों को तलब किया गया। थाना प्रभारी अमहिया द्वारा स्पष्ट निर्देश दिए गए कि यदि कोई एम्बुलेंस चालक या मालिक तय नियमों का उल्लंघन करता पाया गया, तो उसके खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाएगी।

क्या है मामला?: पिछले कुछ महीनों से संजय गांधी अस्पताल परिसर में मौजूद एम्बुलेंस चालकों के खिलाफ लगातार शिकायतें मिल रही थीं। इनमें सबसे प्रमुख शिकायत यह थी कि वाहन चालक आपातकालीन स्थिति का फायदा उठाकर मरीजों और उनके परिजनों से तय दरों से कई गुना ज्यादा किराया वसूलते हैं। इसके अलावा

कई एम्बुलेंस बिना पंजीयन और उचित कागजी कार्रवाई के ही खुलेआम अस्पताल परिसर में दौड़ रही थीं। ऐसे वाहनों में चालक के पास परिचय पत्र तक नहीं होते, जिससे किसी अनहोनी की स्थिति में उनकी पहचान कर पाना भी मुश्किल हो जाता है।

पुलिस की सख्ती: पुलिस अधीक्षक विवेक सिंह के निर्देश पर थाना अमहिया द्वारा की गई इस कार्रवाई में निम्नलिखित सख्त दिशा-निर्देश जारी किए गए वाहनों पर एम्बुलेंस की मानक पहचान प्रत्येक एम्बुलेंस पर स्पष्ट रूप से एम्बुलेंस लिखा होना अनिवार्य किया गया है, ताकि आम नागरिक और अस्पताल प्रशासन आसानी से उसे पहचान सकें। मान्य रजिस्ट्रेशन और नंबर प्लेट सभी एम्बुलेंस पर वैध रजिस्ट्रेशन नंबर और स्टैंडर्ड नंबर प्लेट अनिवार्य रूप से होना चाहिए। फर्जी या मिटे हुए नंबर पर रोक लगाई गई है। ड्राइवरों के पहचान पत्र प्रत्येक एम्बुलेंस में चालक का परिचय पत्र वाहन के भीतर चस्पा होना चाहिए, ताकि उसकी पहचान हमेशा उपलब्ध रहे।

अधिक किराया वसूली पर रोक: किसी भी स्थिति में एम्बुलेंस संचालक निर्धारित दरों से अधिक राशि नहीं वसूल सकते। शिकायत मिलने पर उनके विरुद्ध भारतीय दंड संहिता के तहत कार्रवाई की जाएगी।

यातायात नियमों का पालन अनिवार्य : सभी एम्बुलेंस चालकों को ट्रैफिक नियमों का पूर्णतः पालन करना अनिवार्य बताया गया है, जिसमें सीट बेल्ट, स्पीड लिमिट और सिग्नल नियम शामिल हैं।

आधार कार्ड जमा : कार्रवाई के तहत सभी चालकों के आधार कार्ड की प्रतियां थाना अमहिया में जमा करवाई गई हैं, ताकि आवश्यक पड़ने पर उनकी जांच की जा सके।

अस्पताल प्रशासन को राहत की उम्मीद: इस सख्ती के बाद अस्पताल प्रशासन और मरीजों के परिजनों को राहत की उम्मीद है। अस्पताल में आने वाले मरीजों के परिजन कई बार पहले से ही मानसिक और आर्थिक तनाव में होते हैं। ऐसे में यदि एम्बुलेंस सेवा निष्पक्ष, पारदर्शी और तय दरों पर मिलेगी, तो मरीजों को काफी सहूलियत मिलेगी।

लिए जायेगा कानूनी निर्णय: पुलिस ने यह भी स्पष्ट किया है कि यह कार्रवाई केवल एक शुरुआत है। आने वाले दिनों में एम्बुलेंस सेवाओं की नियमित निगरानी की जाएगी। किसी भी वाहन या चालक द्वारा नियमों की अनदेखी करने पर सीधा कानूनी एक्शन लिया जाएगा। इसके साथ ही नगर निगम और अस्पताल प्रशासन से भी सहयोग लेकर स्थायी व्यवस्था बनाने पर विचार किया जा रहा है।

सफल ऑपरेशन : 18 वर्ष बाद खुला महिला का जबड़ा

रीवा। एक गरीब 72 वर्षीय महिला ने सबसे पहले ऑपरेशन के बाद कहा डॉक्टर साहब फोटो में दिखाए मेरा खुला मुंह कैसा दिखता है। यह सर्जरी अपने आप में ऐतिहासिक है, चित्रकूट के मानिकपुर की 72 वर्षीय महिला जो 2006 में कुएं में पानी भरते समय गिर गई थी, जिसमे निचला जबड़ा सामने से एवं दोनों जबड़े का जोड़ टूट गया था। निचले जबड़े का ऑपरेशन बिरला हॉस्पिटल में हो गया था, लेकिन जबड़े के जोड़ की सुविधा नहीं थी उस वक्त। धीरे धीरे आपरेशन की कमी की वजह से दोनों टूटे हुए जोड़ गलत जुड़ने लगे तथा पूरी तरह से सिर की हड्डी से जुड़ गए लगभग 18 वर्ष से महिला का मुंह पूरी तरह से बंद हो गया तब महिला की उम्र लगभग 53 वर्ष थी , सर्जरी की जटिलता के कारण कुछ जगह मना कर दिया गया और पैसे के कारण भी इलाज नहीं करा पाने से वो ऐसे ही रह गया। विगत 18 वर्षो से महिला केवल दूध दाल का पानी पतली खाने पीने की चीज पर ही सीमित थी। पिछले माह महिला के परिजन का संपर्क डॉ अभिषेक मिश्रा से सतना में हुआ। जहां डॉ मिश्रा ने विश्वास दिलाया कि माता जी का मुंह पहले की तरह खुलने लगेगा। आयुष्मान कार्ड बनवाकर रीवा में विंध्य हॉस्पिटल में महिला का इलाज नि शुल्क किया गया, जिसने निश्चेतना विभाग एवं ओटी स्टाफ तथा मैनेजमेंट विंध्य हॉस्पिटल की मदद से सफलता पूर्वक दोनों तरफ के जोड़ का ऑपरेशन किया गया। डॉ अभिषेक मिश्रा ने बताया कि जबड़े के जोड़ की सर्जरी न होने या लापरवाही होने की वजह से ऐसी परेशानी होती है। इसीलिए सही इलाज बहुत जरुरी है। डॉ अभिषेक मिश्रा का इस तरह का ये 15 वा ऑपरेशन किया गया है । अब मरीज पूरी तरह से स्वस्थ लाभ ले रही है तथा पूरा मुंह खोल कर खाना भी खा रही है।

कैलाशवती पाण्डेय का दुखद निधन

गुढ़ (नि.प्र)। गुढ़ विधानसभा क्षेत्र अंतर्गत ग्राम लोही निवासी श्रीमती कैलाशवती पाण्डेय पत्नी स्व.अंगद प्रसाद पाण्डेय उम्र 90 वर्ष का दुखद निधन विगत दिनों हो गया।उनके निधन पर गुढ़ विधानसभा क्षेत्र के विधायक नागेंद्र सिंह, विधायक प्रतिनिधि बाबूलाल यादव, भाजपा मंडल गुढ़ के अध्यक्ष एवं विधायक प्रतिनिधि गुढ़ एड अनंत कुमार गुप्ता,नगर परिषद अध्यक्ष डॉ अर्चना सिंह,वरिष्ट चित्सक डॉ. बी एल मिश्रा,श्रीमती अंजू मिश्रा,विश्वंभर नाथ पटेल,नारायण मिश्रा,जितेन्द्र मिश्रा,मुनिराज पटेल,श्रीमती माया सिंह पटेल, राज कुमार मिश्रा अरुण सिंह, डॉ.ज्ञानेश्वर द्विवेदी,अनिल सिंह,एड.के टी निवास मिश्रा,काशीनाथ पटेल,बी.के. पाण्डेय,कपूरचंद्र सोनी,मंडल उपाध्यक्ष श्रीमती गीता मुंद्रिका तिवारी,कपिल पयासी,रावेंद्र मिश्रा,भूपेंद्र प्रताप सिंह, आलेश पयासी,महामंत्री लक्ष्मीकांत शुक्ला,श्रीमती मंतु यादव,मंत्री धनपत लाल गुप्ता, अभिषेक सिंह,प्रकाश सोनी,श्रीमती रामबाई कोल, सूर्यप्रकाश पाण्डेय,श्रीमती लीलावती द्विवेदी,श्रीमती संतोषी महेंद्र जायसवाल, दिलीप दुबे,दामोदर प्रसाद नामदेव,बालेंद्र त्रिपाठी, राजबहोर कुशवाहा,धीरू शुक्ला,सनत कुमार शुक्ला, प्रभात तोमर,डॉ. भृगुनाथ पाण्डेय,पार्षद ओम त्रिपाठी, श्रीमती बबिता आनंद यादव, अशोक कचेर, श्रीमती अर्चना नितेश साकेत,रामसेवक पटेल, श्रीमती विमला रावत, श्रीमती रक्षारानी पटेल, सरजू माली सहित सैकड़ों ने दुख व्यक्त किया है।

रीवा संभाग में अब तक 290 मिलीमीटर औसत वर्षा दर्ज

रीवा। रीवा संभाग में एक जून से अब तक 290 मिलीमीटर औसत वर्षा दर्ज की गई है। संभाग में सर्वाधिक 500.7 मिलीमीटर वर्षा मऊगंज जिले में दर्ज की गई है। संभाग में अब तक रीवा जिले में 165.8 मिलीमीटर, मऊगंज में 500.7 मिलीमीटर, सतना में 235.2 मिलीमीटर, मैहर में 238.6 मिलीमीटर, सीधी में 333.2 मिलीमीटर तथा सिंगरौली जिले में 272.1 मिलीमीटर वर्षा दर्ज की गई है। गत वर्ष इसी अवधि में जिले में 149 मिलीमीटर औसत वर्षा दर्ज की गई थी। संभाग की औसत सामान्य वार्षिक वर्षा 1090.3 मिलीमीटर है।

बैकुण्ठपुर पुलिस टीम ने एनडीपीएस एक्ट के तहत की कार्यवाही

8,000 रुपये के फरार इनामी आरोपी को किया गिरफ्तार

रीवा। पुलिस अधीक्षक विवेक सिंह के निर्देशन एवं अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक महोदय (देहात) तथा एस.डी.ओ.पी. सिरमौर के मार्गदर्शन में थाना बैकुण्ठपुर प्रभारी निरीक्षक जे.पी. पटेल के नेतृत्व में पुलिस टीम द्वारा नशे के खिलाफ सतत कार्रवाई की जा रही है।इसी क्रम में थाना बैकुण्ठपुर के अपराध क्रमांक 33/25, धारा 8, 21, 22, 29 एनडीपीएस एक्ट के तहत वांछित एवं 8,000 रुपये का ईनामी फरार आरोपी सुरेन्द्र सिंह पिता स्व. सूर्यपाल सिंह, उम्र 56 वर्ष, निवासी वार्ड क्रमांक 05, बैकुण्ठपुर को गिरफ्तार किया गया।

घटना का विवरण: पुलिस द्वारा लगातार दबाव एवं दबिश के चलते आरोपी सुरेन्द्र सिंह ने दिनांक 07.07.2025 को माननीय एनडीपीएस न्यायालय रीवा में आत्मसमर्पण कर दिया। न्यायालय की अनुमति प्राप्त कर थाना बैकुण्ठपुर पुलिस द्वारा आरोपी की फॉर्मल गिरफ्तारी की गई। पूछताछ में आरोपी ने अवैध ब्राउन शुगर के व्यापार में संलिप्त होने की बात स्वीकार की।दिनांक 08.07.2025 को आरोपी को न्यायालय में पेश कर केन्द्रीय जेल रीवा भेजा गया। आरोपी पर पूर्व में 8,000 रुपये का इनाम घोषित था। इस महत्वपूर्ण कार्रवाई में उप निरीक्षक आर.एस. सिंह बागरी एवं आरक्षक क्रमांक 409 अजय बागरी की विशेष भूमिका रही। यह कार्रवाई पुलिस की सतर्कता, नशे के विरुद्ध प्रतिबद्धता एवं अपराधियों पर कठोर कार्रवाई के संकल्प का प्रतीक है।

NDVSU- College of Vety. Sci. & A.H., Rewa, (M.P.)
No2596/Pur./Store/Vety/Rewa/2025 Date-09.07.25

TENDER NOTICE

E-tenders are invited from the reputed firms for supply of Feed and Fodder for financial year 2025-26. The detailed information is available on website https://mptenders.gov.in Purchase of e-tenders from 10.07.25 to 30.07.2025. The last date of submission of tender bid is 30.07.25. Corrigendum, if any, will only be posted in the above website. No press notice will be issued separately.

DEAN

संपादकीय

गुरु पूर्णिमा पर्व पर लें शुभ संकल्प

भारतीय समाज में गुरु पूर्णिमा पर्व का विशेष महत्व है। गुरु पूर्णिमा वह पवित्र पर्व है, जो इस अलौकिक शक्ति का उत्सव मनाता है। आषाढ़ की पूर्णिमा, जो 10 जुलाई को मनाई जाएगी, चंद्रमा की संपूर्ण आभा के साथ ज्ञान का सागर उमड़ता है। यह मात्र एक तिथि नहीं, बल्कि गुरु-शिष्य के अटूट बंधन को श्रद्धा, प्रेम और कृतज्ञता से सजाने वाला आध्यात्मिक दीपोत्सव है। यह वह दिन है, जब हम उन महान आत्माओं को प्रणाम करते हैं, जिन्होंने हमें अज्ञान से मुक्त कर सत्य, धर्म और जीवन के उच्च लक्ष्य की ओर प्रेरित किया। सनातन संस्कृति में गुरु को परमब्रह्म का साक्षात् स्वरूप माना गया है– गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः का मंत्र उनकी उस शक्ति को रेखांकित करता है, जो हमें अनंत की अनुभूति कराती है। यह पर्व महर्षि वेदव्यास के जन्मदिन के रूप में भी अमर है, जिन्होंने वेदों, पुराणों और महाभारत जैसे ग्रंथों से मानवता को ज्ञान का खजाना सौंपा। गुरु पूर्णिमा का महत्व सनातन धर्म की आत्मा में गहराई से समाया है। प्राचीन भारत में गुरुकुल प्रणाली शिक्षा का आधार थी, जहां तक्षशिला और नालंदा जैसे विश्वविद्यालय विश्व ज्ञान के केंद्र बने। इन गुरुकुलों ने चाणक्य और चंद्रगुप्त जैसे महान व्यक्तित्वों को जन्म दिया। एक हालिया सर्वेक्षण के अनुसार, भारत में 85 प्रतिशत लोग इस पर्व को अपने शिक्षकों और आध्यात्मिक गुरुओं के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने का अवसर मानते हैं। 'गुरु' शब्द–'गु' यानी अंधकार और 'रु' यानी प्रकाश–अज्ञान को नष्ट कर ज्ञान का आलोक फैलाने वाली शक्ति का प्रतीक है। यह पर्व केवल पूजा तक सीमित नहीं, बल्कि ज्ञान, करुणा और नैतिकता के प्रसार का सशक्त मंच है, जो हमें आत्म-चिंतन और ज्ञानार्जन की प्रेरणा देता है। गुरु पूर्णिमा का ऐतिहासिक महत्व महर्षि वेदव्यास के अमर योगदान से जुड़ा है। उन्होंने चार वेदों–ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद–का संकलन, 18 पुराणों की रचना और महाभारत जैसे महाकाव्य की सृष्टि की, जो आज भी मानवता को धर्म, नीति व कर्तव्य का मार्ग दिखाता है। उनके कार्य ने भारतीय दर्शन को नई दिशा दी, यही कारण है कि यह पर्व व्यास पूर्णिमा के नाम से भी जाना जाता है। 2024 में, भारत के मंदिरों और आश्रमों में 70 प्रतिशत से अधिक लोग व्यास पूजा में शामिल हुए, जो इस पर्व की गहरी लोकप्रियता को दर्शाता है। बौद्ध धर्म में यह दिन भगवान बुद्ध के सारनाथ में दिए गए प्रथम उपदेश, धर्मचक्र प्रवर्तन, का स्मरण करता है, जिसने बौद्ध धर्म की वैश्विक नींव रखी। जैन धर्म में यह तीर्थंकरों के प्रति श्रद्धा का अवसर है। 2023 में, भारत, नेपाल, भूटान और श्रीलंका में लाखों लोग मंदिरों, आश्रमों और गुरुद्वारों में एकत्र हुए, जो इस पर्व की सर्वधर्म स्वीकार्यता और वैश्विक अपील को रेखांकित करता है। श्रद्धा, ज्ञान, संस्कार एवं सरोकारों के पर्याय गुरु पूण्रिमा पर्व के अवसर पर सभी को शुभ संकल्प लेने चाहिये।

उपचुनाव में ई-वोटिंग ने रच दिया इतिहास

नजरिया

देश में मतदान के प्रति अरुचि प्रत्येक चुनाव में देखने में आती रही है। रोगग्रस्त या अन्य लाचारों को तो छोड़िए, उच्च शिक्षित एवं सक्षम कुलीन वर्ग मतदान के प्रति सबसे ज्यादा उदासीन रहता है। वैसे तो निर्वाचन आयोग मतदान का प्रतिशत और सुविधा के मतदान के लिए अनेक प्रयोग करता रहा है, लेकिन अब बिहार राज्य निर्वाचन आयोग ने नगर निकाय के उपचुनाव में पहली बार ई-वोटिंग का प्रयोग करके इतिहास रच दिया है। मोबाइल से मतदान की सुविधा उन लोगों के लिए वरदान साबित हुई, जो मतदान केंद्र पर पहुंचकर वोट देने से मजबूर थे। तमाम मतदाता गांव और राज्य से बाहर होने के कारण मतदान करने से वंचित रह जाते हैं। लेकिन मोबाइल से ई-मतदान की सुविधा के चलते बिहार के इस चुनाव में 80.60 प्रतिशत और उपचुनाव में 58.38 प्रतिशत मतदाताओं ने मोबाइल के जरिए मतदान किया। पहली महिला ई-वोटर विभा कुमारी और पहले पुरुष मतदाता मुन्ना कुमार बने। राज्य निर्वाचन आयुक्त डॉ दीपक प्रसाद ने मोबाइल से ई-मतदान कराए जाने की प्रेरणा यूरोपीय देश एस्टोनिया से ली।

प्रमोद भार्गव

चूंकि अब ई-वोटिंग का सफल प्रयोग हो चुका है, इसलिए भविष्य में इसकी मांग बढ़ेगी। जो गर्भवती महिलाएं, बुर्जुग, विकलांग, असाध्य रोगों से ग्रसित और अपने मतदान स्थल से दूर रहने वाले लोग मतदान से वंचित रह जाते थे, उन्हें लोकतंत्र के इस महायज्ञ में भागीदार बनने की आसान सुविधा मिल जाएगी। इस सुविधा से एक बड़ी समस्या का सामाधान बिना किसी अतिरिक्त खर्च के हो जाएगा। चूंकि मतदान केंद्रों पर विभिन्न दलों का जमावड़ा नहीं होगा, इसलिए निश्पक्ष और षांतिपूर्ण मतदान की संभावना बढ़ जाएगी। इससे मतदान की निजता भी प्रभावित नहीं होगी। इससे मतदान के प्रतिशत में आशातीत सुधार तो होगा ही, जातीय और सांप्रदायिक ध्रुवीकरण की संभावनाएं न्यूनतम हो जाएंगी। ई-वोटिंग का काम पूर्वी चंपारण जिले की नगर पंचायत पकड़ी दयाल के अलावा पटना, बक्सर, रोहतास, सारण और बांका में सी-डैक और एसईआर के जरिए किया गया था। अब यह जरूरी लगता है कि जब पैसे के लेनदेन से लेकर अचल संपत्ति के हस्तांतरण के काम ऑनलाइन या डिजिटल प्रणालियों से हो रहे हैं तो फिर ई-मतदान को भी जरूरी बनाया जाए। बिहार के उपचुनाव में मोबाइल एप से ई-वोटिंग की प्रक्रिया प्रमाणित भी हो चुकी है। ई-वोटिंग को इसलिए भी अपनाया जाए, क्योंकि पूर्व से ही हमारे यहां पोस्टल वोटिंग का वैधानिक प्रावधान है। मतदान संपन्न कराने में जुटे कर्मचारी अपना वोट पोस्टल वोटिंग के जरिए ही देते हैं। अब कोई राजनीतिक दल और नेता यह बहाना नहीं बना सकता है कि अभी इंटरनेट या बिजली की सुविधा दुर्गम क्षेत्रों में नहीं है। एक बार बिजली भले ही प्रत्येक ग्राम में न हो, लेकिन सौर ऊर्जा से बिजली और मोबाइल टॉवर गांव-गांव पहुंच गए हैं। इनके जरिए इंटरनेट की सुविधा हासिल कराई जा रही है। सौर जैसी वैकल्पिक ऊर्जा दूर-दराज के ग्रामों में बिजली उपलब्ध करा रही है। फिर भी किसी गांव में बिजली नहीं है तो वहां ईवीएम के जरिए मतदान कराया जाए। ई-वोटिंग को चरणबद्ध रूप में कराए जाने का सिलसिला जल्द से जल्द षुरू होता है तो लोकतंत्र में लोगों की उम्मीद से ज्यादा भागीदारी बढ़ती दिखाई देगी। हालांकि मोबाइल से ई-वोटिंग को लेकर कुछ नेता अभी से संदेह जताने लगे हैं। उनका कहना है कि मोबाइल एप पर पंजीकरण में कठिनाई आएगी। गांव के प्रभावी लोग दबाव बनाकर

पक्षपातपूर्ण एवं फर्जी मतदान करा सकते है। भारत में फर्जी और दबाव से मतदान की अपवाद स्वरूप घटनाएं आज भी देखने में आ जाती हैं। ईवीएम से मतदान पर आज भी विपक्षी दल सवाल उठा रहे हैं। लेकिन ईवीएम की साख पर ठोस प्रमाण कोई दल या इंजीनियर आज तक नहीं दे पाया है। ई-वोटिंग पूरे देष के लिए अपना ली जाती है तो चुनाव खर्च में तो कमी आएगी ही, तकनीक की सार्थकता भी पेष आएगी।

घरेलू प्रवासी मतदाताओं के लिए ई-वोटिंग की जरूरत इसलिए है, क्योंकि बड़ी संख्या में देष के मतदाता मजदूरी, पढ़ाई-लिखाई, नौकरी और अन्य काम-धंधों के लिए मूल निवास स्थल छोड़ जाते हैं। इसलिए वे चुनावों में अपने मताधिकार का उपयोग नहीं कर पाते। आयोग का कहना है कि 2019 के आम चुनाव में करीब 30 करोड़ यानी 67.4 प्रतिशत लोग इन्हीं कारणों के चलते अपने मत का उपयोग नहीं कर पाए थे। ऐसा लोकसभा और विधानसभा दोनों ही चुनावों में होता है। चुनाव विषेशज्ञों का तो यहां तक मानना है कि करीब 45 करोड़ लोग पलायन के चलते मतदान से वंचित हो जाते हैं। इसलिए लंबे समय से यह मांग उठ रही थी कि इन देषज प्रवासियों के मतदान का कोई व्यावहारिक उपाय निकाला जाना चाहिए। इस नजरिए से प्रवासियों के लिए ई-वोटिंग उपयोगी है। हालांकि चुनाव सुधार की दृष्टि से चुनाव आयोग ने घर से दूर रहने वाले अर्थात दूरस्थ मतदाताओं के लिए रिमोट वोटिंग सिस्टम (आरवीएस) तैयार किया हुआ है। इस मशीन की मदद से अब मूल मतदान स्थल से दूर रह रहे किसी दूसरे राज्य या शहर में रहने वाले मतदाता लोकसभा और विधानसभा चुनाव में अपने मत का प्रयोग कर सकते हैं। यानी मतदान के लिए उन्हें अपने मूल निवास स्थल पर आने की जरूरत नहीं रह गई हैं। आयोग इसे लागू करने से पहले आने वाली कानूनी, प्रषासनिक और तकनीकी चुनौतियों पर राजनीतिक दलों के विचार भी आमंत्रित किए जाएंगे। चुनाव सुधार की दृश्टि से यह पहल अमल में आती है तो ऐतिहासिक होगी। नतीजतन उन 45 करोड़ लोगों को वोट डालने का अवसर मिलेगा, जो अपने घरों से दूर रहते हैं। यह उपाय मत-प्रतिशत बढ़ाने का भी काम करेगा। यानी जनप्रतिनिधियों का चुनाव अधिकतम मतदाताओं के वोट डालने से होगा, जो लोकतंत्र को पारदर्शी बनाने का काम करेगा। इस सिलसिले में आयोग ने दावा किया है कि यह मषीन त्रृटिहीन बनाई गई है, इसलिए मतदान निश्पक्ष होगा। हालांकि मतदान की इस प्रक्रिया को इंटरनेट से नहीं जोड़ा जाएगा। आयोग फिलहाल इसे प्रायोगिक तौर पर लागू करना चाहता है, जिससे इसके प्रयोग की निष्पक्षता स्पष्ट हो जाए। बाद में इसे पूरे देष में अनिवार्य बना दिया जाएगा। अनेक चुनाव विषेशज्ञ इस प्रणाली को एक क्रांतिकारी पहल मानकर चल रहे हैं। देष में निसंदेह एक बड़ा वर्ग ऐसा है, जो अपना घर और शहर छोड़कर आजीविका के लिए दूसरे शहरों या राज्यों में रह रहे हैं। इनमें बड़ी संख्या में युवा हैं। हालांकि इनका कोई एकीकृत आंकड़ा देश और आयोग के पास नहीं है। फिर भी सब जानते है कि बड़ी संख्या में प्रवासी मतदाता हैं। ये लोग नई जगह पहुंचने के बाद नया वोटर पंजीयन भी नहीं कराते हैं। नतीजतन मतदान से वंचित रहते हैं। इन्हें जहां रह रहे हैं, वहीं मतदान की सुविधा मिल जाए, इस नजरिए से आरवीएम की परिकल्पना की गई है। आईआईटी मद्रास की मदद से 'मल्टी कॉन्स्टीचुएंसी रिमोट ईवीएम' के रूप में ऐसा मतदान उपकरण तैयार किया गया है, जो एक रिमोट मतदान केंद्र से 72 निर्वाचन क्षेत्रों में प्रवासियों का मतदान कराने में सक्षम होगा। हालांकि आरवीएम के इस्तेमाल को लेकर प्रमुख विपक्षी दल कांग्रेस ने विरोध जता दिया है। कांग्रेस का कहना है कि इससे मतदान के प्रति लोगों का भरोसा कम होगा। प्रणाली शुरू करने का प्रस्ताव पेश किया है। लोकतंत्र की मजबूती के लिए आदर्श स्थिति यही है कि हरेक मतदाता अपने मताधिकार का प्रयोग करे। इस नाते 2005 में भाजपा के एक सांसद लोकसभा में 'अनिवार्य मतदान' संबंधी विधेयक लाए भी थे। लेकिन बहुमत नहीं मिलने के कारण विधेयक पारित नहीं हो सका था। कांग्रेस व अन्य दलों ने इस विधेयक के विरोध का कारण बताया था कि दबाव डालकर मतदान कराना संविधान की अवहेलना है। क्योंकि भारतीय संविधान में अब तक मतदान करना मतदाता का स्वैच्छिक अधिकार तो है, लेकिन वह इस कर्तव्य-पालन के लिए बाध्यकारी नहीं है। लिहाजा वह इस राष्ट्रीय दायित्व को गंभीरता से न लेते हुए, उदासीनता बरतता है। हमारे यहां आर्थिक रूप से संपन्न सुविधा भोगी जो तबका है, वह अनिवार्य मतदान को संविधान में दी निजी स्वतंत्रता में बाधा मानते हुए इसका मखौल उड़ाता है।

मतदान की अनिवार्यता अथवा ई-वोटिंग या आरवीएम से सुविधा का मतदान कथित अल्पसंख्यक व जातीय समूहों को 'वोट बैंक' की लाचारगी से भी छुटकारा दिलाएगी। राजनीतिक दलों को भी तुष्टिकरण की राजनीति से निजात मिलेगी। क्योंकि जब प्रवासियों को आरवीएम से मतदान की सुविधा मिल जाएगी तो किसी धर्म, जाति या क्षेत्र विशेष से जुड़े मतदाताओं की अहंमियत खत्म हो जाएगी। नतीजतन उनका संख्याबल जीत अथवा हार को प्रभावित नहीं कर पायेगा। लिहाजा सांप्रदायिक व जातीय आधार पर ध्रुवीकरण की जरूरत नगण्य हो जाएगी। जब पंजाब और जम्मू-कश्मीर में आतंकवाद की छाया थी, तब वहां हुए विधानसभा चुनावों में 15 से लेकर 20 प्रतिशत मतदान से ही सरकारें बनती रही हैं। साफ है, यह स्थिति लोकतंत्र के लिए उचित नहीं रही। अतएव अधिकतम मतदान के हालात ई-वोटिंग एवं आरवीएम के इस्तेमाल से निर्मित होते हैं तो भारतीय राजनीति संविधान के उस सिद्धांत का पालन करने को विवश होगी, जो सामाजिक न्याय और समान अवसर की वकालात करता है।

वन्यजीवों की सुरक्षा के लिये उठाए जाएं कारगर कदम

सोनम लववंशी

हमारे देश में 1 जुलाई से 7 जुलाई तक मनाया जाने वाला 'वन महोत्सव' इस बार भी आयोजित किया गया। यह केवल औपचारिकता बन कर न रह जाए, इसके लिए अब गहराई से चिंतन की आवश्यकता है। इस उत्सव का मूल उद्देश्य वनों की सुरक्षा और संरक्षण को लेकर जागरूकता फैलाना है। क्या एक सप्ताह की सक्रियता हमारे घटते वनों की पीड़ा को शांत कर सकती है? भारत एक समय हराभरा देश था। आज ये हरियाली लगातार सिकुड़ती जा रही है। भारतीय वन सर्वेक्षण 2023 की रिपोर्ट के अनुसार देश में कुल वन क्षेत्र लगभग 80.73 मिलियन हेक्टेयर है, जो कि भारत के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का मात्र 24.62 प्रतिशत है। यह आंकड़ा सुनने में बड़ा प्रतीत होता है। जब यह ज्ञात होता है कि इसमें से 12 फीसदी से अधिक क्षेत्र केवल स्क्रब, झाड़ियाँ या क्षतिग्रस्त वन भूमि है, तब स्थिति की गंभीरता स्पष्ट हो जाती है। वैश्विक औसत के मुकाबले भारत वन आच्छादन में अब भी पीछे है। संयुक्त राष्ट्र के अनुसार, किसी देश का कम से कम 33 प्रतिशत क्षेत्र वनाच्छादित होना चाहिए। हमारा लक्ष्य अब भी अधूरा है। वन केवल हरियाली नहीं हैं, ये एक जटिल परिस्थकीय तंत्र का हिस्सा हैं। वन पृथ्वी के फेफड़े हैं, जो वायुमंडल से कार्बन डाइऑक्साइड लेकर हमें प्राणवायु ऑक्सीजन प्रदान करते हैं। वनों के कारण वर्षा होती है, मिट्टी की उर्वरता बनी रहती है, भूजल स्तर संतुलित रहता है और जैव विविधता संरक्षित होती है। भारत जैसे देश में जहां कृषि मुख्य व्यवसाय है, वहां वनों का विनाश सीधे तौर पर किसान की आजीविका से जुड़ा होता है। वन कटने से मिट्टी का कटाव बढ़ता है। जल स्त्रोत सूखने लगते हैं। इसका असर खाद्य उत्पादन, पशुपालन और ग्रामीण जीवन की स्थिरता पर गहरा पड़ता है। आर्थिक विकास के नाम पर सड़कें, रेललाइन, बिजली परियोजनाएं और उद्योग वनों को निगल रहे हैं। पिछले एक दशक में भारत में विकास परियोजनाओं के चलते 14,000 वर्ग किलोमीटर से अधिक वन क्षेत्र साफ किया गया है। कई बार यह कटाई उस पारिस्थितिकी तंत्र को नष्ट कर देती है, जिसे बनने में सैकड़ों साल लगे थे। उदाहरण के तौर पर मध्य भारत के जंगलों में पाए जाने वाले बाघ, हाथी, गौर, और अन्य कई प्रजातियों का आवास क्षेत्र सीमित होता जा रहा है। जैव विविधता का यह संकट केवल वन्यजीवों का नहीं, मानव जाति का भी है। बढ़ती वन कटाई और अवैध शिकार का एक दर्दनाक प्रमाण देश में बाघों की लगातार हो रही मौतें हैं। वर्ष 2025 के पहले छह महीनों में ही 107 बाघ अपनी जान गंवा चुके हैं, जिनमें 20 मासूम शावक भी शामिल हैं। यह संख्या पिछले वर्ष की तुलना में लगभग 40 प्रतिशत अधिक है और बीते पाँच वर्षों में सबसे भयावह आँकड़ा है।

वर्ष 2021 से अब तक देश में 666 बाघ मृत पाए गए हैं। मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र में सबसे अधिक मौतें दर्ज हुई हैं, जो बताता है कि जंगलों का सिकुड़ता दायरा और मानवीय दखल अब उन प्रजातियों को भी निगल रहा है, जिन्हें हमने कभी 'राष्ट्रीय गौरव' कहा था। वैसे भी जब एक पारिस्थितिक तंत्र नष्ट होता है, तो उसकी कड़ी में जुड़े सभी अंग प्रभावित होते हैं जिनमें हम भी शामिल हैं। वनों के संरक्षण के लिए सरकारें पौधरोपण अभियान चलाती हैं। प्रश्न यह है कि क्या यह पर्याप्त है? बरसात के मौसम में लगाए गए पौधे जीवित भी रह पाएँ, इसके लिए देखरेख और स्थानीय लोगों की सहभागिता आवश्यक है। आंकड़ों के अनुसार, भारत में लगाए गए लगभग 60 प्रतिशत पौधे पहले दो वर्षों में ही सूख जाते हैं या नष्ट हो जाते हैं। इसका कारण केवल जलवायु नहीं है। प्रशासनिक लापरवाही, देखरेख की कमी और जनमानस में स्वामित्व की भावना का अभाव भी इसकी वजहें हैं। 'चिपको आंदोलन' की तरह आज फिर से एक जनआंदोलन की ज़रूरत है। सोशल मीडिया पर पर्यावरण बचाने की बातें करने से आगे बढ़ना होगा। स्थानीय स्तर पर पौधे लगाने, उन्हें संरक्षित करने और जंगलों को बचाने के ठोस प्रयास करने होंगे। वनों का संकट केवल वन विभाग का विषय नहीं है। यह पूरे समाज का प्रश्न है। वनों को बचाने के लिए नीति निर्धारण में आम जनता की भागीदारी सुनिश्चित करनी होगी। केवल शहरी क्षेत्रों में पौधरोपण कर लेने से पर्यावरण नहीं बचेगा। ग्रामीण और वनवासी क्षेत्रों में मौजूद प्राकृतिक वनों की रक्षा ज़रूरी है। वनवासी समुदायों का पारंपरिक ज्ञान, जंगल से उनका संबंध, और उनकी जीवनशैली को संरक्षण के केंद्र में लाना होगा। वन महोत्सव का यह सप्ताह महज एक उत्सव नहीं है। यह एक चेतावनी है। समय रहते नहीं चेते तो सांस लेने के लिए हवा भी बाजार में बिकेगी और पानी की एक-एक बूँद के लिए संघर्ष होगा। यह स्वीकार करना होगा कि वन हमारे लिए नहीं, हम वनों के लिए हैं। जब तक यह भाव मन में नहीं आएगा, तब तक कोई भी वन महोत्सव केवल औपचारिक रस्म बनकर रह जाएगा।

जो ज्ञान का सागर है वही है सच्चा गुरु

डॉ. श्रीगोपाल नारसन एडवोकेट

सम्मान वही तो पाता है, गुरु का रिश्ता पवित्र कहलाता। गरिमा इसकी घटने न पाये, शिष्य की उन्नति भाती गुरु को सुखद अनुभूति होती गुरु को परमात्म ज्ञान जो देता है। सच्चा गुरु वही होता है, परमात्मा का ध्यान करें। अपने गुरु को प्रणाम करें। भक्ति मार्ग में किसी सिद्ध पुरुष ऋषि,संत, महात्मा, ज्ञानी को गुरु बनाने का चलन है।जबकि ज्ञान मार्ग या फिर रूहानियत की दृष्टि से देखे तो एक मात्र परमात्मा ही हमारा परम गुरु है,वही परमपिता है और वही परम शिक्षक है। शास्त्रों में गुरू शब्द के शाब्दिक अर्थ भारी को अपनी तपस्या से जो सिद्ध कर कर देते है,वही अपनी रूहानियत व चेहरे पर तेज की दृष्टि से आध्यात्मिक क्षेत्र में सिद्ध पुरूष रूप में प्रतिष्ठित होते है। कहा भी गया है कि जो ज्ञान से भारी है,वही गुरू है और गुरु ज्ञान स्वयं में एक ऐसा अथाह सागर है जिसकी थाह ले पाना भी आसान नही है। गुरू शब्द जिसके सामने लग जाता है उसे अन्यो से श्रेष्ठतम और विशिष्ठतम बना देता है। यथा गुरूत्वाकर्षण ,गुरूज्ञान आदि।चूंकि गुरु भी श्रेष्ठतम महापुरूष होते है।इसी कारण गुरु के नाम से गुरु धाम भी प्रतिष्ठा सम्पन्न हो जाता है। गुरू को पौराणिक साहित्य में इतनी महत्ता दी गई कि उसे ही विष्णु,उसे ही ब्रहमा और उसे ही महेश्वर कहा गया है। गुरु देवता तूल्य होता है। गुरु की इस तुलना का अर्थ मात्र गुरू का महिमा मण्डन करना नही है। कई मायनो में गुरु भी ब्रहमा, विष्णु व महेश के समतूल्य होते है क्योकि गुरु ही वह शक्ति है जो अपने शिष्यो और अनुयायियों को ब्रहमा, विष्णु और महेश से मिलाने के लिए ,उन्हे आत्मसात करने का मार्ग बताते रहे। तभी तो प्रभु शरणम से पहले गुरू शरणम का प्रचलन है । युगप्रर्वक संत कबीर दास ने गुरू के सच्चे रूप और कार्य का वर्णन अपने एक दोहे में किया है। गुरू गोविन्द दोउ खडे काके लागू पाये,बलिहारी गुरू आपनो गोविन्द दियो बताए।

यानि गुरू और गोविन्द दोनो खडे हो और पहले पैर किसके छूयें को लेकर संशय हो तो पहले गुरू के पैर छूने चाहिए क्योकि गुरू ही वह माध्यम है जो गोविन्द से मिलने का मार्ग बताता है। कई बार गुरू और अध्यापक को एक दूसरे का पर्याय मान लिया जाता है। परन्तु यह ठीक नही है। गुरू और अध्यापक एक नही हो सकते। अध्यापक अधिकाशत भौतिक विधाएं सिखाता है। लेकिन गुरू मनुष्य रूपी शिष्य को पूर्ण रूपेण आध्यात्मिक विकास व समग्र कल्याण के लिए तैयार करता है। उसी प्रकार गुरु अपने भक्तों को परमात्मामय बनने का रास्ता दिखाकर अपने भक्तों पर उपकार करते रहे है। गुरु की प्रेरणा से ही देश दुनिया को परमात्मा का सद सन्देश मिलता है और इस पुनीत कार्य मे गुरु ही सफल सिद्ध हो रहे है। गुरु की सोच है कि ,मनुष्य जीवन का उद्देश्य है जीवन मरण के चक्र से

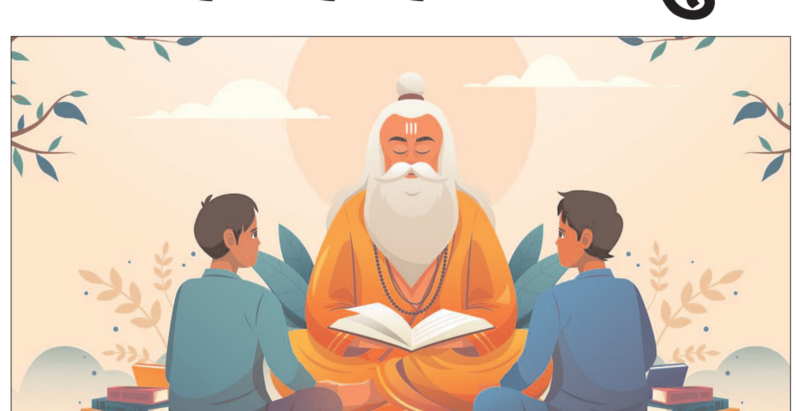

निकलना और अपने कर्मो को भोगकर मोक्ष प्राप्त करना होता है। मोक्ष प्राप्ति की इस प्रक्रिया में गुरू की भूमिका बहुत बडी है। गुरू अच्छे बुरे का ज्ञान कराता है। साथ ही अनेक भौतिक विधाओं का ज्ञान देता है। गुरू ही वह व्यक्ति है जो सत्य और असत्य के बीच का अन्तर समझाकर अपने शिष्य को सत्य के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करता है। जब तक मनुष्य अपने सभी कर्तत्यों को पूर्ण कर प्रभु प्राप्ति के पथपर अग्रसर नही होता, तब तक गुरू उसे निरंतर निर्देश देकर उसे अपने उददेश्य की सतत याद दिलाता रहता है।ताकि शिष्य गुरू की इच्छा के अनुरूप जीवन के सन्मार्ग पर चलकर गुरू को अमरत्व प्रदान कर सके। वैदिक दर्शन में गुरू को एक चेतन देवता माना गया है। माता, पिता,पति, पत्नि,आचार्य इन सभी को चेतन देवता कहा गया है। मनुष्य के उपर इन पांचो देवताओं तथा जल, वायु ,अग्नि, वनस्पति आदि जड देवताओं का कर्ज होना माना गया है। आचार्य कर्ज मुक्ति के लिए उनके द्वारा दिये गए ज्ञान को जीवन में उतारना और दूसरो में बांटना जरूरी है। मनुष्य के लिए आवश्यक है कि सभी जड और चेतन देवताओं के साथ साथ आचार्य कर्ज भी इसी जीवन में उतारे।जिसके लिए गुरू पूर्णिमा जैसे अवसरों पर गुरू दक्षिणा देकर गुरू पथगामी बना जा सकता है। इससे गुरू के प्रति श्रद्धा तो बढती ही है गुरू का आर्शीवाद भी अपने शिष्यों पर बना रहता है। गुरू का भारतीय समाज में एक विशिष्ट स्थान है। गुरू ही बालक में संस्कार भरकर उसे एक ऐसा मनुष्य बनाता है जो संस्कारो, विधाओं और विचारो से परिपूर्ण हो। इस समाज को ऐसे ही गुरू की आवश्यकता है जो विधाविभूषितकर कल्याण के मार्ग का पथिक बना सके। ऐसे ही गुरू समाज को अपनी दिव्य ज्ञान ज्योति से प्रकाशमान करते है। गुरु को भगवान से भी ऊंचा दर्जा प्राप्त हैं क्योंकि गुरु ही हमें अज्ञानता के अंधेरे से ज्ञान के प्रकाश की ओर ले जाता है। कोरोनावायरस के कारण लोगों को इस बार अपने घरों में रहकर ही गुरु पूर्णिमा मनानी पड़ रही है। इस दिन आदिगुरु महाभारत के रचयिता और चार वेदों के व्याख्याता महर्षि कृष्ण द्वैपायन व्यास अर्थात महर्षि वेद व्यास का जन्म हुआ था। महर्षि व्यास संस्कृत के महान विद्वान थे। महाभारत महाकाव्य उनके द्वारा ही लिखा गया । सभी 18 पुराणों के रचयिता भी महर्षि वेदव्यास ही है। गुरु पूर्णिमा को व्यास पूर्णिमा भी कहा जाता है। भारत में सभी ऋतुओं का अपना ही महत्व है। गुरु पूर्णिमा वर्षा ऋतु में ही क्यों मनाया जाता है। इसका भी एक कारण है, क्योकि इन चार माह में न अधिक गर्मी और न अधिक सर्दी होती है। यह समय अध्ययन और अध्यापन के लिए अनुकूल व सर्वश्रेष्ठ है। इसलिए गुरुचरण में उपस्थित शिष्य ज्ञान, शांति, भक्ति और योग शक्ति को प्राप्त करने हेतु इस समय का चयन करते हैं। जीवन में जिस तरह नदी को पार करने के लिए नाविक की आवश्यकता होती है, वाहन में यात्रा करते समय चालक की, उपचार कराते समय चिकित्सक की आवश्यकता होती है। ठीक इसी प्रकार जीवन को सफल बनाने के लिए एक गुरु की आवश्यकता होती है । गुरु के मिल जाने पर गुरु पर आजीवन विश्वास करना होता है। ऐसा इसीलिए क्योंकि गुरु की अग्नि भी शिष्य को जलाती नहीं है अपितु उसे सही राह दिखाने का काम करती है। गुरु पूर्णिमा पर किसी को अपना गुरु बनाने की सोच रहे हैं तो सबसे पहले खूब सोच-विचार कर लें क्योंकि जीवन में गुरु सिर्फ एक बार बनाया जाता है, बार-बार नहीं । गुरु बनाने से पहले कबीरदास के इस दोहे पर जरूर गौर कर ले, गुरु कीजिए जानि के, पानी पीजै छानि । बिना विचारे गुरु करे, परे चौरासी खानि॥ अर्थात जिस तरह पानी को छान कर पीना चाहिए, उसी तरह किसी भी व्यक्ति की कथनी-करनी जान कर ही उसे अपना सद्गुरु बनाना चाहिए। सद्गुरु ऐसा होना चाहिए जिसमें किसी भी प्रकार का लोभ न हो , मोह-माया न हो, भ्रम-संदेह से परे रहकर ही गुरु की शरणागत होना चाहिए।तभी कल्याण संभव है। लेकिन सबसे बेहतर परमात्मा को ही अपना परम् गुरु,परम् शिक्षक व परम् पिता माने तो परम् कल्याण संभव है।

धर्मांतरण, जिहाद और भारत विरोधी साजिश का सवाल

डॉ. भूपेंद्र कुमार सुल्लेरे

भारत में धर्मांतरण की घटनाएं कोई नवीन परिघटना नहीं हैं, किंतु जब ये गतिविधियाँ योजनाबद्ध रूप से, विदेशी फंडिंग और वैश्विक आतंकवाद की विचारधाराओं के साथ जुड़ती हैं, तब यह केवल एक सामाजिक मुद्दा न रहकर राष्ट्रीय सुरक्षा का प्रश्न बन जाती है। मध्यप्रदेश के एक छोटे से गांव में सक्रिय छांगुर बाबा उर्फ जमालुद्दीन का प्रकरण ऐसा ही एक घातक उदाहरण है। सतह पर यह धार्मिक प्रचार-प्रसार प्रतीत होता है, परंतु गहराई में गजवा-ए-हिंद की वैश्विक साजिश और आतंकवादी वित्तपोषण की रणनीति छिपी है। छांगुर बाबा मूलतः एक हिंदू परिवार में जन्मा व्यक्ति था, जिसने कथित ईश्वरीय साक्षात्कार के नाम पर इस्लाम अपनाया और स्वयं को सूफी संत घोषित कर दिया। प्रारंभिक वर्षों में उसने कुछ चमत्कारों और कथित 'इलाज' के माध्यम से स्थानीय जनता में विश्वास अर्जित किया। फिर उसने गुप्त रूप से इस्लामिक शिक्षाओं का प्रचार प्रारंभ किया और युवाओं को सच्चे मार्ग पर लाने के बहाने कट्टरपंथी इस्लामी विचारधारा में दीक्षित करने लगा। जमालुद्दीन के नेतृत्व में एक संगठित नेटवर्क कार्य कर रहा था, जो निर्धन, पिछड़े और आदिवासी समुदायों को आर्थिक सहायता, रोजगार, शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाओं के नाम पर आकर्षित कर धर्मांतरण कर रहा था। इस नेटवर्क के अंतर्गत महिलाओं और बच्चों को विशेष रूप से लक्षित किया गया। 'सूफी संत' की आड़ में वह मासूम ग्रामीणों को बहलाकर कलमा पढ़वाता और मुस्लिम नाम देता था। राज्य और केंद्र की एजेंसियों द्वारा की गई प्रारंभिक जांच में यह स्पष्ट हुआ कि जमालुद्दीन को अरब देशों से हज़ारों डॉलर की सहायता प्राप्त होती थी। इस फंडिंग का एक हिस्सा एनजीओ और धार्मिक ट्रस्टों के माध्यम से भारत में प्रविष्ट होता था। फंड ट्रांसफर में हावाला चैनल का उपयोग भी सामने आया। विशेष रूप से यूएई और कतर स्थित इस्लामी संगठनों के साथ उसका संपर्क स्थापित हुआ। गजवा-ए-हिंद की धारणा इस्लामी हदीसों पर आधारित वह जिहादी सपना है, जिसमें भारत को इस्लामी राज्य बनाने की बात कही जाती है। जमालुद्दीन इस विचारधारा का प्रचारक था और उसका उद्देश्य भारत के धार्मिक ढांचे को बदलना था। उसकी बैठकों और वीडियो में भारत को 'दार-उल-हरब' कहकर 'दार-उल-इस्लाम' में बदलने की बातें सामने आईं। कुछ युवाओं को ऑनलाइन जिहादी लिटरेचर और पाकिस्तान स्थित मौलवियों के व्याख्यान भी भेजे गए। स्थानीय प्रशासन ने प्रारंभ में इसे सामान्य धार्मिक गतिविधि मानकर अनदेखा किया। पुलिस को कई बार शिकायतें मिलीं, लेकिन पर्याप्त साक्ष्य के अभाव में कार्रवाई नहीं हो सकी। कुछ स्थानों पर राजनैतिक संरक्षण की भी बात सामने आई, जिससे इस नेटवर्क को स्थानीय स्तर पर समर्थन मिला। परिणामस्वरूप यह नेटवर्क कई वर्षों तक बिना रोक-टोक के विस्तारित होता रहा। बाद में जब इस नेटवर्क के तार पाकिस्तान आधारित आतंक संगठनों से जुड़े पाए गए और फंडिंग का रूट स्पष्ट हुआ, तब राज्य एटीएस ने इस मामले की जांच प्रारंभ की। जमालुद्दीन के मोबाइल, कंप्यूटर और बैंक खातों की गहन जांच से कई चौंकाने वाले तथ्य सामने आए। उसके पास से कई फर्जी दस्तावेज, आईडी, पाकिस्तानी साहित्य और कट्टरपंथी सामग्री बरामद हुई। इस मामले ने समाज को झकझोर कर रख दिया। अनेक ग्रामीणों ने धर्मांतरण की बात स्वीकार की, वहीं कुछ युवाओं को आतंकवादी ट्रेनिंग के लिए विदेश भेजे जाने की योजना का खुलासा भी हुआ। सरकार ने प्रभावित गांवों में पुनः सामाजिक जागरुकता अभियान शुरू किए हैं। यह घटना भारत में नरम दिखने वाले धर्मांतरण मॉडलों के पीछे छिपी हिंसक विचारधारा को उजागर करती है। यह गिरोह बलरामपुर जिले (उत्तरौला, रेहरा माफी, मधपुर क्षेत्र आदि) में केंद्रित था। हालांकि यह कहा गया है कि नेटवर्क भारत के कई प्रदेशों में फैला , और उड़ाःशीले फंडिंग व एजेंट्स के ज़रिए अन्य जिलों में धकेलने का प्रयास किया गया । छांगुर बाबा उर्फ जमालुद्दीन का मामला केवल एक व्यक्ति या घटना नहीं, अपितु एक वैश्विक विचारधारा का प्रतिबिंब है जो भारत की सांस्कृतिक और धार्मिक संरचना को विखंडित करना चाहती है।

कुटुम्ब न्यायालय दतिया में मीडियेशन जागरुकता शिविर का हुआ आयोजन

समय जगत, दतिया। जिला विधिक सहायता दतिया द्वारा कुटुम्ब न्यायालय दतिया में मीडियेशन जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया। उक्त शिविर में मुख्य अतिथि के रूप में प्रधान न्यायाधीश कुटम्ब न्यायालय दतिया अशोक गुप्ता के साथ अभिभाषक संजय सरवरिया, सलीम खान, केशव सूर्यवंशी, श्रीमती पिंकी यादव, अजय गुर्जर एवं न्यायालय कर्मचारी तथा बडी संख्या में पक्षकारगण उपस्थित रहे। मुख्य अतिथि अशोक गुप्ता ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि मीडियेशन के महत्व एवं समझौते के माध्यम से प्रकरणों के निराकरण से होने वाले लाभ के संबध में जानकारी दी गई। श्री गुप्ता द्वारा पक्षकारों के विधिक अधिकारों के बारे में भी जानकारी दी गई। इसके अतिरिक्त उन्होंने सुलहवार्ता के महत्व को समझाते हुए सुलह समझौते एवं राजीनामा पर जोर दिया।

कलेक्टर व अन्य अधिकारियों ने किया पीडीएस दुकानों का निरीक्षण

समय जगत, दतिया। कलेक्टर स्वप्निल वानखड़े द्वारा जिले की प्रशासनिक व्यवस्था को चुस्त दुरुस्त और जन अपेक्षानुरूप बनाए रखने के लिए चलाए जा रहे विभिन्न जांच अभियानों के अंतर्गत संपूर्ण जिले में बुधवार को उचित मूल्य दुकानों की जांच एक साथ कराई गई। कलेक्टर श्री वानखड़े द्वारा सीएम हेल्पलाइन पोर्टल पर प्राप्त शिकायतों की विभागवार समीक्षा की गई। समीक्षा के दौरान उन्हें ज्ञात हुआ की सबसे ज्यादा शिकायतें पीडीएस दुकानों पर खाद्यान्न वितरण को लेकर हैं। पीडीएस दुकानों पर राशन वितरित नहीं किया जा रहा है। हितग्राहियों को तीन माह का राशन एक साथ वितरित किया गया एवं प्रत्येक माह मिलने वाला राशन कंट्रोल संचालक के द्वारा प्रदान नहीं किया जा रहा है। प्राप्त शिकायत के आधार पर पीडीएस दुकानों की सूची बनाई गई इसके उपरांत कलेक्टर श्री वानखड़े ने स्वयं जिले के ग्राम गढी सहित विभिन्न पीडीएस दुकानों पर पहुंचकर निरीक्षण किया एवं विभिनन अधिकारियों को निर्देशित किया कि सूची वार समस्त दुकानों पर आज निरीक्षण कर खाद्यान्न वितरण में आ रही अनियमितताओं का तीन दिवस के भीतर दूर किया जाए। साथ ही जिले में खाद्यान्न वितरण सुचारू रूप से संचालित हो ऐसा सुनिश्चित किया जाए। कलेक्टर श्री स्वप्निल वानखड़े ने निरीक्षण के दौरान कहा कि शासन द्वारा विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाएं गरीबो को लाभान्वित करने हेतु चलाएं जा रही है। जिसका क्रियान्वयन करना जिला स्तर पर हमारा दायित्व है। इस कार्य में लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी एवं लापरवाही करने वाले पर तुरंत कार्रवाई की जाएगी। इसीक्रम में जिले की समस्त अनुभागों में संचालित दुकानों की जांच की गई। जिसमें कई जगहों पर काफी सारी अनियमितताएं पाई गई जिसमें कई दुकानें तो खुली नहीं थीं। मुख्य कार्यपालन अधिकारी जनपद पंचायत भाण्डेर श्रीमती सुमन चक द्वारा उचित मूल्य की दुकान सालोन ए का निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के कुछ ही समय पूर्व दुकान खोली गई थी ऐसा ग्रामवासियों द्वारा बताया गया। दुकान पर लगभग 30-35 हितग्राही खाद्यान्न प्राप्ति हेतु खडे थे।

बोड़ा में बिजली बिलों की अधिक राशि से परेशान वार्ड 13-14 के रहवासी, कनिष्ठ यंत्री को सौंपा ज्ञापन

गरीब मजदूरों ने बिल कम करने की लगाई गुहार

बोड़ा। नगर के वार्ड क्रमांक 13 व 14 अंतर्गत जाटव मोहल्ला, अस्पताल रोड के रहवासियों ने मंगलवार को विद्युत वितरण केंद्र बोड़ा पहुंचकर कनिष्ठ यंत्री रामकृपाल मिश्रा को ज्ञापन सौंपा। ज्ञापन में उन्होंने बिजली बिलों की अत्यधिक राशि पर चिंता जताते हुए बिल में सुधार की मांग की।

रहवासियों ने ज्ञापन में बताया कि वे गरीब मजदूर वर्ग से हैं, जिनकी आर्थिक स्थिति पहले से ही कमजोर है। इसके बावजूद उन्हें औसत खपत से कई गुना ज्यादा बिजली बिल थमाए जा रहे हैं। निवासियों ने यह भी बताया कि जब से नवीन मीटर कनेक्शन लगाए गए हैं, तभी से अत्यधिक राशि के बिल आ रहे हैं, जिससे उन्हें बिल जमा करने में भारी परेशानी हो रही है।

पूर्व में भी इस संबंध में शिकायत की गई थी, लेकिन कोई ठोस कार्रवाई नहीं हुई। अब पुनः ज्ञापन सौंपकर मांग की गई है कि उनकी समस्याओं को गंभीरता से लिया जाए और बिजली बिलों की समीक्षा कर उचित संशोधन किया जाए।

रहवासियों ने कनिष्ठ यंत्री से आग्रह किया कि गरीब परिवारों की आर्थिक स्थिति को ध्यान में रखते हुए बिल की राशि में राहत दी जाए, ताकि वे समय पर बिल का भुगतान कर सकें और किसी भी प्रकार की विधि संबंधी कार्यवाही से बचा जा सके।

इनका कहना है

विद्युत बिल अत्यधिक आने के विषय में जो ज्ञापन दिया है प्रभारी के द्वारा तत्काल चार, पांच कनेक्शन चेकिंहांग किया गया है सारे मीटर सही पाए गए हैं रीडिंग का बिल दिया जा रहा है मोहल्ले में विनोद जाटव का भी चोरी का प्रकरण बनाया गया है और भी बनाए जाएंगे।

जांच करवाई जाएगी।

विद्युत उपभोक्ताओं से अपील हे कि संघन चेकिंग अभियान चलाया जाएगा। विद्युत चोरी से बचें, अनावश्यक बिल से बचें। समय बिल जमा करें, चोरी नहीं करे।

रामकृपाल मिश्रा जेई विद्युत मंडल बोड़ा

mail ID-cmonpbod@gmail.com

कार्यालय नगर परिषद बोड़ा जिला राजगढ़ (ब्यावरा) म.प्र.

क्रमांक / निर्माण / 2025 / 852 (ऑनलाइन निविदा आमंत्रण) बोड़ा दिनांक: 08 / 07 / 2025

एतद द्वारा नवीन केन्द्रीकृत प्रणाली अंतर्गत पंजीकृत ठेकेदारों से **नगर परिषद बोड़ा** जिला **राजगढ़ द्वारा प्रथम** निविदा आमंत्रित की जाती है। अतः इच्छुक निविदादाता आवश्यक दस्तावेजों के साथ अपनी ऑनलाईन निविदा दर ई-टेण्डरिंग प्रणाली के माध्यम से प्रस्तुत कर सकते है। निविदा के संबंध में विस्तृत जानकारी **ई टेण्डर** वेबसाईट ***https://mptenders.gov.in*** पर देखी जा सकती है। निविदा एवं उसकी तिथियों मे किसी भी प्रकार संशोधन/परिवर्तन/परिवर्धन होने की दशा मे सूचना ऑनलाइन सूचना ही जारी की जावेगी पृथक से कोई सूचना समाचार पत्र मे प्रकाशित नही की जावेगी।

क.	जावक क्रमांक	आन लाइन निविदा	कार्य का नाम/विवरण	अनुमानित लागत लाख में	धरोहर राशि	निविदा पत्रक शुल्क	ठेकेदार सप्लार्स की श्रेणी	कार्य पूर्ण करने की समयावधि
1	852	2025_UAD _435729_1	निकाय क्षेत्रान्तर्गत नवीन बस स्टेण्ड निर्माण कार्य।	17673730	88370	12500	केन्द्रीयकृत प्रणाली में पंजीकृत	कार्यादेश से 12 माह वर्षा काल सहित
2	853	2025_UAD _435838_1	निकाय क्षेत्रान्तर्गत बस स्टेण्ड पास शॉपिंग कॉम्पलेक्स निर्माण कार्य।	11704361	58522	12500		
3	854	2025_UAD _435864_1	निकाय क्षेत्रान्तर्गत नवीन बस स्टेण्ड पास शॉपिंग कॉम्पलेक्स निर्माण कार्य।	12110410	60553	12500		

KEYDATES

No.	WorkDepartmenStage/ Bidder'sStage	Start		Expiry		Envelops
		Date	Time	Date	Time	
1	2	3	4	5	6	7
1	PurchaseofTender Online	08.07.2025	05:30PM	07.08.2025	05:30 PM	-
2	Prebid meeting Date and Time	Not required	-	-	-	-
3	BidSubmisson Start			08.07.2025	05:30PM	-
4	BidSubmisson End			07.08.2025	05:30 PM	
5	Mandatory Submission Open			11.08.2025	10:30 AM	-

नोट :- 1. ठेकेदार सप्लायर्स की श्रेणी केन्द्रीयकृत प्रणाली में पंजीकृत होना अनिवार्य है।
2. कार्य पूर्ण करने की समयावधि कार्यादेश से 12 माह की रहेगी।
3. नियम एवं शर्ते ऑनलाइन देखी जा सकती है।

(श्री मति निकिता करण जायसवाल) अध्यक्ष नगर परिषद् बोड़ा | (अमित गुदेनिया) निर्माण शाखा प्रभारी नगर परिषद् बोड़ा | (धर्मेन्द्र तिवारी) उपयंत्री नगर परिषद् बोड़ा | (अभिषेक जैन) मु0न0पा0 अधिकारी नगर परिषद् बोड़ा

सोनागिर में भिक्षावृत्ति की रोकथाम हेतु चलाया अभियान

दतिया। जिला कार्यक्रम अधिकारी महिला एवं बाल विकास अरबिंद उपाध्याय के निर्देशन में मंगलवार को बाल भिक्षावृत्ति की रोकथाम हेतु 20 दिवसीय जागरूकता अभियान के प्रथम चरण के दौरान जिला बाल संरक्षण इकाई द्वारा सोनागिरी जैन तीर्थस्थल, जिला दतिया पर बाल भिक्षावृत्ति उन्मूलन अभियान का संचालन किया गया। कार्यवाही के दौरान 01 बच्चा भिक्षावृत्ति करते हुए पाया गया। बच्चे से बातचीत की गई एवं समझाईश दी गई कि वह प्रसाद एवं रूपये पैसे के लालच में भीख न मांगे तथा नियमित स्कूल जाये। बच्चे के स्कूल जाने के संबंध में शासकीय प्राथमिक विद्यालय सिनावल के शिक्षकों से संपर्क कर विद्यालय में बालक के नामांकन के संबंध में प्रमाणीकरण प्राप्त किया गया, तथा बच्चा नियमित स्कूल आये ऐसा सुनिश्चित करने हेतु बच्चे के परिजनों एवं बच्चे से नियमित संपर्क करने हेतु शिक्षकों से अनुरोध किया गया। दल द्वारा मौके पर ही बच्चे के संरक्षक को खोजकर बुलाया गया। दल में उपस्थित बाल कल्याण समिति दतिया के सदस्य वैभव खरे द्वारा बच्चे को उसके परिजन को सौप दिया गया। बच्चों से भीख मंगवाना अधिनियम की धारा 76 के तहत दंडनीय अपराध है। जिसमें भीख मांगने के प्रयोजन के लिए बालक को नियोजित करने या किसी बालक से भीख मंगवाने पर 5 वर्ष के कारावास और 1 लाख के दंड का प्रावधान है। कार्यवाही के दौरान महिला एवं बाल विकास विभाग से बाल संरक्षण अधिकारी धीरसिंह कुशवाह, बृजेंद्र सिंह कौरव, कुश मिश्रा, आकाश श्रीवास्तव आदि प्रमुख रूप से उपस्थित रहे।

म.प्र.गृह निर्माण एवं अधोसंरचना विकास मण्डल

आम सूचना

अयोध्या नगर हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी भोपाल में भवन क्रमांक एल.आई.जी. 741 जी-सेक्टर मण्डल द्वारा श्री प्रेम अधिकारी आत्मज श्री तेज अधिकारी के नाम हस्तान्तरण आदेश क. 702-706 दिनांक 18/03/2008 को हस्तान्तरित किया गया है। जिसका विक्रय विलेख दिनांक 06/10/2007 को पंजीयन कार्यालय से पंजीकृत है। केता/विक्रेता द्वारा आवेदन, परिचय पत्र, शपथ-पत्र, संयुक्त शपथ-पत्र एवं मण्डल प्रारूप पर आवेदन प्रस्तुत करते हुए उक्त संपत्ति श्रीमती सुनंदा ठाकरे पत्नी श्री अशोक ठाकरे के नाम पर हस्तान्तरित करने हेतु दस्तावेज प्रस्तुत किये गये है एवं उप पंजीयक कार्यालय द्वारा उक्त संपत्ति का विक्रय विलेख दिनांक 06/06/2025 को क्रेता के पक्ष में दस्तावेज पंजीकृत किया गया है। प्रस्तुत दस्तावेजो के आधार पर उक्त संपत्ति श्रीमती सुनंदा ठाकरे पत्नी श्री अशोक ठाकरे के नाम पर हस्तान्तरण का प्रकरण इस कार्यालय में विचाराधीन है।

उक्त संपत्ति के संबंध में यदि किसी व्यक्ति / उत्तराधिकारी / या किसी संस्था को इस संबंध में कोई आपत्ति हो तो 15 दिवस के अन्दर लिखित रूप से मय सबूत के साथ इस कार्यालय को प्रस्तुत करें, समयावधि के पश्चात् कोई भी आपत्ति स्वीकार नही की जावेगी एवं मण्डल नियमानुसार कार्यवाही करने हेतु स्वतंत्र रहेगा।

संपदा अधिकारी
म.प्र. गृह निर्माण सहकारी एवं अधोसंचना विकास मण्डल प्रक्षेत्र-2 भोपाल

प्रारूप दस
(नियम 7 देखिये)

न्यायालय तहसीलदार नजूल संत हिरदाराम नगर (बैरागढ) वृत्त भोपाल
(पुराना जिला पंचायत भवन कोहेफिजा जिला भोपाल)

सार्वजनिक नोटिस

एतद द्वारा सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि निम्नलिखित अनुसूची में उल्लेख अनुसार भू-अभिलेखों में नामांतरण की कार्यवाही इस न्यायालय में समक्ष विचाराधीन है। कोई भी हितबद्ध व्यक्ति दिनांक 23/07/2025 को 03.00 बजे स्थान न्यायालय तहसीलदार नजूल संतहिरदाराम नगर बैरागढ वृत्त भोपाल के समक्ष स्वयं या अपने अधिवक्ता जिसे सम्यक रूप से अनुदेश दिये गये हो, या वैध प्रतिनिधि के द्वारा उपस्थित होकर विचाराधीन नामांतरण के संबंध में अपनी आपत्ति प्रस्तुत कर सकता है। नियत दिनांक के बाद प्राप्त आपत्तियों पर कोई विचार नहीं किया जाएगा।

अनुसूची

ग्राम का नाम गोंदरमऊ, खसरा नंबर 531/2/3/1/2 क्षेत्रफल 8.11 हेक्टे., उस व्यक्ति विवरण जिनके पक्ष में नामांतरण विचाराधीन है (आवेदक का नाम, पिता/पति का नाम एवं पता) श्री रजी उन्नीसा बैगम पत्नि श्री शुजा उद्दीन खान

आज दिनांक 8/07/2025 को मेरे हस्ताक्षर एवं न्यायालय की मुद्रा के अधीन जारी किया गया।

तहसीलदार नजूल संत हिरदाराम नगर (बैरागढ) वृत्त भोपाल

प्रारूप दस
(नियम 7 देखिये)

न्यायालय तहसीलदार नजूल संत हिरदाराम नगर (बैरागढ) वृत्त भोपाल
(पुराना जिला पंचायत भवन कोहेफिजा जिला भोपाल)

सार्वजनिक नोटिस

एतद द्वारा सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि निम्नलिखित अनुसूची में उल्लेख अनुसार भू-अभिलेखों में नामांतरण की कार्यवाही इस न्यायालय में समक्ष विचाराधीन है। कोई भी हितबद्ध व्यक्ति दिनांक 23/07/2025 को 03.00 बजे स्थान न्यायालय तहसीलदार नजूल संतहिरदाराम नगर बैरागढ वृत्त भोपाल के समक्ष स्वयं या अपने अधिवक्ता जिसे सम्यक रूप से अनुदेश दिये गये हो, या वैध प्रतिनिधि के द्वारा उपस्थित होकर विचाराधीन नामांतरण के संबंध में अपनी आपत्ति प्रस्तुत कर सकता है। नियत दिनांक के बाद प्राप्त आपत्तियों पर कोई विचार नहीं किया जाएगा।

अनुसूची

ग्राम का नाम गोंदरमऊ, खसरा नंबर 531/2/3/1/2 क्षेत्रफल 8.11 हेक्टे., उस व्यक्ति विवरण जिनके पक्ष में नामांतरण विचाराधीन है (आवेदक का नाम, पिता/पति का नाम एवं पता) श्रीमति निशात शरीफ खान पत्नि श्री शरीफ खान

आज दिनांक 8/07/2025 को मेरे हस्ताक्षर एवं न्यायालय की मुद्रा के अधीन जारी किया गया।

तहसीलदार नजूल संत हिरदाराम नगर (बैरागढ) वृत्त भोपाल

नाम परिवर्तन

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि मेरे पुत्र हरिओम वशिष्ठ (HARIOM VASHISHT) का नाम जन्मप्रमाण पत्र, आधार कार्ड, समग्र परिवार कार्ड में हरिओम वशिष्ठ (HARIOM VASHISHT) लिखा चला आ रहा है व शैक्षणिक दस्तावेजों में मेरे पुत्र का नाम ओम वशिष्ठ नायक (OM VASHISHT NAYAK) दर्ज है। जो कि एक ही व्यक्ति के नाम है भविष्य में मेरे पुत्र के समस्त शासकीय, अर्धशासकीय व प्राइवेट दस्तावेजों में ओम वशिष्ठ नायक (OM VASHISHT NAYAK) के नाम से जाना पहचाना व पढ़ा जावे।

पुराना नाम
हरिओम वशिष्ठ
(HARIOM VASHISHT)
नया नाम
ओम वशिष्ठ नायक
(OM VASHISHT NAYAK)

नाम परिवर्तन सूचना

राघवेन्द्र लोधी आत्मज श्री हरिराम लोधी, आयु वयस्क, निवासी- 603/1, डुंडा टीकमगढ़, म.प्र. के पुत्र के आधार कार्ड में मेरे पुत्र का नाम बिट्टू लोधी (BITTU LODHI) त्रुटिवश गलत दर्ज हो गया है। जबकि मेरे पुत्र के जन्म प्रमाण पत्र एवं 5वीं कक्षा की अंकसूची में मेरे पुत्र का नाम खुशीराम लोधी (KHUSHIRAM LODHI) दर्ज है। मेरे पुत्र का नाम खुशीराम लोधी ही सही है तथा उनके पुत्र को इसी नाम से जाना एवं पहचाना जाये। उन्होंने इस संबंध में शपथ पत्र भी दाखिल किया है।

नाम परिवर्तन सूचना

मैं महेश आत्मज श्री मोहन सिंह, आयु वयस्क निवासी चकावाली, बगासुर, रायसेन, मध्यप्रदेश- वर्तमान निवास भोपाल है मेरे पुत्र का सही एवं वास्तविक नाम राहुल है। जबकि मेरे पुत्र के आधार कार्ड में नाम राजा अंकित हो गया है। ऐसे में स्पष्ट किया गया है कि राहुल और राजा एक ही व्यक्ति हैं तथा उक्त व्यक्ति अर्थात् महेश आत्मज श्री मोहन सिंह के पुत्र को राहुल के नाम से ही जाना एवं पहचाना जाये। श्री महेश सिंह ने इस संबंध में शपथ पत्र भी दाखिल किया है।

नाम परिवर्तन सूचना

में शिफा बी पुत्री श्री हनीफ खां आयु वयस्क, निवासी ग्राम बछेका, तहसील सिलवानी, जिला रायसेन का सही एवं वास्तविक नाम शिफा बी पुत्री श्री हनीफ खां है। जो कि उनके जन्म प्रमाण पत्र में अंकित है। जबकि शिफा बी के आधार कार्ड में उनका नाम निशा बी पुत्री श्री हनीफ खां दर्ज हो गया है। उनका वास्तविक एवं सही नाम शिफा बी पुत्री श्री हनीफ खां ही है तथा उन्हें इसी नाम से जाना एवं पहचाना जाये। शिफा बी ने इस संबंध में शपथ पत्र भी दाखिल किया है।

नाम परिवर्तन सूचना

द्वार सिंह आत्मज श्री बेर सिंह आयु वयस्क, निवासी ग्राम खेरी, तहसील कन्नौद, जिला देवास म.प्र. के पुत्र सुनील का सही एवं वास्तविक नाम सुनील आत्मज श्री द्वार सिंह है, जो कि उनके जन्म प्रमाण पत्र में अंकित है। वहीं त्रुटिवश सुनील के आधार कार्ड में उनका नाम विशाल आत्मज श्री द्वार सिंह अंकित हो गया है। वास्तव में सुनील एवं विशाल एक ही व्यक्ति हैं। अतः भविष्य में द्वार सिंह के पुत्र को सुनील नाम से ही जाना एवं पहचाना जाये। द्वार सिंह ने इस संबंध में शपथ पत्र भी दाखिल किया है।

नाम परिवर्तन सूचना

सोएस शर्मा आत्मज श्री मनोज शर्मा आयु वयस्क, निवासी ग्राम घाट सेमरिया, तहसील गुनोर जिला पन्ना का सही एवं वास्तविक नाम सोएस शर्मा आत्मज श्री मनोज शर्मा है। जो उनकी 8वीं कक्षा की अंकसूची में अंकित है। जबकि सोएस शर्मा के आधार कार्ड में त्रुटिवश उनका नाम कृष्णा शर्मा आत्मज श्री मनोज शर्मा दर्ज हो गया है। ऐसे में भविष्य में उन्हें सोएस शर्मा आत्मज श्री मनोज शर्मा के नाम से ही जाना एवं पहचाना जाये। सोएस शर्मा आत्मज श्री मनोज शर्मा ने इस संबंध में शपथ पत्र भी दाखिल किया है।

नाम परिवर्तन सूचना

मुनिया बाई पत्नी रघुनाथ, आयु वयस्क, निवासी- ग्राम मिलकाबाद तहसील जिला अशोकनगर म.प्र. का सही एवं वास्तविक नाम मुनिया बाई पत्नी रघुनाथ है, जो उनके वोटर कार्ड में अंकित है। वहीं उनके आधार कार्ड में उनका नाम त्रुटिवश मुनिया बाई पत्नी रघुनाथ अंकित हो गया है। उनका सही एवं वास्तविक नाम मुनिया बाई पत्नी रघुनाथ ही है तथा उन्हें भविष्य में इसी नाम से जाना एवं पहचाना जाये। मुनिया बाई पत्नी रघुनाथ ने इस संबंध में शपथ पत्र भी दाखिल किया है।

जाहिर सूचना

जाहिर सूचना के माध्यम से सूचित किया जाता है की मेरा सही नाम Honey Singh Wadhva है। अत: मेरे ड्राइविंग लाइसेंस में गलती से मेरा नाम HANNEE WADVA अंकित हो गया है जो की गलत है। जबकि मेरे आधार कार्ड, पेन कार्ड सहित सभी दस्तावेजों में मेरा नाम Honey Singh Wadhva अंकित है जो की सही है। अत: मुझे Honey Singh Wadhva के नाम से ही जाना पहचाना जावे।

हनी सिंघ वाधवा पिता श्री सुरजीत सिंह पंजाबी 275, वार्ड नं.28 शिवम वाटिका जिला हरदा

नाम संशोधन सूचना

मैं लोकेश (LOKESH) आत्मज श्री दूले सिंह (DULE SINGH) निवासी-ग्राम इटावा खुर्द, पिपलानी, सीहोर म.प्र. मेरा आधार कार्ड पूर्व का बना हुआ है जिसका क्रमांक 2384 3734 4211 है जिसमें मेरा नाम लोकेन्द्र (LOKENDRA) आत्मज श्री दूले सिंह (DULE SINGH) अंकित है जो कि गलत व अधूरा नाम है। मेरा पूरा व सही नाम लोकेश (LOKESH) आत्मज श्री दूले सिंह (DULE SINGH) है जो कि मेरे वोटर आई. डी. जिसका क्रं. ILR5279971 है एवं जन्म प्रमाण पत्र, अंकसूची व शासकीय दस्तावेजों में अंकित दर्ज है। मेरा पूरा व सही नाम लोकेश (LOKESH) आत्मज श्री दूले सिंह (DULE SINGH) है। तथा अब मैं भविष्य में इसी नाम से जाना एवं पहचाना जाऊंगा।

लोकेश

म.प्र.गृह निर्माण एवं अधोसंरचना विकास मण्डल

आम सूचना

गौतम नगर हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी भोपाल भवन क्रमांक एम.आई.जी. 265 मण्डल द्वारा श्री कुलभूषण शर्मा आत्मज श्री एच. एल. शर्मा के नाम पर आवंटित किया गया है। जिसका विक्रय विलेख दिनांक 06/05/1985 को पंजीयन कार्यालय से पंजीकृत है। श्री कुलभूषण शर्मा आत्मज श्री एच.एल. शर्मा की दिनांक 14/11/2003 को मृत्यु होने के उपरांत उनकी पत्नी श्रीमती राधा शर्मा पत्नी स्व. श्री कुलभूषण शर्मा के नाम पर नामान्तरण आदेश क. 2996 दिनांक 20/12/2018 को नामान्तरित किया गया है। नामान्तरी द्वारा लीज नवीनीकरण दिनांक 15/06/2023 को उप पंजीयक कार्यालय में पंजीकृत करवा ली गई है। केता / विक्रेता द्वारा आवेदन, परिचय पत्र, शपथ-पत्र, संयुक्त शपथ-पत्र एवं मण्डल प्रारूप पर आवेदन प्रस्तुत करते हुए उक्त संपत्ति श्री रितेश कुमार नैन आत्मज श्री मौहकम सिंह नैन के नाम पर हस्तान्तरित करने हेतु दस्तावेज प्रस्तुत किये गये है एवं उप पंजीयक कार्यालय द्वारा उक्त संपत्ति का विक्रय विलेख दिनांक 10/08/2023 को क्रेता के पक्ष में दस्तावेज पंजीकृत किया गया है। प्रस्तुत दस्तावेजो के आधार पर उक्त संपत्ति श्री रितेश कुमार नैनं आत्मज श्री मौहकम सिंह नैन के नाम पर हस्तान्तरण का प्रकरण इस कार्यालय में विचाराधीन है।

उक्त संपत्ति के संबंध में यदि किसी व्यक्ति / उत्तराधिकारी / या किसी संस्था को इस संबंध में कोई आपत्ति हो तो 15 दिवस के अन्दर लिखित रूप से मय सबूत के साथ इस कार्यालय को प्रस्तुत करें, समयावधि के पश्चात् कोई भी आपत्ति स्वीकार नही की जावेगी एवं मण्डल नियमानुसार कार्यवाही करने हेतु स्वतंत्र रहेगा।

संपदा अधिकारी
म.प्र. गृह निर्माण सहकारी एवं अधोसंचना विकास मण्डल प्रक्षेत्र-2 भोपाल

म.प्र.गृह निर्माण एवं अधोसंरचना विकास मण्डल

आम सूचना

अशोका गार्डन हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी भोपाल शेड / भवन क्रमांक 88 बी-सेक्टर मण्डल द्वारा श्री आसिफ मोहम्मद आत्मज श्री साकिब मोहम्मद के नाम पर भाड़ाकय खरीद करार के आधार पर आवंटन आदेश क्र. 13270-272 दिनांक 09/12/1989 को आवंटित किया गया है। श्री आसिफ मोहम्मद की दिनांक 22/06/2001 को मृत्यु होने के उपरांत उनकी पत्नी श्रीमती जेबुन निशा पत्नी स्व. श्री आसिफ मोहम्मद के नाम नामान्तरण आदेश क्र. 314 दिनांक 23/01/2010 को नामान्तरित किया गया है। जिसका विक्रय विलेख दिनांक 28/04/2010 को पंजीयन कार्यालय से पंजीकृत है। श्रीमती जेबुन निशा पत्नी स्व. श्री आसिफ मोहम्मद की दिनांक 19/07/ 2021 की मृत्यु होने के उपरांत उनके पुत्रगण / पुत्रीगण 1) श्री शाहिद मोहम्मद 2) श्री वासिद मोहम्मद पुत्रगण स्व. श्री आसिफ मोहम्मद 3) श्रीमती शबाना पत्नी श्री अब्दुल रफत 4) श्रीमती सुल्ताना बी पत्नी श्री अजीज खान 5) सुश्री रिजवाना पुत्रीगण स्व. श्री आसिफ मोहम्मद के संयुक्त नाम पर नामान्तरण आदेश क्र. 551 दिनांक 23/01/2025 को नामान्तरित किया गया है। क्रेता/ विक्रेता द्वारा आवेदन, परिचय पत्र, शपथ-पत्र, संयुक्त शपथ-पत्र एवं मण्डल प्रारूप पर आवेदन प्रस्तुत करते हुए उक्त संपत्ति श्रीमती फेमिदा बी पत्नी श्री बाबर खान के नाम पर हस्तान्तरित करने हेतु दस्तावेज प्रस्तुत किये गये है एवं उप पंजीयक कार्यालय द्वारा उक्त संपत्ति का विक्रय विलेख दिनांक 10/02/2025 को क्रेता के पक्ष में दस्तावेज पंजीकृत किया गया है। प्रस्तुत दस्तावेजो के आधार पर उक्त संपत्ति श्रीमती फेमिदा बी पत्नी श्री बाबर खान के नाम पर हस्तान्तरण का प्रकरण इस कार्यालय में विचाराधीन है।

उक्त संपत्ति के संबंध में यदि किसी व्यक्ति / उत्तराधिकारी / या किसी संस्था को इस संबंध में कोई आपत्ति हो तो 15 दिवस के अन्दर लिखित रूप से मय सबूत के साथ इस कार्यालय को प्रस्तुत करें, समयावधि के पश्चात् कोई भी आपत्ति स्वीकार नही की जावेगी एवं मण्डल नियमानुसार कार्यवाही करने हेतु स्वतंत्र रहेगा।

संपदा अधिकारी
म.प्र. गृह निर्माण सहकारी एवं अधोसंचना विकास मण्डल प्रक्षेत्र-2 भोपाल

म.प्र.गृह निर्माण एवं अधोसंरचना विकास मण्डल

आम सूचना

सतलापुर हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी मण्डीदीप जिला रायसेन में भूखण्ड/भवन क्रमांक एल.आई.जी. 209 बी-सेक्टर मण्डल द्वारा श्रीमती शिवी सेन पत्नी श्री धीरज सेन के नाम पर हस्तान्तरण आदेश क्र. 1196-99 दिनांक 17/05/2010 को हस्तान्तरित किया गया है। जिसका विक्रय विलेख दिनांक 08/03/2010 को उप पंजीयक कार्यालय औबेदुल्लागंज जिला रायसेन से पंजीकृत है। आवंटी द्वारा लीज नवीनीकरण दिनांक 04/03/2025 को उप पंजीयक कार्यालय में पंजीकृत करवा ली गई है। क्रेता/विक्रेता द्वारा आवेदन, परिचय पत्र, शपथ-पत्र, संयुक्त शपथ-पत्र एवं मण्डल प्रारूप पर आवेदन प्रस्तुत करते हुए उक्त संपत्ति श्रीमती रीना चौहान पत्नी श्री शेर सिंह चौहान के नाम पर हस्तान्तरित करने हेतु दस्तावेज प्रस्तुत किये गये है एवं उप पंजीयक कार्यालय औबेदुल्लागंज जिला रायसेन द्वारा उक्त संपत्ति का विक्रय विलेख दिनांक 26/03/2025 को क्रेता के पक्ष में दस्तावेज पंजीकृत किया गया है। प्रस्तुत दस्तावेजो के आधार पर उक्त संपत्ति श्रीमती रीना चौहान पत्नी श्री शेर सिंह चौहान के नाम पर हस्तान्तरण का प्रकरण इस कार्यालय में विचाराधीन है।

उक्त संपत्ति के संबंध में यदि किसी व्यक्ति / उत्तराधिकारी / या किसी संस्था को इस संबंध में कोई आपत्ति हो तो 15 दिवस के अन्दर लिखित रूप से मय सबूत के साथ इस कार्यालय को प्रस्तुत करें, समयावधि के पश्चात् कोई भी आपत्ति स्वीकार नही की जावेगी एवं मण्डल नियमानुसार कार्यवाही करने हेतु स्वतंत्र रहेगा।

संपदा अधिकारी
म.प्र. गृह निर्माण सहकारी एवं अधोसंचना विकास मण्डल प्रक्षेत्र-2 भोपाल

म.प्र.गृह निर्माण एवं अधोसंरचना विकास मण्डल

आम सूचना

बागमुगालिया एक्सटेंशन हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी भोपाल में भूखण्ड /भवन क्रमांक एच.आई.जी. 284 मण्डल द्वारा श्रीमती शिरोमणि चौबे पुत्री स्व. श्री हरप्रसाद खड्डार के नाम पर आवंटित किया गया है। जिसका विक्रय विलेख दिनांक 19/05/2006 को पंजीयन कार्यालय से पंजीकृत है। केता/ विक्रेता द्वारा आवेदन, परिचय पत्र, शपथ-पत्र, संयुक्त शपथ-पत्र एवं मण्डल प्रारूप पर आवेदन प्रस्तुत करते हुए उक्त संपत्ति श्री वैभव चौहान आत्मज श्री ब्रिज वल्भ सिंह चौहान के नाम पर हस्तान्तरित करने हेतु दस्तावेज प्रस्तुत किये गये है एवं उप पंजीयक कार्यालय द्वारा उक्त संपत्ति का विक्रय विलेख दिनांक 21/06/2025 को केता के पक्ष में दस्तावेज पंजीकृत किया गया है। प्रस्तुत दस्तावेजो के आधार पर उक्त संपत्ति श्री वैभव चौहान आत्मज श्री ब्रिज वल्भ सिंह चौहान के नाम पर हस्तान्तरण का प्रकरण इस कार्यालय में विचाराधीन है।

उक्त संपत्ति के संबंध में यदि किसी व्यक्ति / उत्तराधिकारी / या किसी संस्था को इस संबंध में कोई आपत्ति हो तो 15 दिवस के अन्दर लिखित रूप से मय सबूत के साथ इस कार्यालय को प्रस्तुत करें, समयावधि के पश्चात् कोई भी आपत्ति स्वीकार नही की जावेगी एवं मण्डल नियमानुसार कार्यवाही करने हेतु स्वतंत्र रहेगा।

संपदा अधिकारी
म.प्र. गृह निर्माण सहकारी एवं अधोसंचना विकास मण्डल प्रक्षेत्र-2 भोपाल

म.प्र.गृह निर्माण एवं अधोसंरचना विकास मण्डल

आम सूचना

डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी नगर हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी विदिशा में भवन क्रमांक एम.आई.जी. ए-185 मण्डल द्वारा श्री वृन्दावन शर्मा आत्मज श्री कालूराम शर्मा के नाम पर हस्तान्तरण आदेश क्र. 1056-1059 दिनांक 13/09/2013 को हस्तान्तरित किया गया है। जिसका विक्रय विलेख दिनांक 01/08/2006 को पंजीयन कार्यालय से पंजीकृत है। श्री वृन्दावन शर्मा आत्मज श्री कालूराम शर्मा (पिता जी) की दिनांक 31/05/2022 को मृत्यु होने के उपरांत उनके पुत्र श्री शुभम शर्मा आत्मज स्व. श्री वृन्दावन शर्मा के द्वारा उक्त भवन अपने नाम पर नामान्तरण करने हेतु आवेदन पत्र, शपथ पत्र, आवंटी के अन्य वारिसों का अनापत्ति शपथ-पत्र, परिचय पत्र, मृत्यु प्रमाण पत्र एवं मण्डल प्रारूप में आवेदन पत्र प्रस्तुत किए गए है। प्रस्तुत दस्तावेजो के आधार पर उक्त सम्पत्ति श्री शुभम शर्मा आत्मज स्व. श्री वृन्दावन शर्मा के नाम से नामान्तरण हेतु प्रकरण इस कार्यालय में विचाराधीन है।

यदि किसी व्यक्ति / उत्तराधिकारी / या किसी संस्था को इस संबंध में कोई आपत्ति हो तो 15 दिवस के अन्दर लिखित रूप से सबूत के साथ इस कार्यालय को प्रस्तुत करें, समयावधि के पश्चात् कोई भी आपत्ति स्वीकार नही की जावेगी एवं मण्डल नियमानुसार कार्यवाही करने हेतु स्वतंत्र रहेगा

संपदा अधिकारी
म.प्र. गृह निर्माण सहकारी एवं अधोसंचना विकास मण्डल प्रक्षेत्र-2 भोपाल

न्यायालय तहसीलदार राजधानी परियोजना टी.टी. नगर वृत्त भोपाल

प्रकरण क्रमांक 0084/अ-12 /24-25

// आम सूचना //

आवेदक/आवेदिका/ कु. राखी सिंह पत्नी सत्यपाल सिंह निवासी- चूना भट्टी द्वारा आवेदन प्रस्तुत कर ग्राम-चुनाभट्टी खसरा क्रमांक 85/1/7 रकवा 0.0200 हे. भूमि का सीमांकन करने हेतु आवेदन पत्र प्रस्तुत किया है।

अतः सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि यदि इस संबंध मे किसी को कोई आपत्ति हो तो वह अपनी आपत्ति 07 दिवस में स्वयं अथवा अपने अभिभाषक के माध्यम से मेरे समक्ष प्रस्तुत करें। निर्धारित अवधि के पश्चात प्राप्त आपत्तियों पर किसी भी प्रकार का विचार नही किया जावेगा।

आज दिनांक 08/07/25 को मेरे हस्ताक्षर एवं न्यायालय की पदमुद्रा से जारी किया गया।

तहसीलदार
टी.टी. नगर वृत्त-भोपाल

प्रारूप दस
(नियम 7 देखिये)

न्यायालय तहसीलदार नजूल संत हिरदाराम नगर (बैरागढ) वृत्त भोपाल
(पुराना जिला पंचायत भवन कोहेफिजा जिला भोपाल)

रा.प्र.क्रं.0666/अ-3/24-25

सार्वजनिक नोटिस

एतद द्वारा सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि निम्नलिखित अनुसूची में उल्लेख अनुसार भू-अभिलेखों में नामांतरण की कार्यवाही इस न्यायालय में समक्ष विचाराधीन है। कोई भी हितबद्ध व्यक्ति दिनांक 23/07/2025 को 03.00 बजे स्थान न्यायालय तहसीलदार नजूल संतहिरदाराम नगर बैरागढ वृत्त भोपाल के समक्ष स्वयं या अपने अधिवक्ता जिसे सम्यक रूप से अनुदेश दिये गये हो, या वैध प्रतिनिधि के द्वारा उपस्थित होकर विचाराधीन नामांतरण के संबंध में अपनी आपत्ति प्रस्तुत कर सकता है। नियत दिनांक के बाद प्राप्त आपत्तियों पर कोई विचार नहीं किया जाएगा।

अनुसूची

ग्राम का नाम पीपलनेर, खसरा नंबर 6/1, 6/2/1, 6/2/2 क्षेत्रफल 162/2 वर्गमीटर, उस व्यक्ति विवरण जिनके पक्ष में नामांतरण विचाराधीन है (आवेदक का नाम, पिता/पति का नाम एवं पता) साहिल अख्तर/जाहिद अख्तर

आज दिनांक 9/07/2025 को मेरे हस्ताक्षर एवं न्यायालय की मुद्रा के अधीन जारी किया गया।

तहसीलदार नजूल संत हिरदाराम नगर (बैरागढ) वृत्त भोपाल

अर्चना चिटनिस ने 6.16 करोड़ की लगात से बनने वाले श्रमिक विश्रामगृह के निर्माण स्थल का किया निरीक्षण

समय जगत, बुरहानपुर। बुरहानपुर विधायक, पूर्व कैबिनेट मंत्री एवं भाजपा प्रदेश प्रवक्ता श्रीमती अर्चना चिटनिस (दीदी) ने जनप्रतिनिधियों, गणमान्य नागरिकों, श्रमिक संघ के पदाधिकारियों सहित अधिकारियों के साथ बुरहानपुर में बनने वाले श्रमिक विश्रामगृह के निर्माण स्थल का निरीक्षण किया। श्रीमती चिटनिस ने प्रस्तावित स्थल पर अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश देकर निर्माण कार्य अतिशीघ्र प्रारंभ करने हेतु निर्देशित किया। श्रीमती चिटनिस ने कहा कि मोहम्मदपुरा पंचायत रेणुका झील के समीप लगभग 6 करोड़ 16 लाख रूपए लागत का 100 बिस्तर की क्षमता वाला श्रमिक विश्रामगृह का निर्माण किया जाएगा। इसमें दो मंजिला भवन का निर्माण किया जाएगा। 25-25 श्रमिकों के ठहरने के लिए भूतल मंजिल एवं प्रथम मंजिल पर भी 2-2 हॉलों का निर्माण के साथ किचन, भोजन कक्ष, प्रशिक्षण कक्ष एवं स्वास्थ्य परीक्षण हेतु एक कक्ष का निर्माण किया जाएगा। विश्रामगृह में विभिन्न स्थानों से बुरहानपुर में कार्य करने के लिए श्रमिक एवं उनके परिवार के ठहरने की व्यवस्था रहेगी। श्रीमती चिटनिस ने कहा कि मध्यप्रदेश में श्रमिक विश्रामगृह का निर्माण सबसे पहले बुरहानपुर में प्रारंभ होने जा रहा है।

श्रीमती अर्चना चिटनिस ने कहा कि विभिन्न कार्यों से गांवों, शहरों, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र सहित विभिन्न स्थानों से ग्रामीणजन शहरों में पहुंचते है, उनके लिए रहने के लिए कोई उत्तम व्यवस्था नहीं मिल पाती। साथ ही श्रमिक जो किन्ही कार्यो से कुछ दिन शहर में रहना होता है। शहरों में ऐसी सुविधा कम होने से उन्हें परेशानियों का सामना करना पड़ता। श्रमिाकें की सुविधा के लिए श्रमिक विश्रामगृह का निर्माण कराया जा रहा है। जिससे श्रमिकों को एक अच्छी सुविधा मिल सके। विश्रामगृह में निःशुल्क और रियाती दर पर भोजन की उत्तम व्यवस्था जैसी सुविधाएं भी प्रदान की जाएगी।

निरीक्षण के दौरान जिला पंचायत अध्यक्ष गजानन महाजन, भाजपा जिलाध्यक्ष डॉ.मनोज माने, विजय शेवाड़े, विजय कार्ले, ज्योतिबा धड़स, चिंतामन महाजन, नरहरी दीक्षित, योगेश महाजन, संभाजीराव सगरे, आशीष शुक्ला, गौरव शुक्ला, रूद्रेश्वर एंडोले, किशोर कामठे, सुमित बोरले, रूपेश लिहनकर, अजहर-उल-हक, चिंटू राठौर, रवि काकड़े, दीपक महाजन, अक्षय मोरे, महेन्द्र चौधरी, प्रदीप रावल, लोक निर्माण विभाग भवन के अमित वास्कले, श्रम निरीक्षक कन्हैयालाल मोरे सहित अन्य जनप्रतिनिधि, गणमान्य नागरिक व अधिकारीगण मौजूद थे।

पत्रकार बलराम मिश्रा का निधन

समय जगत, इटारसी। शहर के वरिष्ठ एवं समर्पित पत्रकार बलराम मिश्रा का मंगलवार को भोपाल स्थित निजी अस्पताल में आकस्मिक निधन हो गया है। उनकी अंतिम यात्रा 8 जुलाई को शाम 5-30 बजे साई नगर न्यू यार्ड स्थित उनके निवास स्थान से निकाली गई। खेड़ा स्थित शांति धाम में उनका अंतिम संस्कार किया गया। बलराम मिश्रा की अंतिम यात्रा में गणमान्य नागरिक, पत्रकार एवं अनेक क्षेत्रों की हस्तियां शामिल हुई। जिन्होंने अपनी नम आंखों से बलराम मिश्रा को अंतिम विदाई दी।43 वर्षीय बलराम मिश्रा का अल्प समय से स्वास्थ्य खराब चल रहा था, जिनका उपचार भोपाल स्थित एक निजी चिकित्सालय में किया जा रहा था, जहां उन्होंने मंगलवार की दोपहर में अंतिम सांस ली। वरिष्ठ पत्रकार बलराम मिश्रा के निधन की खबर से पत्रकारिता जगत सहित संपूर्ण शहर में शोक की लहर छा गई। पत्रकार बलराम मिश्रा का निधन इटारसी के पत्रकार जगत का ऐसा नुकसान है जो कभी पूरा नहीं हो सकता।

मालूम हो कि दैनिक जागरण इटारसी एवं जियो हैथवे न्यूज के वरिष्ठ पत्रकार बलराम मिश्रा का यूं अचानक चले जाना इटारसी पत्रकारिता क्षेत्र के लिए गहरा आघात है। वे शांतचित्त, सरल स्वभाव और निष्कलंक छवि के पत्रकार थे। न कभी विवादों में पड़े, न दिखावे की दौड़ में शामिल हुए। उनका जीवन सादगी, स्पष्ट सोच और ईमानदारी का प्रतिरूप था। हर बीट पर उन्होंने निष्पक्षता और निष्ठा से कार्य कर शहर में एक मिसाल कायम की। वे न केवल कुशल पत्रकार, बल्कि सच्चे मित्र और सज्जन व्यक्ति थे। उनका असमय जाना पत्रकारिता जगत के लिए अपूरणीय क्षति है। मालूम हो कि बलराम मिश्रा ने पत्रकारिता में विशेष डिग्री हासिल की जिसके बाद वह लंबे समय तक जियो हैथवे न्यूज एवं दैनिक जागरण इटारसी में अपनी सेवाएं देते रहे।

संक्षिप्त समाचार

मंडल अध्यक्ष ने किया आशीर्वाद वेयरहाउस का शुभारंभ

समय जगत, खिरकिया। आशीर्वाद वेयर हाउस चौकड़ी एवं रामधनी वेयर हाउस धनवाडा में ग्रीष्मकालीन मूंग उपार्जन केंद्र का भाजपा मंडल अध्यक्ष संजय यादव द्वारा शुभारंभ किया गया। इस दौरान ज्ञानीराम महाजन,दीपक पटेल,आनंद गौर,बबलू राठौर,बलराम महाजन,भरत गौर ,मनीष जाट, गोकुल राजपूत, ओम पटेल एवं वेयर हाउस प्रबंधक रणजीत विश्नोई,महेश जाट और समिति प्रबंधक जितेंद विश्नोई ,गिरीश बछनिया आदि उपस्थित थे।

अभाविप ने मनाया राष्ट्रीय विद्यार्थी दिवस

सुनील मेघाया – समय जगत,बेटमा। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद द्वारा बेटमा में राष्ट्रीय विद्यार्थी दिवस का कार्यक्रम आयोजित किया गया। बेटमा नगर के सह मंत्री अभिषेक प्रजापत ने बताया अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद बेटमा नगर इकाई के द्वारा राष्ट्रीय विद्यार्थी दिवस के उपलक्ष में वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद 1949 से लगातार छात्रहित राष्ट्रीय हित के लिए कार्यरत है विद्यार्थी परिषद अपना स्थापना दिवस 9 जुलाई को मानता है जिसे विद्यार्थी परिषद राष्ट्रीय विद्यार्थी दिवस के रूप में मनाता है इसके नियमित बेटमा नगर के कार्यकर्ताओं द्वारा वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया एवं सप्ताह भर ऐसे ही कार्यक्रम का आयोजन किया जाना है वृक्षारोपण शासकीय महाविद्यालय बेटमा में किया गया। जिसमें मुख्य रूप से महाविद्यालय प्रभारी सुनीता मालवीय एवं सम वैचारिक संगठन के प्रमुख कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

ग्राम पड़ाली से काटकूट फाटे तक की सड़क चौड़ीकरण करने की मांग, रहवासियों ने सांसद पाटिल को सौंपा ज्ञापन

समय जगत, बड़वाह। आगामी सिंहस्थ पर्व के मद्देनजर इंदौर इच्छापुर हाईवे मार्ग स्थित ग्राम पड़ाली से काटकूट फाटे तक सड़क मार्ग का चौड़ीकरण करने की मांग को लेकर बड़वाह के गणमान्य नागरिकों ने सांसद ज्ञानेश्वर पाटिल को एक ज्ञापन दिया है। जिसके माध्यम से राजेंद्र रोकड़िया, जितेन्द्र सुराणा,संजय मुथा, कालू सोनी ने बताया कि बड़वाह से इंदौर जाने वाले मार्ग पर बसे ग्राम बागफल,मनिहार,उमरिया और ग्राम पड़ाली पर बने टोलटेक्स तक का सड़क मार्ग वर्तमान में काफी सकरा है। ऐसी स्थिति में छोटे ,बड़े वाहन प्रतिदिन इन ग्रामों से होकर निकलते हैं। लेकिन इस सड़क मार्ग का सकरा होना और वाहनों की तादात अधिक होने से आए दिन छोटी बड़ी दुर्घटना घटित होती है। जबकि औद्योगिक क्षेत्र में आने वाले बड़े भारी वाहनों को भी आवागमन में परेशानी का सामना करना पड़ता है। यदि इस पांच किमी के सड़क मार्ग का चौड़ीकरण किया जाए, तो आने वाले सिंहस्थ पर्व के साथ ही प्रतिदिन निकलने वाले वाहनों चालकों को भी सुविधा होगी। वही प्रतिदिन इंदौर इच्छापुर हाईवे पर लगने वाले जाम से भी लोगों को निजात मिलेगी। हालाकि इस मार्ग का चौड़ीकरण करना 2028 में होने वाले सिंहस्थ पर्व के मद्देनजर अतिआवश्यक है। सदस्यों ने सांसद ज्ञानेश्वर पाटिल से मांग की है कि केंद्रीय सड़क परिवहन विभाग से इस मार्ग पर 60 मीटर सड़क का चौड़ीकरण करवाया जाए। इस मौके पर भाजपा नेता रोमेश विजयवर्गीय,नगर मंडल अध्यक्ष अकिंत गुप्ता,संजय मुथा,पार्षद गणेश पटेल,निर्मल बंब,प्रवीण जैन,अनिल जैन अभय जैन सहित अन्य सदस्य उपस्थित थे।

महिला बाल विकास विभाग की लापरवाही से बच्चे हो रहे हैं परेशान

समय जगत बड़वाह। बड़वाह के ग्राम सिरलाय में प्रशाशन की बहुत बड़ी लापरवाही सामने नजर आने के बाद भी प्रशाशन अपनी कमी को दूर नहीं कर रहा ऐसा ही कुछ सिरलाय के बेड़ीपुरा आंगनवाड़ी क्रमांक 59 में देखने को मिला है जहा छोटे छोटे बच्चो को काफी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है बच्चो को कूड़े कचरे के साथ बैठना पड रहा बारिश में गीले हो रहे है इसकी वजह ये है जर जर भवन जहा पानी तो टपकता है लेकिन कब ढह जाये इसका अंदाजा नहीं क्योकि वहा बैठना बच्चो को भारी पड़ सकता आंगनवाड़ी कार्यकर्ता ने बताया की इसकी जानकारी हम हमारे अधिकारी को कई बार दे चुके है लेकिन चार पांच वर्षो से किसी ने यहाँ की शुध तक नहीं ली।

कलेक्टर ने कृषकों से भेंट कर परम्परागत के साथ शेडनेट कृषि पद्धति अपनाने के लिए किया प्रोत्साहित

समय जगत, झाबुआ। कलेक्टर नेहा मीना ने खेड़ी ग्राम में पूसा-16 अरहर के खेत में भ्रमण कर कृषक श्री मांगीलाल परमार से भेंट कर चर्चा की। कलेक्टर ने पूसा-16 अरहर के लाभ के सम्बन्ध में कृषक से विस्तृत चर्चा की गयी। उनके द्वारा बताया गया कि 9 बीघा जमीन उपलब्ध है जिसमें से कुछ क्षेत्र में पूसा-16 अरहर की खेती पिछले वर्ष की गयी थी। उन्होंने बताया कि उनके खेत में 110-120 दिन के भीतर फसल पक गयी। पूसा -16 अरहर का दाना अन्य अरहर के तुलना में बड़ा है। इस वर्ष भी उन्होंने इन्टरक्रोपिंग के माध्यम से पूसा-16 अरहर एवं मक्का की बोआई की है। पूसा 16 अरहर की फसल जल्द पक जाने से पिछले वर्ष चने की तीसरी फसल ली जा सकी थी।जिले में पिछले वर्ष पूसा 16 अरहर का रकबा 200 हेक्टेयर से अधिक था जिसे बढ़ा कर इस वर्ष 1000 हेक्टेयर के ऊपर किया जाएगा। किसान बंधु से भी चर्चा करने पर पाया गया कि फसल जल्द पक जाने से तीसरी फसल आसानी से ली जा सकती हैं। कलेक्टर नेहा मीना ने कहा कि आपके पास पर्याप्त जमीन होने के बाद भी परम्परागत कृषि ही ना करे। उसके साथ आमदनी को बढ़ाने के लिए शेडनेट पद्धति से कृषि करें। जिसके माध्यम से सब्जी, शिमला मिर्च, खीरा जैसी फसले ली जा सकती है। कृषक के द्वारा रुचि बताये जाने पर कलेक्टर ने सहायक संचालक उद्यानिकी विभाग श्री बी एस चौहान को शेडनेट के तहत प्रकरण बनाये जाने हेतु निर्देशित किया। साथ ही कलेक्टर द्वारा जे फार्म के सम्बन्ध में चर्चा की गयी एवं बताया कि जे फार्म पोर्टल पर रजिस्ट्रेशन कराया जाकर विभिन्न कृषि उपकरणों एवं यंत्रो को कस्टम हायरिंग सेण्टर से सुगमता से किराये पर प्राप्त किया जा सकता है।खाद के विषय में चर्चा करने पर कृषक द्वारा बताया कि उन्होंने सोसायटी से खाद प्राप्त की है एवं नैनो यूरिया का भी प्रयोग किया जा रहा है। इस दौरान जिले के उप संचालक कृषि एन.एस. रावत, सहायक संचालक उद्यानिकी श्री बी.एस. चौहान, अनुविभागीय कृषि अधिकारी एल.एस. चारेल, उप परियोजना संचालक आत्मा एम. एस. धार्वे, वरिष्ठ कृषि विकास अधिकारी श्री विजय मोरे और मैदानी अमला उपस्थित रहे।

विधायक नीना वर्मा ने ग्राम पंचायत देलमी को पानी का टैंकर किया प्रदाय

समय जगत, धार। धार विधानसभा क्षेत्र की भाजपा विधायक श्रीमती नीना वर्मा ने मंगलवार को ग्राम पंचायत देलमी तथा कलमखेडी कों पानी के टैंकर प्रदान किया। इस अवसर पर ग्रामीणों ने विधायक का आभार व्यक्त किया और कहा कि गाँव में नल-जल योजना से घरेलू जरूरतों के लिए पानी उपलब्ध तो है, लेकिन सामाजिक और धार्मिक कार्यक्रमों जैसे विवाह, उत्सव, सामूहिक भोज आदि के लिए बड़ी मात्रा में पानी की आवश्यकता होती है। ऐसे में टैंकर मिलने से गाँव वासियों की यह बड़ी समस्या दूर हो गई है। इस दौरान पूर्व केंद्रीय मंत्री विक्रम वर्मा, भाजपा नेता डॉ शरद विजयवर्गीय ज्ञानेंद्र त्रिपाठी भाजपा सेनापति नगर मण्डल अध्यक्ष विशाल निगम और कुशभाऊ ठाकरे नगर मंडल अध्यक्ष जयराज देवड़ा, भाजपा जिला मीडिया प्रभारी संजय शर्मा सह मीडिया प्रभारी दीपक सिंह रघुवंशी मंडल महामंत्री अमित शर्मा राकी आहूजा मंडल पदाधिकारी विजेंद्र सिंह ठाकुर केशव अग्रवाल समेत स्थानीय कार्यकर्ता, जनप्रतिनिधि और बड़ी संख्या में ग्रामीणजन मौजूद रहे। गांव के पुरुषो और महिलाओं ने विधायक वर्मा को धन्यवाद देते हुए कहा कि इस पहल से सामाजिक कार्यक्रमों के आयोजन में होने वाली पानी की समस्या का समाधान हो गया है, जिससे गाँव में खुशहाली का माहौल है।

गौशालाओं में पूरी क्षमता अनुसार रखे जाएं गौवंश : कलेक्टर

समय जगत, खिलचीपुर। कलेक्टर डॉ. गिरीश कुमार मिश्रा ने जिले में संचालित गौशालाओं में पूरी क्षमता अनुसार शतप्रतिशत गौवंश रखे जाने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने मैदानी पशु चिकित्सा अधिकारियों से कहा है कि वे गौशालाओं का नियमित निरीक्षण करें। साथ ही गौशालाओं में सिर्फ टैग लगे हुए गौवंश का ही सत्यापन किया जाए। बुधवार को जिला गौपालन एवं पशुधन संवर्द्धन समिति की बैठक में उन्होंने कहा कि सभी गौशालाओं में पशुओं के लिए चारा पानी जैसी बुनियादी सुविधाएं उपलब्ध रहें। बैठक में समिति के उपाध्यक्ष श्री कपिल शर्मा, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक श्री के.एस. बंजारे सहित समिति सदस्य उपस्थित थे। बैठक में कलेक्टर ने कहा कि राष्ट्रीय राजमार्गो पर निराश्रित गौवंश विचरण न करे। जहां निराश्रित गौवंश अधिक संख्या में एकत्रित होता है वहां संबंधित ग्राम पंचायत द्वारा मनरेगा से मजदूर तैनात कर गौवंश को सर्विस रोड पर या अन्य सुरक्षित स्थानो पर भेजा जाए। इन मजदूरों की वर्दी, लाठी, टार्च एवं व्हिसिल—इत्यादि भी उपलब्ध कराई जाए। पशुचिकित्सा विभाग अथवा संबंधित निकाय द्वारा इस कार्य में राष्ट्रीय राजमार्ग के पेट्रोलिंग वाहनों की भी मदद ली जाए। बैठक में समिति के उपाध्यक्ष श्री कपिल शर्मा ने कहा कि बीमार अथवा दुर्घटना ग्रस्त गौवंश की सूचना मिलने पर उनके उचित रेस्क्यू का कार्य शीघ्रता से किया जाए। उन्होंने सुझाव दिया कि बरसात के मौसम में कृषि उपजमंडियों में उपलब्ध खाली जगह पर निराश्रित गौवंश को आश्रय दिया जा सकता है। बैठक में उप संचालक पशु चिकित्सा डॉ. महिपाल सिंह कुशवाह ने जिले में गौशालाओं की स्थिति की जानकारी प्रस्तुत की।

जमीन खरीदने के बाद किसानों से गफलत का आरोप कृषकों ने संतोष कोठारी के खिलाफ की शिकायत

समय जगत, उज्जैन। जिले के उन्हेंल तहसील के ग्राम रूपाखेड़ी के किसानों ने उज्जैन के सन्तोष कोठारी पर आरोप लगाते हुए बताया कि सन्तोष कोठारी द्वारा उनकी जमीन खरीदी गई। किसानों से रजिस्ट्री करवाकर छल पूर्वक रुपये नही दिए गए। किसानों ने अपना दर्द बयां करते बताया की अब अनावेदक द्वारा झूठे आरोप लगाकर पुलिस केस बनाया जा रहा है। जिसमे कई किसान पीड़ित है। जो अब दर दर भटक रहे ,उन्हेंल व आसपास के किसान बड़ी संख्या में कोठारी पर आरोप लगाते हुए बताया कि हम काफी पीड़ित है। सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार ओर भी किसान सामने आ सकते है। वही ग्रामीण महिलाओं ने बताया कि हमने सन्तोष कोठारी से प्लाट खरीदे थे जिसके रुपये भी दे दिये, जिसकी रजिस्ट्री है फिर भी हमें कब्जा नही दिया गया।

वही चर्चा में अनिल पटेल ने बताया कि सन्तोष कोठारी के साथ मेरी पार्टनरी थी मेरे साथ भी धोखाधड़ी की है व जमीन पर अभी मेरा ही कब्जा था ,जिस पर सोयाबीन सही से नही उगी थी ,मेने कल खेत जोत दिया है। व वापस सोयाबीन बोयेंगे। मेरे पर लगाये गए आरोप सभी निराधार है। व मेरे पर दबाव बनाने के लिए झूठा प्रकरण दर्ज करवा दिया। साथ ही पदम पटेल ने बताया कि मेरे माध्यम से जमीन का सौदा हुआ था मेरे भी मजदूरी सन्तोष कोठारी व अनिल पटेल नही दी। व अब झूठे आरोप लगा रहे है। सूत्रों से मिली जानकारी के अनुआर सन्तोष कोठारी व अनिल पटेल की सालों पार्टनरशिप होने के कारण अनिल पटेल पर कोठारी पर पूरा विस्वास किया व करोड़ो का लेनदेन कोठारी के हस्ते किया जाने लगा। जब सन्तोष कोठारी को खोट आने लगी तो अनिल व अन्य किसान , ग्रामीणो के साथ धोधाखडी शुरू कर दी। धीरे धीरे जब ग्रामीणो को पता चला तो सामने आने लगे ,पूरे मामले की प्रशासन द्वारा जाँच की जाए तो बड़े जालसाजों का खुलासा हों सकता है।मामले में सन्तोष कोठारी से सम्पर्क करना चाहा तो सम्पर्क न हो पाया।

विद्यार्थी दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित किया गया कार्यक्रम

समय जगत, रायसेन। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के 77 वे स्थापना दिवस एवं राष्ट्रीय विद्यार्थी दिवस के उपलक्ष्य में अभाविप रायसेन ईकाई द्वारा एक एकत्रीकरण राष्ट्र के नाम कार्यक्रम का आयोजन किया गया इसमें मुख्य रूप से छात्र-छात्राओं को एकत्रित कर नागरिक कर्तव्यों की शपथ दिलाई गई एवं इसके बाद भारतीय मानचित्र पर मानव श्रृंखला बनाकर एकता का परिचय एवं संदेश संपूर्ण राष्ट्र के नाम दिया गया। इस कार्यक्रम में मुख्य रूप से अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के प्रांत सहमंत्री हिमांशु शर्मा जी उपस्थित रहे। हिमांशु शर्मा जी ने छात्रों को संबोधित करते हुए कहा कि विद्यार्थी परिषद छात्र जीवन में व्यक्तित्व निर्माण की नि :शुल्क पाठशाला है और युवाओं में नेतृत्व क्षमता विकसित करने का माध्यम है और आज विद्यार्थी परिषद ने जो मानव श्रृंखला का आयोजन किया है इसका एकमात्र उद्देश्य यही है कि भारत का छात्र संगठित है वह किसी भी प्रकार की जाति धर्म पंथ आदि में नहीं बटा हुआ है और जब भी देश की अखंडता एकता और संप्रभुता की बात आएगी तो इस देश का छात्र हमेशा प्रथम पंक्ति में एकत्रित खड़ा मिलेगा7 साथ ही उपस्थित सभी छात्र-छात्राओं एवं नागरिकों को नागरिक कर्तव्य की शपथ दिलाई गई। कार्यक्रम के दौरान विभाग संयोजक अश्विनी पटेल,प्रांत कार्यकारिणी सदस्य पंकज तोमर, नगर मंत्री विकास चौहान, वैशाली ठाकुर, दीपक तिवारी, अभिषेक चंदेल, अमर चौहान, आदर्श राजपूत, सौरभ कलावत, अजय विश्वकर्मा, एवं विद्यार्थी परिषद के सभी कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

जनसुनवाई में 85 आवेदनों पर हुई सुनवाई

रतलाम। कलेक्ट्रेट कार्यालय में गत दिवस जनसुनवाई आयोजित की गई। जनसुनवाई में एडीएम डॉ शालिनी श्रीवास्तव एवं जिला पंचायत सीईओ श्री श्रृंगार श्रीवास्तव ने आवेदकों से आवेदन प्राप्त किये। जनसुनवाई में 85 आवेदन प्राप्त हुए। निराकरण योग्य आवेदनों का मौके पर ही उपस्थित विभागीय अधिकारियों से निराकरण करवाया गया एवं शेष आवेदनों का समय सीमा में निराकरण करने के लिए संबंधित विभाग प्रमुखों को निर्देशित किया गया।

जनसुनवाई में आवेदक मथुरालाल पिता नागुराम निवासी बड़ायला चौरासी तहसील पिपलौदा ने आवेदन दिया कि उसकी कृषि भूमि ग्राम खोखरा तहसील जावरा में स्थित है जो नवनिर्मित 8 लेन से लगी हुई है। नवनिर्मित 8 लेन मे केबल डाली जाने के दौरान नालियां मिट्टी से भर चुकी है और पानी की निकासी पुरी तरह से बंद होने कारण खेत बारिश के पानी से पूरी तरह भर जाता है, जिससे सोयाबीन की फसल नष्ट हो जाती है। पिछले साल भी सोयाबीन की फसल पुरी तरह से नष्ट हो चुकी थी। वर्तमान में बारिश का मौसम शुरू हो चुका है, नवनिर्मित 8 लेन की नालियों की सफाई करवाई जाकर भूमि एवं फसल को नुकसान से बचाने का आवेदन दिया, कार्यवाही हेतु संबंधित अधिकारी को निर्देशित किया। आवदेक बापुलाल पिता किशनलाल शर्मा निवासी ग्राम गुल बालोद तहसील आलोट ने आवेदन देते हुए बताया कि मेरे द्वारा किसान सम्मान निधि योजना मे लाभ पाने के लिए आवेदन संबंधित विभाग में प्रस्तुत किया गया था, जिस पर पटवारी द्वारा योजना का पात्र होने का प्रमाण पत्र भी जारी किया गया था, किन्तु आज तक लाभ प्राप्त नहीं हुआ है। पंचायत के सरपंच सचिव एवं तहसील कार्यालय में आवेदन देकर जानकारी चाही गई किन्तु नियमित रूप से टालमटोल कर जानकारी नही दे रहे है, कार्यवाही हेतु तहसीलदार आलोट को निर्देशित किया गया।

जनसुनवाई में आवेदक उमेश पिता लक्ष्मीकुमार जोशी निवासी ग्राम बंजली जिला रतलाम ने आवेदन देते हुए बताया कि पिता लक्ष्मीकुमार जोशी निवासी वार्ड नं. 9 त्रिलोक नगर में मकान है जिसके पिछे नाला सर्वे नं. 277 बहता है। नाले पर अतिक्रमणकर्ताओ ने अतिक्रमण कर पक्के ओटले व बाउण्ड्रीवाल बना ली है जिस कारण घर में बारिश का पानी जमा हो रहा है, 25 मई को सीएम हेल्पलाईन शिकायत की गई थी जिस पर आज तक नगर पालिका निगम द्वारा कार्यवाही जल्द करने का आश्वासन दिया जा रहा है वर्तमान में शिकायत एल-4 लेवल पर है, कार्यवाही हेतु नगर निगम अधिकारी एवं ईई पीडब्ल्यूडी को निर्देशित किया।

जनसुनवाई में ग्रामवासी पिपलीपाडा पंचायत सांसर विकासखण्ड सैलाना ने आवेदन दिया कि गांव में अभी तक कोई आंगनवाड़ी केन्द्र संचालित नही है। गांव में लगभग 500 की जनसंख्या है, बाल शिशुओं की संख्या लगभग 50 है, गर्भवती महिलाओं एवं धात्री माताओं को उचित पोषण स्वास्थ्य सेवाएं तथा पूर्व शैक्षणिक सुविधाएं प्राप्त नही हो रही है। गांव में आंगनवाड़ी केन्द्र की आवश्यकता है। कार्यवाही हेतु महिला एवं बाल विकास अधिकारी को निर्देशित किया।

महापौर की अध्यक्षता में मेयर इन काउंसिल की बैठक संपन्न

समय जगत, कटनी। नगर पालिक निगम कटनी में महापौर श्रीमती प्रीति संजीव सूरी की अध्यक्षता में मेयर इन काउंसिल बैठक का आयोजन किया गया। बैठक के दौरान मार्गो के नामकरण सहित नगर निगम के सुचारू कार्य संपादन हेतु कर्मचारियों की स्वीकृति, सहित अन्य प्रस्तावों पर विचार विमर्श किया जाकर निर्णय लिया गया। बैठक में मेयर इन काउंसिल सदस्य डॉ रमेश सोनी, सुरेन्द्र गुप्ता, सुभाष शिब्बू साहू, जयनारायण निषाद, गोविंद चावला, श्रीमती सुमन राजू माखीजा, तुलसा गुलाब बेन, बीना संजू बैनर्जी सहित निगमायुक्त नीलेश दुबे एवं अन्य विभागीय अधिकारियों की उपस्थिति रही। बैठक के दौरान गणेश प्रसाद मसुरहा वार्ड के दो मार्गो के नामकरण किये जाने संबंधी प्रस्ताव पर विचार विमर्श के दौरान महापौर द्वारा नामकरण के लंबित अन्य प्रकरणों की जानकारी चाही गई। विभाग द्वारा बताया गया कि दो वार्डो के प्रस्ताव नामकरण हेतु विचाराधीन है जिसपर महापौर एवं सदस्यों द्वारा पूर्ण जानकारी

के साथ आगामी बैठक में प्रस्ताव रखे जानें हेतु कहा गया। बैठक में निगम कार्यालय की सुचारू कार्य व्यवस्था को दृष्टिगत रखते हुए स्वास्थ्य विभाग एवं जल प्रदाय शाखा में कार्यरत श्रमिकों की स्वीकृति सर्वसम्मति से प्रदान की गई। जबकि ए रविन्द्र राव उच्चतर माध्यमिक शाला में शिक्षकों के प्रस्ताव पर विचारोपरांत निकाय की तीनों शालाओं में पूर्वानुसार दो माह के लिए स्वीकृति प्रदान की गई। वहीं दिवंगत कर्मचारी श्री गुरूदत्त प्यासी वाहन शाखा के स्वत्वों के भुगतान संबंधी प्रस्ताव पर विधिक राय लेकर आगामी कार्यवाही करने हेतु सर्व सम्मति से स्वीकृति प्रदान की गई। बैठक के दौरान अन्य विषयों के रूप में विद्युत विभाग के 9 श्रमिकों की स्वीकृति, प्रधानमंत्री आवास योजना अंतर्गत एएचपी घटक के द्वितीय चरण में प्रेम नगर खिरहनी के पुनरीक्षित प्राक्कलन की स्वीकृति के संबंध में एवं प्रधानमंत्री आवास योजना शहरी 2.0 के अंतर्गत बीएलसी घटक के 304 हितग्राहियों की सूची का अनुमोदन तथा राम मनोहर लोहिया वार्ड स्थित अहमद नगर में निर्माण कार्य की अल्पकालीन निविदा आमंत्रित किये जाने की स्वीकृति प्रदान की गई।

बैठक के दौरान प्रभारी कार्यपालन यंत्री सुधीर मिश्रा, राजस्व अधिकारी जागेश्वर पाठक, सहायक यंत्री सुनील सिंह, अनिल जायसवाल, आदेश जैन उपयंत्री मृदुल श्रीवास्तव, मोना करेरा, अश्विनी पांडेय, स्वास्थ्य अधिकारी संजय सोनी, कार्यालय अधीक्षक नागेन्द्र पटेल, निगम सचिव पारसनाथ प्रजापति, गिरिराज पाठक एवं ए.रवीन्द्र राव उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के प्राचार्य मनोज चैधरी सहित अन्य विभागीय अधिकारियों की मौजूदगी रही।

केंद्रीय मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह ने दी विज्ञान केंद्र की सौगात

छात्रों की सोच को मिलेगा पंख, विज्ञान केंद्र देगा धौलपुर की वैज्ञानिक चेतना को नया आगाजः केंद्रीय मंत्री

समय जगत, धौलपुर। धौलपुर की ऐतिहासिक और प्राकृतिक विविधताओं से समृद्ध धरती पर विज्ञान और नवाचार की एक नई दिशा जुड़ी। भारत सरकार के विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय, पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय, प्रधानमंत्री कार्यालय, कार्मिक, लोक शिकायत और पेंशन मंत्रालय, परमाणु ऊर्जा विभाग एवं अंतरिक्ष विभाग के केंद्रीय राज्य मंत्री स्वतंत्र प्रभार डॉ. जितेंद्र सिंह अपने एक दिवसीय दौरे पर धौलपुर पहुंचे। इस दौरान उन्होंने सूचना एवं जनसंपर्क कार्यालय परिसर में स्थित सूचना केंद्र में राष्ट्रीय प्रतिरक्षा विज्ञान संस्थान के सहयोग से स्थापित धौलपुर विज्ञान केंद्र का उद्घाटन किया। उद्घाटन के पश्चात केंद्रीय मंत्री ने विज्ञान केंद्र का अवलोकन किया

तथा वहाँ उपस्थित विद्यार्थियों से संवाद किया। उन्होंने बच्चों द्वारा प्रस्तुत विभिन्न विज्ञान प्रयोगों को न केवल सराहा बल्कि विज्ञान के सिद्धांतों को सरल भाषा में समझने और उन्हें दैनिक जीवन से जोड़ने की प्रेरणा दी। उन्होंने कहा कि यह केंद्र विद्यार्थियों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करने और प्रयोगात्मक शिक्षा को बढ़ावा देने में एक मील का पत्थर साबित होगा। इस अवसर पर उन्होंने कलेक्ट्रेट परिसर स्थित पार्क में एक पेड़ माँ के नाम अभियान के अंतर्गत पौधारोपण कर पर्यावरण संरक्षण की दिशा में भी जागरूकता का संदेश दिया। बाद में टाउन हॉल में आयोजित कार्यक्रम में केंद्रीय मंत्री ने अपने संबोधन में कहा कि यह नवाचार और विज्ञान का युग है। भारत सरकार द्वारा आकांक्षी जिलों में विज्ञान केंद्रों की स्थापना उसी सोच का विस्तार है।

संक्षिप्त समाचार

रोजगार सहायक से परेशान महिला सरपंच ने कलेक्टर से कार्यवाही की लगाई गुहार

समय जगत, पन्ना। जिले के शाहनगर जनपद पंचायत अंतर्गत ग्राम पंचायत पारसी की सरपंच श्रीमती रहीश रानी यादव ने कलेक्टर जनसुनवाई में आवेदन देते हुए बताया कि ग्राम पंचायत में रोजगार सहायक दीपक मिश्रा द्वारा मनमाने ढंग से पंचायत का संचालन किया जा रहा है तथा मास्टर एवं भुगतान भी अपने हिसाब से किए जाते हैं कोई भी कार्य करने के पहले सरपंच को नहीं बताया जाता है साथ ही ग्राम पंचायत के लोगों के केवाईसी नहीं की जाती है तथा गल्ला पर्ची देने में भी परेशान किया जाता है ग्राम पंचायत में हुए निर्माण कार्यों जैसे खेत तालाब फसल सुरक्षा दीवार कूप निर्माण आदि भी मन माने ढंग से कर दिए गए हैं मजदूरों की मजदूरी तक नहीं दी गई है जिससे मजदूर हमको परेशान करते हैं सरपंच श्रीमती यादव ने बताया कि दीपक मिश्रा के पास ग्राम पंचायत रगोली का भी प्रभार है इसलिए वह दोनों पंचायत में मनमाने ढंग से कार्य करते हैं रोजगार सहायक के खिलाफ कार्रवाई करने तथा अन्य ग्राम पंचायत में स्थानांतरण करने की मांग की है।

दुनिया की सबसे बुजुर्ग हथिनी वात्सल्य की मौत

समय जगत, पन्ना। पन्ना टाइगर रिजर्व में दुनिया की सबसे बुजुर्ग हथिनी वात्सल्य की मौत हो गई है। जानकारी के अनुसार बताया जा रहा है कि उक्त हथिनी की उम्र बहुत हो गई थी, जिसकी सही उम्र अभी तक विभाग एवं अन्य लोगों को पता नहीं है पार्क प्रबंधन द्वारा बताया गया कि वात्सल्य को आज दिनांक 8 जुलाई को घूमने के लिए खेरैया नाला की ओर ले जाया गया था जहां पर उसके नाखून में चोट लग गई तथा वह वहीं पर बैठ गई। इसके बाद वह नहीं उठी एवं उसकी मृत्यु हो गई हाथियों के दल में दादी एवं नानी के नाम से जाना जाता था 100 वर्ष से अधिक उम्र होने के कारण उसे आंखों में दिखना भी बंद हो गया था, जिसके कारण वत्सला से सर्चिंग आदि नहीं की जाती थी तथा उसे हिनौता कैंप में ही रखा जाता था वत्सला की मृत्यु से टाइगर रिजर्व में शोक का माहौल भी कायम है क्योंकि वात्सल्य सबसे उम्रदराज हथिनी के रूप में जानी जाती थी।

तीन दिवसीय प्रसाद वितरण का कार्यक्रम श्री गोवर्धन धाम में हो रहा है आयोजित

समय जगत, खुरई। प्रतिवर्ष अनुसार इस 17 बे वर्ष भी बृज की पावन धरा गिरिराज जी की तलहटी में श्रीधाम गोवर्धन जी में श्री गुरु पूर्णिमा महा महोत्सव के अवसर पर श्री ब्रज वृंदावन धाम सेवा मंडल खुरई के द्वारा गिरिराज जी महाराज के श्री चरणों में पधारे प्रभू के भक्तों को भंडारा प्रसादी वितरण कर पुण्य अर्जित किया गया यह प्रसादी वितरण दिनांक 8,9,10, जुलाई तक किया जा रहा है इसमें सभी भक्त जन सादर आमंत्रित हैं।

निगमायुक्त ने राजस्व वसूली की समीक्षा कर वसूली अमले को दी सख्त हिदायत

निगम के बकाया करों की शत-प्रतिशत वसूली करने के दिये निर्देश

समय जगत, कटनी। नगर निगम आयुक्त नीलेश दुबे ने नगर निगम के राजस्व विभाग द्वारा किये जा रहे वसूली कार्य की समीक्षा कर निर्धारित लक्ष्य के अनुरूप बकाया करों की शत-प्रतिशत वसूली कराएं जानें तथा कर संग्रहण के कार्य में किसी भी प्रकार की लापरवाही नहीं बरते जाने की हिदायत दी। निगमायुक्त नें कहा कि बकाया करों की राशि जमा न करने वालों की सूची तैयार करें ताकि उनके नाम समाचार पत्रों, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया एवं स्मार्ट सिटी के डिस्प्ले बोर्ड पर सार्वजनिक करने की कार्रवाई की जा सके। समीक्षा बैठक के दौरान राजस्व अधिकारी जागेश्वर प्रसाद पाठक, सहायक राजस्व अधिकारी सागर नायक सहित राजस्व निरीक्षक, राजस्व उपनिरीक्षक, वार्ड वसूली कर्ता कर्मचारियों की उपस्थिति रही। निगमायुक्त श्री दुबे द्वारा वार्डवार वसूली कार्य की समीक्षा की जाकर निम्न वसूली वाले कर्मचारियों वसूली हेतु प्लानिंग तैयार कर रोजाना वार्ड में भ्रमण करते हुए नागरिकों से संपर्क कर वसूली कार्य में गति लाने के निर्देश दिए

गए। बैठक के दौरान निगमायुक्त श्री दुबे नें बकाया जलकर एवं संपत्ति कर की वसूली हेतु भविष्य में की जाने वाली प्लानिंग की जानकारी भी प्रदान की गई।

नवीन निर्माण पर करें करारोपण की कार्यवाही: निगमायुक्त श्री दुबे नें राजस्व अमले को भवन स्वामियों द्वारा जमा की गई स्वकर विवरणी की जांच करने के साथ ही वार्डो के ऐसे भवन जिनमें नवीन अतिरिक्त निर्माण कार्य किया जा चुका हो और उनकी जानकारी सेल्फ असिस्मेंट में नहीं दर्शाई गई हो की जांच करते हुए नवीन अतिरिक्त निर्मित क्षेत्र की डिमांड जारी करते हुए नवीन परिसर का अतिरिक्त संपत्ति कर भवन स्वामी से वसूल करने हेतु निर्देशित किया। निगमायुक्त श्री दुबे ने राजस्व अमले को वार्ड में चल रहे नवीन निर्माण कार्य की सूचना नगर निगम के लोक निर्माण शाखा एवं भवन अनुज्ञा शाखा को देने हेतु प्रथम सूचना अधिकारी के दायित्वों का अक्षरशः पालन करने के निर्देश राजस्व विभाग के कर्मचारियों को दिए गए।उन्होंने कहा कि निगम के अंतर्गत आने वाले समस्त कॉलोनियों, निजी संस्थानों, और ठेकेदारों को भी अपना बकाया टैक्स जमा करना अनिवार्य होगा। यदि बकाया कर की राशि जमा नहीं की जाती है तो संबंधित के विरुद्ध नियमानुसार कार्रवाई की जाएगी।

वसूली में लापरवाही पर होगी कार्यवाही: निगमायुक्त श्री दुबे नें जानकारी देते हुए बताया कि विगत वर्ष की तुलना में इस वर्ष 12 प्रतिशत अधिक वूसली का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। जिसे प्राप्त करनें हेतु आप सभी अभी से वसूली कार्य को प्रथमिकता देते हुए कार्य प्रारंभ कर दें ताकि वर्ष समाप्ति के समय आपको वसूली कार्य में दिक्कतों का सामना न करना पड़े।

भारतीय स्टेट बैंक की विशेष प्री-लिटिगेशन लोक अदालत का होगा आयोजन

सचिव ने स्टेट बैंक के अधिकारियों के साथ की बैठक

समय जगत, धौलपुर। अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकरण जिला एवं सेशन न्यायाधीश के निर्देशन में 26 जुलाई को आयोजित होने वाली विशेष प्री-लिटिगेशन लोक अदालत के सफल आयोजन हेतु रेखा यादव सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण अपर जिला एवं सेशन न्यायाधीश की अध्यक्षता में एडीआर परिसर में समस्त स्टेट बैंक के अधिकारियों के साथ बैठक का आयोजन किया गया। उपस्थित स्टेट बैंक के अधिकारियों से विशेष प्री-लिटिगेशन लोक अदालत के संबंध में विभिन्न बिन्दुओं पर चर्चा कर विचार विमर्श किया गया तथा उपस्थित स्टेट बैंक के अधिकारियों को 26 जुलाई को आयोजित होने वाली विशेष प्री-लिटिगेशन लोक अदालत में प्री-काउन्सिलिंग, नोटिसों की तामील, राष्ट्रीय लोक अदालत में अधिक से अधिक प्रकरणों के चिन्हित किये जाने, प्रचार-प्रसार, तथा अधिक से अधिक प्रकरण चिन्हित कर निस्तारण के लिए प्रेरित किया गया तथा अन्य आवश्यक बिन्दुओं पर भी विचार-विमर्श किया गया। बैठक में मुख्यालय के स्टेट बैंक के अधिकारी मौजूद रहे।

पत्रकार संघ ने दी दिवंगत पत्रकारों को श्रद्धांजलि

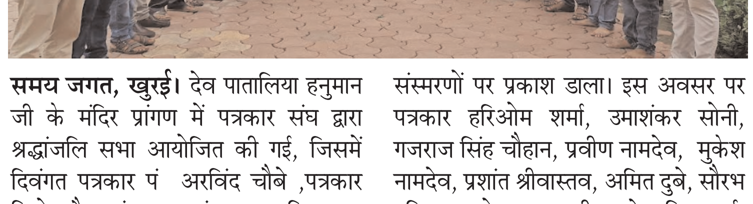

समय जगत, खुरई। देव पातालिया हनुमान जी के मंदिर प्रांगण में पत्रकार संघ द्वारा श्रद्धांजलि सभा आयोजित की गई, जिसमें दिवंगत पत्रकार पं अरविंद चौबे ,पत्रकार विनोद जैन एवं पत्रकार संघ अध्यक्ष शिवशरण (बंटू) पाराशर की माता श्री को उपस्थित पत्रकारों ने पुष्पांजलि अर्पित कर एवं मौन रखकर श्रद्धांजलि अर्पित की। श्रद्धांजलि सभा में उपस्थित वरिष्ठ पत्रकार देशराज सिंह यादव एवं पंडित प्रेम नारायण तिवारी ने दिवंगत पत्रकारों के जीवन एवं पत्रकारिता से जुड़ी संस्मरणों पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर पत्रकार हरिओम शर्मा, उमाशंकर सोनी, गजराज सिंह चौहान, प्रवीण नामदेव, मुकेश नामदेव, प्रशांत श्रीवास्तव, अमित दुबे, सौरभ परिहार, मनोज वाधवानी, बृजेश विश्वकर्मा, लखन कुर्मी राहुल असाठी हिमांशु बजाज, धर्मेंद्र सिंह दांगी, प्रदीप आठिया,मयंक जैन, नीरज ताम्रकार उपस्थित रहे ।श्रद्धांजलि सभा का संचालन पत्रकार संघ अध्यक्ष शिवशरण (बंटू) पाराशर ने कर पत्रकार द्वय के असमय निधन पर शोक संवेदनाएं व्यक्त की।

अनुविभावीय अधिकारी के निर्देश पर क्लीनिक को किया गया सील

समय जगत, खुरई। क्षेत्र में अवैध रूप से संचालित क्लिनिक साथ ही ठोस अपशिष्ट प्रबंधन अधिनियम 2016 के अंतर्गत वायो मेडिकल वेस्ट को उचित तरीके से निपटान ना करने बायो मेडिकल वेस्ट को जिनमें उपयोग की हुई सीरेंज,दवाईयां, मास्क,खून से सनी हुई पट्टियां एवं अन्य कई प्रकार का हानिकारक बायो मेडिकल वेस्ट बाहर खुले में पाया फैला हुआ पाया गया जो कि जन समुदाय के लिए हानिकारक प्रभाव डाल सकता है। साथ ही कई प्रकार के संक्रमित रोगों,संक्रमण आदि को फैलाने का कारक बन सकता है, ऐसे क्लिनिक संस्थानों पर सख्त कार्यवाही के निर्देश अनुविभागीय अधिकारी मनोज चौरसिया द्वारा प्राप्त हुए थे जिसके परिपालन में बीएमओ रामजी ठाकुर,मुख्य नगर पालिका अधिकारी राजेश मेहतेले,शहरी थाना से पुलिस बल के साथ संयुक्त रूप से नगर के मध्य चंद्रशेखर आज़ाद मार्केट में संचालित सिटी यूनानी क्लिनिक पर कार्यवाही करते हुए वायो मेडिकल वेस्ट को जब्त करते हुए

क्लिनिक को सील किया गया,मुख्य चिकित्सा अधिकारी एवं उनकी टीम,एवं मुख्य नगर पालिका अधिकारी के साथ नगर पालिका परिषद खुरई की टीम,पुलिस बल,एवं स्थानीय नागरिकों की मौजूदगी में पंचनामा तैयार करते हुए कार्यवाही सुनिश्चित हुई है।जानकारी देते हुए बीएमओ खुरई श्री राम ठाकुर ने बताया कि उक्त क्लिनिक द्वारा वायो मेडिकल वेस्ट को खुले में फेंका जा रहा था,साथ ही अवैध रूप से क्लिनिक का संचालन किया जा रहा था, कलेक्टर द्वारा भी पूर्व में ऐसे क्लीनिकों पर कार्यवाही के निर्देश प्राप्त हुए थे एवं विगत महीने कई क्लीनिकों पर कार्यवाही भी की गई थी सिटी यूनानी क्लिनिक द्वारा यह कृत्य जन समुदाय पर दुष्प्रभाव,संक्रमण एवं रोगों को फैलाने का कारक बन सकता था,उक्त विषय की गंभीरता को देखते हुए अनुविभावीय अधिकारी खुरई के निर्देश पर संयुक्त रूप से कार्यवाही करते हुए क्लिनिक को सील किया गया है।

पथरिया के विकास की खुली पोल, दो फुट गहरे पानी से निकलकर जा रहे लोग

समय जगत, पथरिया। विधानसभा पथरिया में अब तक जितने भी जन प्रतिनिधि बने, सब अपने-अपने विकास का डंका पीटते हैं। परंतु जमीनी स्तर पर उनका विकास शून्य दिखाई देता है। ऐसा ही एक मामला पथरिया नगर के वार्ड क्रमांक 9 का है। जहां बरसात के कारण यातायात व्यवस्था ठप पड़ी हुई है। जिससे स्कूल जाने वाले बच्चे लगभग 5 दिनों से घरों से बाहर नहीं निकल पा रहे तथा उनकी स्कूली पढ़ाई रुकी हुई है। दअरसल हम बात कर रहे है सिद्ध पहाड़ी के पास वाले इलाके की जहां लगभग 200 परिवार निवासरत है तथा इनका एक ही सहारा गुजर बसर करने का है तथा कुछ लोग कृषि पर आश्रित है तो कुछ छोटे किसान खेतों में लगी सब्जियों पर निर्भर हैं जो कि रोज कमाते खाते है। हाल ही में बरसात के कारण इन समस्त परिवारों को सड़क के अभाव में काफी समस्या का सामना करना पड़ता है। यहां निवासरत

लोगों का जनप्रतिनिधियों पर आरोप है कि लगभग 30 वर्षों से लगातार वह यहां आते हैं और चुनाव के पहले पक्की सड़क के बड़े-बड़े वादे करते है परंतु जैसे ही चुनाव खत्म होता है। उसके पश्चात यहां का कभी रुख तक नहीं करते। वार्ड वासियों ने कहा है कि चुनाव से पहले वर्तमान राज्यमंत्री लखन पटेल भी यहां आए और उनके पहले की पूर्व विधायक रामबाई भी यहां आई और इनके अतिरिक्त और भी जनप्रतिनिधि आए परंतु सिर्फ पक्की सड़क का आश्वाशन देकर चले गए। जैसे ही चुनाव समाप्त होता हैं हम लोगों की तरफ देखते तक नहीं। इसके उपरांत वार्ड पार्षद सहित पथरिया नगर परिषद वर्तमान अध्यक्ष सुंदर लाल विश्वकर्मा पर भी आरोप लगाए कि चुनाव के बाद वह एक भी बार हमारी स्थिति देखने नहीं आए कि हम सब बिना सड़क के और बरसात के मौसम में कैसे गुजर बसर कर रहे है।

इस संबंध में वर्तमान वार्ड पार्षद सत्या चौरसिया को जब फोन लगाया तो उनके पति संदीप चौरसिया द्वारा उठाया गया। उन्होंने कहा कि नगर परिषद संबंधी संपूर्ण कार्य उनकी पत्नी की जगह में देखता हूं और पक्की सड़क की गुहार वर्तमान मंत्री से व पूर्व संसद प्रहलाद पटेल तक लगा चुका हूं परंतु कोई सुनवाई नहीं हुई।

इनका कहना है

मैं अभी हटा में हूं और मुझे आपके माध्यम से इस विषय का पता चला है कि लोग वहां इतने परेशान हैं। मैं नगर परिषद के कर्मचारी से हालात का जायजा लेती हूं तथा जो मदद बन पड़ेगी करवाती हूं।

ऋतु पुरोहित, मुख्य नगर परिषद अधिकारी, पथरिया

गुरु मंत्र आवश्यक है इसलिए ध्यान पूर्वक करेंगुरु का चुनाव : शास्त्री

समय जगत, दमोह। श्रीमद् भागवत कथा के छठवें दिवस में कथा व्यास रवि शास्त्री ने बताया कि गुरु मंत्र आवश्यक है। गुरु मंत्र के बिना कोई भी पूजन अनुष्ठान पूर्ण नहीं माना जाता इसलिए हमें आवश्यक रूप से गुरु मंत्र लेना चाहिए एवं गुरु बनाते समय गुरु का चुनाव ध्यान पूर्वक करना चाहिए। एक बार नारद जी भगवान विष्णु के पास गए और उन्हें दंडवत प्रणाम कर एक आसन पर बैठ गये जब नारद जी चलने को उठे तो भगवान ने उस स्थान को गंगाजल से पवित्र किया तब माता लक्ष्मी जी ने पूछा ऐसा क्यों इधर नारद जी भी असमंजस में हो गए तब भगवान ने कहा क्योंकि नारद जी का कोई गुरु नहीं है, बिना गुरु मोक्ष एवं ज्ञान नहीं है। अतः वह स्थल अपवित्र हो गया था, अब नारद जी से माता ने कहा आप किसी योग्य को गुरु बना लें, नारद जी स्वयं अपने आप को बहुत बड़ा

ज्ञानी समझते थे सो ब्रह्मांड में उन्हे कोई गुरु ही नहीं मिला, अब भगवान ने उनकी मदद के लिए एक ब्राह्मण को उन्हे गुरु बनाने को कहा नारद जी ने अनिच्छा से गुरु तो बना लिया पर गुरु माना नहीं उल्टे उन्हे हैय दृष्टि से देखा इससे भगवान कुपित हो गए और नारद जी को श्राप दे दिया नारद जी ने भगवान विष्णु के चरणों में दण्डवत प्रणाम कर उनसे क्षमा याचना की। भगवान ने श्रापमोचन के उपाय में कहा नारद ब्रह्मांड के 84 हजार योनियों के पास होकर आवे तभी श्राप से मुक्ति मिलेगी, यह भी अति कठिन था तो माता लक्ष्मी की सलाह पर नारद जी अपने गुरु उन ब्राह्मण से सलाह लेने गये तो गुरु ने कहा यह तो बहुत आसान है। भगवान से कहिए 84 हजार प्राणियों के चित्र बना दे ताकि आप पहचान तो सके नारद जी ने ऐसा ही किया तो भगवान ने चित्र बना कर दे दिया।

नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

डॉ. मोहन यादव, मुख्यमंत्री

शिक्षा के प्रकाश से जीवन को आलोकित करने वाले
गुरुओं का आभार व्यक्त करती मध्यप्रदेश सरकार की अनूठी पहल

गुरु पूर्णिमा महोत्सव

कमला नेहरू सांदीपनि कन्या विद्यालय, भोपाल का लोकार्पण

एवं

विद्यार्थियों को नि:शुल्क साइकिल वितरण शुभारंभ कार्यक्रम

मुख्य अतिथि

डॉ. मोहन यादव

मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश

10 जुलाई, 2025 । दोपहर 12:30 बजे
कमला नेहरू सांदीपनि कन्या विद्यालय, भोपाल

तपोधरा मध्यप्रदेश ऋषि परंपरा की जीवंत धरोहर है। भारतीय संस्कृति में गुरु को ईश्वर से भी बड़ा माना गया है। हमारा प्रदेश **महर्षि सांदीपनि, जगतगुरु श्रीकृष्ण एवं अनेक कालजयी गुरुओं जैसे महर्षि वेद व्यास, अत्रि, अगस्त्य, च्यवन ऋषि, परशुराम, विश्वामित्र, दत्तात्रेय, ऋषि जाबाली, गालव ऋषि, पतंजलि, महावीर स्वामी, आदिशंकराचार्य, मत्स्येन्द्रनाथ, भर्तृहरि, चार्वाक, भरतमुनि, श्री वल्लभाचार्य, स्वामी हरिदास, गुरु नानकदेव, संत सिंगाजी, सेन भगत, संत रविदास, स्वामी जदरूप** आदि की तपोभूमि और कर्मस्थली रही है। उनके तप, त्याग और ज्ञान से हमारे देश-प्रदेश ने सदैव ही दिशा पाई है। गुरु पूर्णिमा के पावन पर्व पर हम उन सभी पूज्य गुरुओं का सादर वंदन करते हैं। सभी प्रदेशवासियों को गुरु पूर्णिमा की हार्दिक मंगलकामनाएं।

- डॉ. मोहन यादव, मुख्यमंत्री

सीधा प्रसारण webcast.gov.in/mp/cmevents @Cmmadhyapradesh @jansampark.madhyapradesh @Cmmadhyapradesh @jansamparkMP JansamparkMP

D-11061/25

मध्यप्रदेश जनसम्पर्क द्वारा जारी

आकल्पन : म.प्र. माध्यम/2025

स्वत्वाधिकारी, समय जगत मीडिया प्रा.लि. के लिए प्रकाशक, मुद्रक अशोक त्रिपाठी द्वारा श्री बालाजी प्रिंटर्स प्लॉट नं. 21, सेक्टर-एच, गोविंदपुरा इंडस्ट्रियल एरिया, भोपाल 462011 से मुद्रित कर जी-1 गोयल निकेत अपार्टमेंट प्रेस कॉम्पलेक्स जोन-1 एमपी नगर भोपाल म.प्र. से प्रकाशित। पिन नं. 462011, संपादक **अभिनव त्रिपाठी।**
RNI-MPHIN/2004/13180 (समाचार चयन के लिए पीआरबी एक्ट के तहत जिम्मेदार) सभी प्रकार के विवादों के लिए न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा। **फोन :** 0755-4700402, ई-मेल: dainiksamayjagat@gmail.com

'एक वृक्ष मां के नाम' थीम पर वृहद पौधरोपण

समय जगत झांसी। आज दिनांक 9 जुलाई 2025 को सुदर्शन डिग्री कॉलेज बाँसी में प्रधानमंत्री जी द्वारा निर्देशित श्एक वृक्ष माँ के नामश् की थीम पर बृहद स्तर पर वृक्षारोपण कार्यक्रम किया गया। इस अवसर पर सर्वप्रथम एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें पर्यावरण के महत्व पर प्रकाश डाला गया। संगोष्ठी का शुभारंभ महाविद्यालय के संस्थापक डॉ. आर. एन. यादव (पूर्व प्राचार्य नेहरू महाविद्यालय, ललितपुर), प्रबंधिका श्रीमती उमा यादव, महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ. सोनू श्रीवास्तव एवं अतिथियों ने सरस्वती जी की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर एवं दीप ज्वलित कर किया। इस संगोष्ठी में मुख्य अतिथि के रूप में वरिष्ठ समाजसेवी डॉ. जितेंद्र जैन, विशिष्ट अतिथि भाजपा महामंत्री प्रमोद नायक और श्री अरुण मोदी रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता महाविद्यालय के संस्थापक डॉ. आर. एन. यादव जी ने की। संगोष्ठी में डॉ. जितेंद्र जैन ने मां और वृक्ष को एक दूसरे का सहयोगी बताते हुए उसके महत्व पर प्रकाश डाला और बताया कि जैसे मां बच्चे की सेवा करती है उसी तरह से यह पेड़ लगाकर के हमें भी माँ के जैसी उसकी सेवा करनी चाहिए। प्रमोद नायक ने कहा कि आज पर्यावरण बहुत ही प्रदूषित हो गया है और उसका बचाव पेड़ों से ही हो सकता है। अगर हम अभी से ही उसको बचाने का प्रयास नहीं करेंगे तो भविष्य हमारा अंधकारमय हो सकता है।संस्थापक जी ने बताया कि पर्यावरण में बहुत सारी जहरीली गैसें तैरती रहती हैं और उनके अवशोषण का काम वृक्ष ही करते हैं जो हमें शुद्ध हवा देते हैं। इन्हीं की वजह से बारिश होती है और लकड़ी उद्योग और अन्य बहुत से उद्योग पेड़ों पर ही आधारित हैं, इसलिए हमें ज्यादा से ज्यादा पेड़ लगाने चाहिए।

महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ. सोनू श्रीवास्तव ने सभी अतिथियों का आभार व्यक्त करते हुए बताया कि आज हम जो पेड़ मां के नाम लगा रहे हैं उसकी सेवा तो करनी ही है साथ ही हमें अपने या बच्चों के जन्म दिवस पर या किसी अन्य अवसरों पर हमें पेड़ लगाना चाहिए ।

इससे पेड़ों की संख्या में वृद्धि होगी और हम स्वस्थ जीवन जी सकेंगे।संगोष्ठी के बाद सर्वप्रथम संस्थापक जी ने पेड़ लगाया और तदोपरांत सभी ने माँ को समर्पित एक-एक पेड़ लगाया।इस अवसर पर कार्यक्रम में डॉ- प्रकाश यादव, आईक्यूएसी प्रभारी श्री अमरेन्द्र कुमार लाल, डॉ- सल्लन अली, श्री सुरेंद्र कुमार साहू, श्री राम सजीवन, श्री नरेन्द्र सिंह बुंदेला, श्री आशीष कुमार जैन, श्री इलियास अली, श्री सुंदर कुशवाहा, पुस्तकालयाध्यक्ष श्री शिवाजी सिंह यादव, आईटी प्रभारी श्री प्रहलाद नामदेव, श्री संजू यादव, श्री प्रताप सिंह राठौर, श्री निरपत कुशवाहा, श्री उद्वैत, श्री मुकेश आदि और छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे।

पनारी लेखपाल के खिलाफ लामबंद हुये युवा कांग्रेस

समय जगत, ललितपुर। विगत दिनों जमीनी प्रकरण में लेखपाल व कांग्रेसी नेता के बीच हुयी मारपीट के मामले में जहां एक ओर लेखपाल ने कांग्रेसी नेता के खिलाफ एफआईआर दर्ज करायी थी, तो वहीं कांग्रेसी नेता को पुलिस ने हिरासत में ले लिया था। घटना के दूसरे दिन युवा कांग्रेसियों ने लामबंद होकर कलेक्ट्रेट पहुंच कर जिलाधिकारी व पुलिस अधीक्षक को संबोधित ज्ञापन भेजकर पूरे मामले की निष्पक्ष जांच कर कार्यवाही किये जाने की मांग उठायी है। ज्ञापन में ग्राम पनारी निवासी महेन्द्र अहिरवार पुत्र इमरतलाल को वरिष्ठ कांग्रेसी नेता बताते हुये युवक कांग्रेस जिलाध्यक्ष अंकित यादव ने डीएम-एसपी को अवगत कराया कि पनारी स्थित जमीन पर महेन्द्र अहिरवार का आवासीय भवन निर्मित है, जिस पर वह निवास करते आ रहे हैं। आरोप लगाया कि उक्त जमीन को लेखपाल ने तालाब के लिए आवंटित कर दिया। लेकिन बारिश के समय पूरा घर पानी से भर गया, जिसके सम्बन्ध में उन्होंने डीएम को पट्टा के लिए आवेदन किया।

इस पर डीएम ने आवास के लिए पट्टा आवंटित करने का आदेश एसडीएम को दिये थे। यहां आरोप लगाया कि बावजूद इसके लेखपाल द्वारा लगातार अवैध तरीके से सुविधा शुल्क दिये जाने की मांग की जाती रही। इसी क्रम में बीते मंगलवार को लेखपाल ने महेन्द्र अहिरवार को तहसील सदर बुलाया, जहां उन्होंने गालियां देते हुये मारपीट कर दी। दोनों पक्षों की ओर से हुयी हाथापाई के चलते लेखपाल ने महेन्द्र अहिरवार व उसके पूरे परिवार पर एफआईआर दर्ज करा दी गयी। इसी दौरान युवा कांग्रेस प्रदेश महासचिव मोंटी शुक्ला ने मांग रखते हुये कहा कि सम्बन्धित लेखपाल को तत्काल प्रभाव से निलम्बित किया जाये और कार्यवाही न होने की दशा में युवा कांग्रेस आंदोलन के लिए बाध्य होगी। ज्ञापन में वरिष्ठ कांग्रेस नेता सुनील खजुरिया, प्रदेश सचिव बलवंत सिंह राजपूत, नवनीत किलेदार, उवेश खान, बहादुर अहिरवार, अजय तोमर, मोहम्मद आसिफ, मनीष श्रीमाली, नाती राजा, रामनरेश दुबे, बिट्टू राजा देवरान, संजय जाटव, प्रेम नामदेव, अजय कुशवाहा, कुलदीप पाठक, इरफान खान, सहताज अली, रफीक अली, शुभम शुक्ला, पवन विश्कर्मा, रोहित कुशवाहा, रामकिशोर गौतम, मयंक प्रताप सिंह, ऋषि, जुनैद खान, कमलेश नामदेव, राहुल सेन आदि मौजूद रहे।

नामांतरण बंटवारा सीमांकन त्वरित गति से एवं निष्पक्ष रूप से हो : कलेक्टर

निवाड़ी। कलेक्टर श्री लोकेश कुमार जांगिड़ की अध्यक्षता में आज कलेक्ट्रेट सभागार में राजस्व अधिकारियों (आरओ) की बैठक आयोजित की गई। बैठक में जिले के सभी राजस्व अधिकारी उपस्थित रहे।

बैठक में कलेक्टर श्री जांगिड़ ने राजस्व प्रकरणों, राजस्व वसूली, फार्मर रजिस्ट्री, स्वामित्व योजना का क्रियान्वयन, अतिक्रमण हटाने एवं अन्य मुद्दों पर समीक्षा कर राजस्व अधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिए। उन्होंने निर्देशित किया कि जुलाई और अगस्त माह में किसानों की फार्मर रजिस्ट्री तथा स्वामित योजना अंतर्गत प्रकरणों के निराकरण में प्रगति लाएं। अगली बैठक में समीक्षा की जाएगी और संतोष जनक प्रगति ना लाने वाले अधिकारियों के विरुद्ध एक्शन लिया जाएगा। उन्होंने बैठक के पूर्व स्थानांतरण लेकर आए राजस्व अधिकारियों को स्पष्ट निर्देश दिए कि कार्य करने वाले अधिकारियों को सम्मानित किया जाएगा और निराश करने वाले अधिकारियों पर अनुशासनात्मक कार्यवाही की जाएगी। उन्होंने विवादों से दूर रहकर, निष्पक्ष और स्वप्रेरणा से कार्य करने हेतु अधिकारियों को निर्देशित किया।

बैठक में कलेक्टर श्री जांगिड़ ने निर्देश दिए कि राजस्व वसूली में प्रगति लाएं। राजस्व प्रकरणों में न्यायालय में समय पर पेशी हो। राजस्व प्रकरणों के निराकरण हेतु प्रतिदिन कोर्ट लगाए। यदि कोई पटवारी कार्य में लापरवाही करे तो उसके विरुद्ध अनुशासनात्मक कार्यवाही प्रस्तावित करें। अतिक्रमण को संवेदनशीलता और सशक्ति से हटाना सुनिश्चित करें। उन्होंने प्रभारी मंत्री एवं जनप्रतिनिधियों से प्राप्त शिकायतों का तत्परता से निराकरण करने के निर्देश दिए। सीएम हेल्पलाइन शिकायतों के निराकरण में गुड गवर्नेंस के माध्यम से शीघ्रता दिखाएं।

उन्होंने माननीय उच्च न्यायालय में लंबित प्रकरणों में समय पर जवाब दावे प्रस्तुत करने हेतु निर्देशित कियाइस अवसर पर अपर कलेक्टर श्री एचबी शर्मा, एसडीएम श्री अनुराग निगवाल, श्री सतीश वर्मा, डिप्टी कलेक्टर श्री राजेन्द्र मिश्रा, सुश्री विनीता जैन, तहसीलदार श्री संदीप शर्मा, श्री शुभम मिश्रा, सुनील कुमार, नायब तहसीलदार जेरोन श्रीमती वंदना सिंह एवं राजस्व अधिकारी उपस्थित रहे।

प्रत्येक पेड़ समाज का संरक्षण करने की रखता है क्षमता : दिनेश कुमार

ईओ दिनेश कुमार विश्वकर्मा के नेतृत्व में किया गया वृहद वृक्षारोपण

पार्षदों के वार्डों में भी चलाया जायेगा अभियान

ललितपुर। नगर पालिका परिषद के ईओ दिनेश कुमार विश्वकर्मा ने वार्ड पार्षदों के साथ वृक्षारोपण महाभियान 2025-26 के तहत वृक्षारोपण किया। वृक्षारोपण के अभियान के तहत नगर पालिका को 79 हजार पौधों के रोपण हेतु लक्ष्य निर्धारित किया गया था, जिसमें नगर पालिका परिषद द्वारा जिले में 16 स्थानों पर पौधों का रोपण किया गया। ईओ दिनेश कुमार विश्वकर्मा ने पार्षदों व पालिका के अधिकारी/कर्मचारियों के साथ मां कर्माबाई पार्क, काशीराम पार्क व वृद्धा आश्रम सहित इलाईट शमशान घाट में पौधों का रोपण किया गया। पौध रोपण के दौरान ईओ दिनेश कुमार ने कहा कि पेड़ लगाना किसी को जीवन देने जैसा है, हमारे द्वारा लगाया गया प्रत्येक पेड़ समाज का संरक्षक बनने की क्षमता रखता है। जैसे-जैसे मानसून का मौसम शुरू होता है, हमारे पर्यावरण को संरक्षित करने के लिए पेडों की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है, वृक्षारोपण की स्थापना वायु की गुणवत्ता में सुधार करने में योगदान देती है, जिससे आपके लिए सांस लेना आसान हो जाता है। पेड़ हमें ऑक्सीजन का उत्पादन करते हैं और हानिकारक गैसों को अवशोषित करते हैं। वृक्षारोपण के प्रयासों को बढ़ाने से ऑक्सीजन का स्तर बढ़ सकता है। इस दौरान पार्षद जगदीश कुशवाहा, पार्षद प्रतिनिधि अमरदीप रजक, पार्षद प्रतिनिधि अमित नायक, पार्षद जानकी सहित कर निर्धारण अधिकारी राजेन्द्र प्रसाद, राजेश जैन, जितेन्द्र स्वरूप तिवारी ने वृक्षारोपण के बारे में विस्तार से बताते हुये पेड़ों से होने वाले लाभ के बारे में जानकारी दी। वृक्षारोपण महाअभियान के तहत नगर पालिका को मिले 79 हजार पौधों के लक्ष्य के चलते समस्त वार्डों के स्वास्थ्य नायकों एवं समस्त कर्मचारियों द्वारा जिले में 16 स्थानों जिनमें जुगपुरा, शमशान घाट, गोविंद सागर बांध की तलहटी व शहजाद नदी के किनारे, ईलाइट शमशान घाट, राजघाट मार्ग की साइड पटरी, कर्माबाई पार्क, सुरई शमशान घाट, शमशान घाट रोड से पंचमुखी मंदिर तक सड़क किनारे, पंचमुखी मंदिर के अंदर, नेहरू नगर शमशान घाट, नेहरू नगर कब्रिस्तान, कान्हा गौशाला, गौशाला के बाहर खाली पड़ी पालिका की जमीन, दैलवारा एमआरएफ, औद्योगिक क्षेत्र चंदेरा, आरएमबी कॉलेज के पास बृद्धा आश्रम के सामने, मन्नू पेट्रोल पंप के पास हाईवे किनारे, ललितेश्वरी माता मंदिर के पास, रिलायंस पेट्रोल पंप के पास सड़क किनारे आदि स्थानों पर पौधों का रोपण किया गया। इस दौरान समस्त 26 वार्डों के स्वास्थ्य नायकों को 500-500 पेड़ लगाये जाने हेतु दिये गये, जिनमें समस्त स्वास्थ्य नायकों द्वारा अपने-अपने वार्डों व क्षेत्रों में जाकर पौध रोपण किया गया व निर्माण विभाग की गैंग द्वारा व पालिका के कर्मचारियों द्वारा पौधों का रोपण किया गया। इस दौरान ईओ दिनेश कुमार विश्वकर्मा, पार्षद जगदीश यादव, पार्षद जानकी, पार्षद प्रतिनिधि अमरदीप रजक, पार्षद प्रतिनिधि अमित नायक, कर निर्धारण अधिकारी राजेन्द्र प्रसाद, कर अधीक्षक/सफाई एवं खाद्य निरीक्षक राजेश जैन, सफाई एवं खाद्य निरीक्षक जितेन्द्र स्वरूप तिवारी, लिपिक महेन्द्र सिंह यादव, नजूल लिपिक सुधीर रावत, हेड सुपर बाइजर संजय कुमार, अमित कुमार रिंकू सहित वार्डों के स्वास्थ्य नायक, निर्माण विभाग के कर्मचारी सहित पालिका के अधिकारी एवं कर्मचारी मौजूद रहे।

उ.प्र. रोडवेज कर्मचारी संघ के क्षेत्रीय मंत्री ने दिया डीएम को ज्ञापन

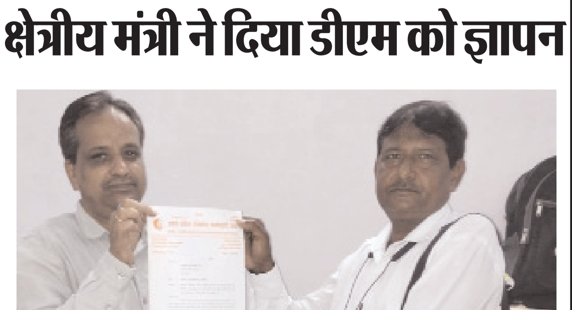

समय जगत, झांसी। उत्तर प्रदेश रोडवेज कर्मचारी संघ झांसी क्षेत्र के क्षेत्रीय मंत्री विजय नारायण शर्मा द्वारा एक ज्ञापन मुख्यमंत्री जी को संबोधित जिलाधिकारी झांसी को दिया गया जिसे प्रशासनिक अधिकारी द्वारा प्राप्त किया गया। ज्ञापन में कहा गया दिनांक 10 जून 2024 को ओम सिक्योरिटी सर्विसेज के गार्ड योगेंद्र सिंह परमार जो कि उत्तर प्रदेश परिवहन निगम झांसी डिपो में कैश रूम में तैनात थे झांसी डिपो का कैश 28 लाख रुपया लेकर फरार हो गए उनकी अभी तक गिरफ्तारी संभव नहीं हो सकी ।संघ द्वारा मांग की गई है की सीआई डी या किसी अन्य सरकारी एजेंसी से जांच करवारकर मुख्य आरोपी योगेंद्र सिंह परमार को शीघ्र गिरफ्तार कराया जाए।

पं.गौरव तिवारी की चतुर्थ पुण्यतिथि मनायी

समय जगत, ललितपुर। नगर पालिका परिषद के सेवानिवृत कार्यालय अधीक्षक रमाकांत तिवारी के पुत्र गौरव तिवारी की चतुर्थ पुण्यतिथि पर जिला अस्पताल में अन्नपूर्णा सेवा संघ के माध्यम से गरीबों को भोजन कराया गया। सभी ने गरीबों को भोजन परोस कर समाज सेवा की। इस दौरान पूर्व नगर पालिका अध्यक्ष सुभाष जायसवाल, अशोक कुमार पटैरिया, ऊषा जायसवाल, कालू जायसवाल, नीरज शर्मा, दीनदयाल सोनी, चंद्रविनोद मिश्रा, विवेक जैन, कैलाश नारायण, शत्रुधन यादव, शशिकांत तिवारी, विजय राठौर, लक्ष्मीकांत, उमाकांत, विवेक त्रिपाठी, चंद्रकांत, शुभकांत तिवारी, धर्मेंद्र तिवारी, आफ्ताब कांत, शक्तिकांत, जयकांत तिवारी, संजय तिवारी उर्फ शिल्लू, रुपेंद्र साहू, विष्णुकांत तिवारी सत्तू, रानू, देवेंद्र यादव आदि मौजूद रहे।

विद्यालय का आम आदमी पार्टी ने किया भ्रमण

समय जगत, ललितपुर। आम आदमी पार्टी जिलाध्यक्ष हरदयाल सिंह लोधी एड. द्वारा उत्तर प्रदेश प्रभारी सांसद संजय सिंह के आवाहन पर जो उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा पूरे उत्तर प्रदेश में 27 हजार परिषदीय विद्यालय बंद किए हैं, उनमें ललितपुर जिले के 266 परिषदीय विद्यालय बंद किए गए हैं। जिले के ब्लॉक बार के ग्राम पुरापचौनी के स्कूल पर जाकर देखा कि स्कूल बंद था ग्राम के छोटे छोटे नौनिहाल बच्चे स्कूल के बाहर खड़े थे उनसे पूछ तो उन्होंने बताया कि यह स्कूल हमारे गांव से दो किलो मीटर दूर जूनियर हाईस्कूल में मर्ज हो गया है। हम लोग गरीब बच्चे हैं आने जाने का कोई साधन नहीं है अगर यह स्कूल नहीं खुलता है तो हम लोग पढ़ाई से वंचित रह जायेंगे। बच्चे हमारे साथ स्कूल में धरना पर बैठे रमेश झा, निहाल सिंह, कैलाश मिश्रा एवं अनुसूचित जनजाति के लोग भी शामिल थे।

एमएसडी महाविद्यालय में हुआ वृक्षारोपण

ललितपुर। छत्रपति शिवाजी एमएसडी स्नातकोत्तर महाविद्यालय पाली में उत्तर प्रदेश सरकार के फ्लैगशिप कार्यक्रम के तहत एक पेड़ मां के नाम 2.0 के अंतर्गत वृहद पौधारोपण कार्यक्रम का सफल आयोजन किया। इस कार्यक्रम के अंतर्गत महाविद्यालय परिसर में मां के नाम से एक-एक पौधे का रोपण किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि समाजसेवी महेन्द्र जैन, जयकुमार जैन के आतिथ्य और प्राचार्य डा.करुणाकर शर्मा के निर्देशन में शिक्षकों और छात्रों ने महाविद्यालय परिसर में मां के नाम से एक-एक पौधे का रोपण किया।

गुरू पूर्णिमा निराशा की रात में आशा के सवेरे का अहसास कराती है : प्रो.शर्मा

समय जगत, ललितपुर। गुरु पूर्णिमा पर आयोजित एक परिचर्चा को संबोधित करते हुए नेहरू महाविद्यालय के सेवानिवृत्त प्राचार्य प्रो. भगवत नारायण शर्मा ने कहा कि राजा-महाराजाओं और धनकुबेरों से भिन्न शक्ति है, गुरुओं और आचार्यों की, परंतु समकालीन युग में गुरुओं की बहुतायत और शिष्यों की कमी होती जा रही है, वहां हम नहीं समझ पाते कि किसे अपना तन मन समर्पण कर दें? ऐसी बिबूचन का समाधान प्रस्तुत श्लोक में बड़े सुंदर ढंग से किया गया है गुरवो बहव सन्ति शिष्यवित्तोपहारिण। तं एकं शंकरं वन्दे शिष्यसन्तापहारिणम्। अर्थात ऐसे हजारों गुरु हैं जो शिष्यों का धनहरण करते हैं, परंतु इन समस्त गुरुओं से भिन्न एक गुरु शंकर की मैं वन्दना करता हूँ, जो शिष्य के दुखों को दूर करते हैं। वर्तमान युग को सूचना क्रांति के विस्फोट का समय कहा जाता है। चौबीसों घंटे देश विदेश के खबरिया और मनोरंजक चौनल बेअंत हर पल शब्द उगल रहे हैं। अन्याय करने वालों का सफाई में ये कहना है एवं अन्याय सहने वालों का वो कहना है। परंतु विवेक की लौ ठंडी पड़ती जा रही है। जिसके कारण एक जैसे अपराध थमने का नाम नहीं ले रहे हैं। ज्ञान की आंधी जब जब मन में उमड़ती-घुमड़ती है तो संशय और काल्पनिक भय की दीवारें स्वत ढह जाती है। आदमी वह नहीं रहता जो था। वह, वह हो जाता है, जो उसे होना चाहिए। बेहतर और बेहतर से भी बेहतर। विश्वामित्र गुरु होने के नाते संसार भर के जब मित्र हैं, हमजोली हैं तो अभिशप्त अहिल्या जड़ पाषाण कैसे रह सकती है। उनकी करुणा से तरल ज्ञान पाकर, भगवान् राम के हाथों उसे पूर्ववत चेतना सम्पन्न कर देते हैं। शंकराचार्य जी का स्त्रोत है चित्रं बटतरोर्मले वृद्धा, शिष्या गुरुयुर्वा। इस वट वृक्ष के नीचे युवा गुरु और वृद्ध शिष्य आसीन है।

युवा गुरु का मौन व्याख्यान चल रहा है, उसी से शिष्यों के संशय और शंकाओं का स्वतरू समाधान हो रहा है। क्योंकि वट ही ऐसा एकमात्र वृक्ष है जिसकी जड़ें हवा में झूलते हुए आँखों को जब दिखाई दे रही हैं तो शब्द खर्च करने की क्या जरुरत है। भारतीय मनीषा का मानना है कि जन्म लेते ही संतान पर तीन कर्ज आयद हो जाते हैं-पितृ, देव तथा गुरु, जिसे चुकाने के लिए शिष्य स्वयं गुरु बने और ज्ञान की लाखों वर्ष से बहती धारा के मूलधन में अपना सबाया योगदान करें। आकाश, जल, वायु, अग्निदेव कर्ज हैं इनको चुकाने के लिए इनका सभी समान रूप से उपभोग करें। पितृ कर्ज से हम तभी मुक्त हो सकते हैं, जब हम स्वयं माता-पिता बनें। फ्रांस में जब विचारक और दार्शनिक गुरु बालतेयर और रूसो आदि ने राजतंत्र और जनद्रोही सामंतवाद के विरुद्ध चौराहे पर खड़े होकर उसकी निरर्थकता और अप्रासंगिकता पर अट्टाहास किया तो उसकी धमक लुई 16 वें के राजमहल तक पहुंच गई और राजशाही का खात्मा होते देर न लगी। भारत में भी आचार्य चाणक्य ने सिकंदर के विश्वविजय के सपने को धूल चटा दी थी। निसन्देह गुरु और शिक्षक आवश्यकता पडने पर गुरुकुलों से बाहर निकलकर सामाजिक और आर्थिक क्रान्ति के सूत्रधार के रूप में जनवाणी को मौके पर अभिव्यक्त करते हैं।

कूलर में करंट आ जाने से 24 वर्षीय युवक की मौत से मातम

समय जगत, उरई। एक दर्दनाक हादसे की खबर सामने आई है, जहां घर में लगे कूलर में करंट आ जाने से 24 वर्षीय युवक की मौके पर ही मौत हो गई। घटना जालौन कोतवाली क्षेत्र के मोहल्ला नारो भास्कर की है। मृतक की पहचान अर्जुन कुशवाहा पुत्र रामसनेही कुशवाहा के रूप में हुई है।

परिवार के अनुसार, सोमवार दोपहर अर्जुन अपने कमरे में कूलर के पास खड़ा था। तभी अचानक कूलर में करंट दौड़ गया और अर्जुन उसकी चपेट में आकर बुरी तरह झुलस गया। जैसे ही हादसे का पता चला, परिजन उसे आनन-फानन में लेकर जिला अस्पताल पहुंचे, लेकिन डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया।घटना की जानकारी मिलते ही जालौन कोतवाली पुलिस मौके पर पहुंची और शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। पुलिस पूरे मामले की जांच कर रही है।स्थानीय लोगों के अनुसार अर्जुन कुशवाहा एक शांत और मेहनती युवक था। उसकी अचानक मौत से मोहल्ले में मातम पसरा हुआ है। बड़ी संख्या में लोग अर्जुन के घर पर जमा हो गए हैं और परिजनों को ढांढस बंधा रहे हैं। बताया जा रहा है कि कूलर में वायरिंग की समस्या या अर्थिंग की कमी के चलते उसमें करंट दौड़ा, जिससे यह हादसा हुआ। फिलहाल परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल है और पूरे मोहल्ले में शोक की लहर है।

समस्याओं को लेकर पीआरडी जवानों ने कलेक्ट्रेट पहुंच कर डीएम को सौपा ज्ञापन

उरई (जालौन)।पीआरडी जवानों ने अपनी समस्याओं को लेकर कलेक्ट्रेट पहुंच कर जिलाधिकारी को ज्ञापन भेंट कर समस्या को हल किये जाने की मांग उठाई है।इस मौके पर पीआरडी जिलाध्यक्ष, पूर्व जिलाध्यक्ष नारायणदास कुशवाहा, करन सिंह, छोटे लाल, धर्मेंद्र कुमार, कृष्णकुमार, राजबहादुर, गंगाप्रसाद, महेन्द्र सिंह सहित अन्य जवानों ने कलेक्ट्रेट पहुंच कर जिलाधिकारी को ज्ञापन भेंट करते हुए बताया कि विभाग के द्वारा जवानों की डयूटी 80 से 120 किलों मीटर तक लगाई जा रही है जो न्याय संगत नहीं है।जवानों को डयूटी की जगह पर पहुंचने के लिए दो सौ से तीन सौ रुपये तक का गाड़ी में पेट्रोल खर्च करना पड़ता है ।

जनसुनवाई में आमजन से प्राप्त आवेदनों को अधिकारी लंबित न रखें, शीघ्रता से निराकरण करें : कलेक्टर

आमजन से प्राप्त 93 आवेदनों पर कलेक्टर ने की सुनवाई

समय जगत, निवाड़ी। शासन के निर्देशानुसार जिला मुख्यालय पर कलेक्ट्रेट सभागार में आज जनसुनवाई आयोजित की गई। कलेक्टर श्री लोकेश कुमार जांगिड़ ने संबंधित अधिकारियों के साथ जनसुनवाई के दौरान आमजन से प्राप्त शिकायतों एवं समस्याओं को सुना।

कलेक्टर श्री जांगिड़ ने जनसुनवाई में उपस्थित अधिकारियों को निर्देशित किया कि जनसुनवाई में प्राप्त आवेदनों को अधिकारी अपने पास लंबित स्थिति में ना रखें, अगली जनसुनवाई के पहले आवेदनों का निराकरण करें। जनसुनवाई में आमजन से प्राप्त आवेदनों को टीएल मान सकते हैं, अतः टीएल पेंडेंसी का शीघ्रता से निराकरण करें। आज जनसुनवाई में 93 आवेदकों द्वारा अपनी समस्या को कलेक्टर के समक्ष रखा गया। सीमांकन, बंटवारा, नामांतरण, योजनाओं का लाभ दिलाने, राशन, एवं अन्य आवेदनों पर सुनवाई की गई।

कलेक्टर श्री जांगिड़ ने मौके पर निराकृत स्थिति आवेदन का निराकरण करते हुए शेष आवेदनों पर कार्यवाही कर संबंधित विभाग के अधिकारी को अतिशीघ्र निराकरण के निर्देश दिए।

इस अवसर पर सीईओ जिला पंचायत श्री रोहन सक्सेना, अपर कलेक्टर श्री एचबी शर्मा, एसडीएम श्री अनुराग निगवाल,एसडीएम श्री सतीश वर्मा, डिप्टी कलेक्टर सुश्री विनीता जैन, डिप्टी कलेक्टर श्री राजेन्द्र मिश्रा, तहसीलदार, जनपद सीईओ, सीएमओ सहित विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे।

आम सूचना

मैं, Smt Maheswari नं 14647137L Hav Kancharla Sreenivasulu कि पत्नी हूँ । मेने अपना नाम Smt Maheswari से बदलकर नाम Kancharla Maheswari कर लिया है जो कि आधार कार्ड के अनुसार सत्य व सही है, समान्य दर्ज करे।

आम सूचना

मैं, Jyoti नं 14656593X Hav Kale Santosh Machhindra कि पत्नी हूँ। मेने अपना नाम Jyoti से बदलकर नाम Jyoti Santosh Kale लिया है जो कि आधार कार्ड के अनुसार सत्य व सही है, समान्य दर्ज करे ।

आम सूचना

I, JC 406460L Sub M Mallikharjuna Reddy That my daughter name has been erroneously entered as Heswitha Reddy in my service record her correct name is Modugula Heswitha Reddy hence it may be entered accordingly.

आम सूचना

मैं, Paparao ?? 15783848F Hav (OFC) Vasudevarao Nartu का पिता हूँ द्य मेने अपना नाम Paparao से बदलकर नाम Nartu Papayya लिया है जो कि आधार कार्ड के अनुसार सत्य व सही है, समान्य दर्ज करे ।

आम सूचना

I, JC 406460L Sub M Mallikharjuna Reddy That my mother name has been erroneously entered as M. Basavamma in my service record her correct name is Modugula Heswitha Reddy hence it may be entered accordingly.

आम सूचना

मैं, सर्विस नं 15779871X Hav (DS) Shankreppa Jiddi मेने अपने बेटे का नाम Harshavardana से बदलकर नाम Harshavardhana Shankreppa Jiddi लिया है जो कि आधार कार्ड के अनुसार सत्य व सही है, समान्य दर्ज करे ।

आम सूचना

I, No 15616201M Hav K Rajapandi That my father name has beenerroneously entered as T Kalyani in my service record his correct name is Kalyani T hence it may be entered accordingly.

आम सूचना

मैं, Anjunara Begum नं JC-423688X Sub Safiul Alam कि माता हूँ। मेने अपना नाम Anjunara Begum से बदलकर नाम Anjunara Bibi लिया है जो कि आधार कार्ड के अनुसार सत्य व सही है, समान्य दर्ज करे ।

जनसुनवाई/आईजीआरएस में जनपद चित्रकूट पुलिस रही प्रथम

समय जगत चित्रकूट । जनसुनवाई/आईजीआरएस पोर्टल पर जनसमस्याओं के त्वरित निस्तारण हेतु रिपोर्ट की समीक्षा शासन स्तर पर प्रतिदिन की जाती है। माह जून 2025 में आईजीआरएस पोर्टल पर प्राप्त संदर्भों एवं उनके गुणवत्तापूर्वक निस्तारण के सम्बन्ध में की गयी समीक्षा में जनपद चित्रकूट पुलिस को उ0प्र0 के सभी 75 जिलों में से प्रथम स्थान प्रदान किया गया है। पुलिस अधीक्षक चित्रकूट अरुण कुमार सिंह के कुशल निर्देशन में अपर पुलिस अधीक्षक सत्यपाल सिंह नोडल अधिकारी आईजीआरएस पर्यवेक्षण में निरीक्षक प्रदीप कुमार यादव प्रभारी आईजीआरएस द्वारा उच्चाधिकारियों से प्राप्त आदेशों-निर्देशों का पालन कराते हुये कड़ी मेहनत की गयी । माह जून में माननीय मुख्यमंत्री संदर्भ, जिलाधिकारी/जनसेवा संपूर्ण समाधान दिवस/थाना दिवस में जनपद पुलिस द्वारा सभी संदर्भों का समय से गुणवत्तापूर्ण निस्तारण किया गया। आईजीआरएस शाखा में नियुक्त आरक्षी मानवेन्द्र सिंह एवं महिला आरक्षी अनीशा बानो, महिला आरक्षी मीरा यादव तथा जनपद के समस्त थानों/क्षेत्राधिकारी कार्यालयों में आईजीआरएस पोर्टल का कार्य देख रहे थानों के पुलिस कर्मियों ने कड़ी मेहनत कर सभी संदर्भों की ऑनलाइन फीडिंग की गयी एवं प्राप्त संदर्भों के निस्तारण में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी गयी, जिस कारण से जनपद चित्रकूट को जनसुनवाई के मामलों में प्रथम स्थान प्राप्त हुआ है । सभी संदर्भों की ऑनलाईन फीडिंग एवं प्राप्त संदर्भों के निस्तारण में जनपद चित्रकूट के सभी 08 थानों को प्रथम स्थान प्राप्त हुआ है ।

पॉश एक्ट का उद्देश्य कार्यस्थल पर महिलाओं को देना है सुरक्षित माहौल: भट्ट

विजय शर्मा धौलपुर। राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण, राजस्थान राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण एवं अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकरण जिला एवं सेशन न्यायाधीश अरुण कुमार अग्रवाल के निर्देशानुसार अध्यक्ष स्थायी लोक अदालत सुरेश प्रकाश भट्ट एवं सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण अपर जिला एवं सेशन न्यायाधीश रेखा यादव द्वारा एडीआर परिसर में कार्यस्थल पर महिलाओं का यौन उत्पीड़न पॉश एक्ट के संबंध में विधिक जागरूकता शिविर का आयोजन किया। जिसमे सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण द्वारा कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न रोकथाम, निषेध और निवारण अधिनियम एवं पॉश एक्ट के बारे में जानकारी दी।

अध्यक्ष स्थायी लोक अदालत ने कर्मचारियों को बताया कि पॉश एक्ट का उद्देश्य कार्यस्थल पर महिलाओं के लैंगिक उत्पीड़न को रोककर महिलाओं को कार्यस्थल पर सुरक्षित, गरिमापूर्ण, उत्पीड़न मुक्त वातावरण उपलब्ध करवाना है। किसी विभाग, संगठन, संस्था, कार्यालय, कम्पनी, अस्पताल तथा संगठित एवं असंगठित क्षेत्र के अन्य कार्यस्थलों पर छेड़छाड़, अनुचित शारीरिक स्पर्श, अश्लील मौखिक टिप्पणी की शिकार महिलाओं की सुरक्षा के लिए पॉश एक्ट को लागू किया गया है।

इसी प्रकार सचिव द्वारा उपस्थित कर्मचारियों को बताया कि पॉश एक्ट जिसका अर्थ कार्यस्थल पर महिलाओं का यौन उत्पीड़न रोकथाम, निषेध और निवारण अधिनियम 2013 है, कार्यस्थल पर महिलाओं के साथ होने वाले यौन उत्पीड़न को रोकने और उससे निपटने के लिए बनाया गया है। यह अधिनियम 9 दिसंबर 2013 को लागू हुआ था। इसका मुख्य उद्देश्य महिलाओं को सुरक्षित कार्य वातावरण प्रदान करना और यौन उत्पीड़न की शिकायतों की जांच और समाधान के लिए एक तंत्र स्थापित करना है। कार्यस्थलों पर कार्यरत महिलाओं की सुरक्षा व उनकी लैंगिक उत्पीड़न संबंधी शिकायतों के निवारण के लिए प्रत्येक कार्यस्थल पर आंतरिक परिवाद समिति और सम्पूर्ण जिले के लिए जिला कलेक्ट्रेट स्तर पर एक स्थानीय परिवाद समिति का गठन किया जाना आवश्यक है। महिलाओं को लैंगिक उत्पीड़न की शिकायत के आवेदन की प्रक्रिया, शिकायत की जांच के दौरान की जाने वाली कार्रवाई, लैंगिक उत्पीड़न की शिकार महिला के अनुरोध पर सुलह के माध्यम से विवाद का निस्तारण, लैंगिक उत्पीड़न के मामलें में प्रतिकर राशि का भुगतान, लैंगिक उत्पीड़न के मामले में दोषी को मिलने वाली सजा, लैंगिक उत्पीड़न की झूठी शिकायत करने, गलत एवं कूटरचित दस्तावेज पेश करने पर महिला के विरूद्ध की जाने वाली विधिक कार्यवाही के बारे में जानकारी दी। साथ ही उन्होंने पर्यावरण संरक्षण के लिए अधिक से अधिक पौधा रोपण करने, बाल विवाह रोकथाम, बेटी बचाओ बेटी पढाओ, नारी सुरक्षा, नालसा व रालसा द्वारा जारी विभिन्न स्कीम व अन्य जन कल्याणकारी स्कीम एवं नालसा हेल्पलाइन नम्बर 1500 की भी जानकारी दी गई। इस मौके पर जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, स्थाई लोक अदालतएवं लीगल एड डिफेंस काउंसिल का समस्त स्टाफ मौजूद रहा।

सुरक्षा और नियमों के तहत करें विस्फोटकों का उपयोग: मुरलीधर बिरदी

क्रेशर यूनियन भवन में खान संचालकों, क्रेशर व्यापारियों को किया गया सुरक्षा के प्रति जागरुक

महोबा। पत्थर उद्योग मंडी कबरई क्षेत्र के अलीपुरा स्थित क्रशर यूनियन भवन में बुधवार को एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें मुख्य अतिथि खान श्रम एवं रोजगार मंत्रालय भारत सरकार के खान सुरक्षा निदेशक मुरलीधर बिदरी द्वारा खान संचालकों, माइनिंग इंजीनियरों, सुपरवाइजर सहित इस कार्य से जुड़े व्यापारियों को सुरक्षा के प्रति जागरूक किया गया साथ ही प्रोजेक्टर के माध्यम से हरियाणा की खानो में काम करने के तरीकों को साझा किया गया। गोष्ठी दौरान व्यापारियों ने माइनिंग की समस्याओं से खान सुरक्षा निदेशक को अवगत कराया।

संगोष्ठी को संबोधित करते हुए गाजियाबाद जोन से आये श्रम एवं रोजगार मंत्रालय भारत सरकार के खान सुरक्षा निदेशक ने कहा कि खान संचालन एवं उत्पादन में खान सुरक्षा नियमों का पालन अनिवार्य है और जरा की चूक होने से बहुत बड़ी दुर्घटना का खामियाजा व्यापारियों को भुगतना पड़ता है। कहा कि सुरक्षा, नियमों के तहत हर हाल में विस्फोट का प्रयोग, स्टोरेज परिवहन उचित प्रबंधन का कार्य करना होगा तभी हम खानों को चला सकेंगे।

इस व्यापार से मिलने वाला रोजगार, राजस्व के साथ साथ सतर्कता बरतते हुए नियमों का पालन करना अति आवश्यक है। उन्होंने कहा कि बिना जागरूकता लाए हम खान मालिकों से नियमों का पालन नहीं करा सकते सभी को पहले बारीकी से ब्लास्टिंग के नियमों, विस्फोटक रख रखाव के सुरक्षित तरीके से रूबरू होना होगा तभी हम सुरक्षित खनन कर सकेंगे।

संगोष्ठी में उप निदेशक खान सुरक्षा अर्दला रामबाबू ने कहा कि हर खदान को चालू करते समय उनके विभाग में ऑनलाइन माइनिंग ओपनिंग की सूचना निर्धारित फार्मेट पर देना जरूरी होता है। कहा कि वार्षिक रिटर्न देने के प्रावधान को कई व्यापारियों द्वारा पालन नहीं किया जा रहा है, जिस पर जीएमएस द्वारा कार्रवाई की जाएगी और व्यापारियों को खनन का काम करना है तो उन्हें खान सुरक्षा नियमों का पालन करना होगा।

कहा कि बिना माइनिंग इंजीनियरों मेट प्रशिक्षित सुपरवाइजर के खान में काम करना नियमों का उल्लंघन है।गोष्ठी दौरान पत्थर करोबारी रामकिशोर सिंह, कृषि यूनियन अध्यक्ष राघवेंद्र सिंह ने माइनिंग की समस्याओं को रखते हुए बताया कि जिले में बहुत छोटे छोटे खनन पट्टे संचालित है जिससे तमाम समस्याएं उत्पन्न हो रही हैं, बावजूद इसके लीज होल्डर्स को जागरूक करने का काम किया जा रहा है। इस मौके पर खान निरीक्षक जितेश कुमार, अवधेश त्रिपाठी, वसीम अहमद, केशवबाबू शिवहरे, रघुराज सिंह, सूरज गुप्ता, दिनेश गुप्ता, हरिशंकर, ब्रजराज सिंह मुकेश सहित तमाम खान संचालक व क्रशर मालिक मौजूद रहे।

सीमा पटनाहा सिंह ने महोबा-मुस्करा मार्ग को सीधे बुंदेलखंड एक्सप्रेसवे से जोड़ने के लिए बसौठ के पास एक्सप्रेसवे पर कट बनाए जाने की केंद्रीय मंत्री के समक्ष उठाई मांग

महोबा। सुप्रीम कोर्ट में भारत सरकार की अधिवक्ता महोबा निवासी श्रीमती सीमा पटनाहा सिंह ने आज सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय में राज्य मंत्री हर्ष मल्होत्रा से भेट की एवं बसौठ के पास महोबा-मुस्करा मार्ग को बुंदेलखंड एक्सप्रेसवे से जोड़ने की क्षेत्रवासियों की मांग के मुद्दे को लिखित रूप से उठाया, केंद्रीय मंत्री ने उनकी माँग को स्वीकार करते हुए कार्यवाही के लिए आगे मार्क करके आवश्यक कार्यवाही करने के निर्देश दिए ।ज्ञात हो कि खरेला, मुस्करा, चरखारी और महोबा वासियो की बहुत दिनों से माँग थी कि बुंदेलखंड एक्सप्रेसवे पर जाने के लिए महोबा जिले में केवल खन्ना से ही जाने कि रास्ता है।कुछ दिन पहले ही क्षेत्रवासियो ने 1 पत्र सीमा पटनाहा सिंह को लिखा था जिसका सीमा पटनाहा ने तुरंत संज्ञान ले कर आज केंद्रीय मंत्री से क्षेत्रवासियों की माँग को पहुँचाया, सीमा पटनाहा सिंह की इस पहल से क्षेत्रवासियों की वर्षो पुरानी मांग पूरी होती नजर आने लगी है एवं सभी में खुशी व्याप्त है ।बसौठ के पास महोबा-मुस्करा मार्ग के एक्सप्रेसवे से जुड़ जाने से ना केवल महोबा वासियों को अपितु उरई से आने वाले सभी वाहनों को सीधे मुस्करा, खरेला, चरखारी जाने में आसानी होगी, एवं चरखारी के मंगलगढ़ किले के खुल जाने से चरखारी-महोबा के पर्यटन के लिए भी बढ़ावा मिलेगा।

सार संक्षिप्त

देशव्यापी हड़ताल में शामिल हुए एल आई सी के कर्मचारी, पुरानी पेंशन बहाल करने की मांग

महोबा। भारतीय जीवन बीमा निगम शाखा महोबा कार्यालय द्वार पर, केंद्रीय ट्रेड यूनियनों एवं सहयोगी फेडरेशन के द्वारा ऑल इंडिया इंश्योरेंस एम्पलाई एसोसिएशन के आवाहन पर कानपुर डिविजन इंश्योरेंस एम्पलाई एसोसिएशन के बैनर तले संवर्ग तृतीय और चतुर्थ श्रेणी के पदों में शीघ्र भर्ती, जीवन एवं स्वास्थ्य बीमा प्रीमियम पर जीएसटी समाप्त किए जाने, पुरानी पेंशन कि बहाली, बीमा क्षेत्र में 100% FDI पर रोक, आउटसोर्सिंग/ठेकेदारी प्रथा के खिलाफ, श्रम कानून के स्थान पर नए लेबर कोडस, IRDA द्वारा नियमो में परिवर्तन, सार्वजनिक क्षेत्र का विनिवेश/निजीकरण पर रोक लगाए जाने कि मांगो को लेकर आज दिनांक 09 जुलाई 2025 को संवर्ग तृतीय व चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारी एक दिवसीय हड़ताल पर रहे इस मौके पर शाखा सचिव सुरेश सोनी, शाखाध्यक्ष तंजीमअख्तर, देवीदीन, कमलेश, अखिलेश, शिवाकांत, सचिन, राहुल, सौरभ, आशु तोष, सर्वेश, आकांक्षा, रेखा, जयप्रकाश, पीयूष, उमाकांत, प्रेमानंद, ऋषि सागर आदि लोग मौजूद रहे ।

नवनियुक्त मंडल मंत्री बनाये जाने पर भाजपा नेताओं द्वारा किया गया सम्मान

समय जगत, चित्रकूट । शिवरामपुर भाजपा मंडल के पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं की उपस्थिती में शिवरामपुर एवं कर्वी में शिवरामपुर भाजपा मंडल के नवनियुक्त मंत्री शिवकुमार मिश्रा को बनाये जाने पर तथा उनके कार्यों को देखते हुए भाजपा जिलाध्यक्ष चित्रकूट के महेंद्र सिंह कोटार्य एवं चित्रकूट जिला के वरिष्ठ भाजपा नेता जगदीश गौतम ने शिवरामपुर भाजपा मंडल के नवनियुक्त मंडल मंत्री शिवकुमार मिश्रा को गमछा और भगवान कामता नाथ जी का छाया चित्र देकर सम्मानित किया तथा चित्रकूट भाजपा के वरिष्ठ नेता जगदीश गौतम ने शिवरामपुर भाजपा मंडल के सभी पदाधिकारियों कार्यकर्ताओं को अपने कर्वी आवास पर भोजन करवाया।

पीड़िता को मारपीट कर किया गंभीर रूप से घायल

समय जगत, बांदा । गणेश पुत्र चन्द्रपाल निवासी ग्राम-बिलबई, थाना कोतवाली देहात, का रहने वाला है।दिनांक 22.जून 2025 को गणेश अपने गांव से धान की फसल के लिये बीज लेने बांदा आया हुआ था तभी गणेश की पत्नी गांव में थी उसी दिन समय करीब 11:00 बजे दिन में जब गणेश की पत्नी मुन्नी अपने घर के दरवाजे पर बैठी थी, तो प्रार्थी का छोटा भाई हदेश तथा उसकी पत्नी आरती अचानक मुन्नी को मां बहन की बुरी-बुरी गालियां देने लगे जब मुन्नी ने उपरोक्त दोनों मुल्जिमानों को गालियां देने से मना किया तो हदेश ने कुल्हाड़ी से वार कर दिया तथा आरती अपने हांथ में लिये डण्डे से मारने लगी तब मुन्नी अपनी जान बचाकर अपने घर के अन्दर घुस गयी तो उपरोक्त दोनों मुल्जिमान भी मुन्नी के पीछे-पीछे घर के अन्दर घुस आये और घर के अन्दर भी कुल्हाड़ी व डण्डो से मारने-पीटने लगे तथा घर से घसीटकर घर के बाहर बने गड्ढे में मुन्नी को बेहोशी हालत में फेंक कर चले गये.।गणेश को जैसे ही घटना की जानकारी हुयी तो गणेश तत्काल गांव पहुंचकर मुन्नी देवी को बांदा सरकारी अस्पताल ईलाज करवाने हेतु ले गया था।

बस स्टैंड की मांग ने पकड़ा जोर व्यापार मण्डल ने सौंपा ज्ञापन

समय जगत मौदहा हमीरपुर। आजादी से अब तक मौदहा कस्बा एक स्थायी बस स्टैंड की मांग सभी जन प्रतिनिधियों ने उठाई है लेकिन सत्ता की मलाई मिलने के साथ ही सभी जनप्रतिनिधि अपना वादा भूल गए।और मौदहा बस स्टैंड के लिए आज भी तरस रहा है।इसी को लेकर बीते सप्ताह समाचार पत्रों ने जमकर खबर प्रकाशित की थी जिसके बाद कुछ जिम्मेदारों की नींद खुल गई और व्यापार मण्डल ने ज्ञापन देकर बस स्टैंड की मांग उठाई है। हिंदुस्तान उद्योग व्यापार मण्डल के जिलाध्यक्ष डा.मुबीन खान ने उत्तर प्रदेश सरकार के परिवहन मंत्री को सम्बोधित करते हुए उपजिलाधिकारी को सौंपे ज्ञापन में मांग की है कि मौदहा कस्बे में आजादी से आजतक स्थायी बस स्टैंड नहीं है जिससे व्यापारियों को खासी परेशानी होती है जबकि कस्बे से दिल्ली कानपुर सहित अन्य शहरों के लिए व्यापारियों का आवागमन होता है और परिवहन विभाग को मौदहा कस्बे से अच्छी आय भी होती है।इसलिए जनहित को देखते हुए मौदहा कस्बे में बस स्टैंड बनवाया जाए।इस दौरान नईम अहमद,अनिल कुमार, संजू वर्मा,हमीद खान, अजय कुमार,संजू सोनी, शिवकुमार सहित लगभग एक दर्जन से अधिक संगठन के सदस्य मौजूद रहे।

एस पी हमीरपुर ने पुलिस लाइन में किया पौधारोपण

समय जगत हमीरपुर । शासन द्वारा चलाए जा रहे वृहद वृक्षारोपण जन अभियान ÷एक पेड माँ के नाम÷ के क्रम में पुलिस अधीक्षक हमीरपुर द्वारा पुलिस लाइन्स परिसर हमीरपुर मे अपने अधीनस्थ अधिकारियों एवं कर्मचारियों के साथ वृक्षारोपण किया गया। इस अवसर पर पुलिस अधीक्षक द्वारा बताया गया कि वृक्ष प्रकृति की रक्षा के लिए बहुत आवश्यक हैं, वृक्ष लगाकर हम अपने पर्यावरण व परिवेश को स्वच्छ व सुन्दर बना सकते हैं। प्रकृति के प्रति सकारात्मक रवैये को लेकर सभी को ज्यादा से ज्यादा पेड़-पौधे लगाने चाहिए एवं वृक्षारोपण कर व बारिश के पानी को संरक्षित करके हम पारिस्थितिकी तंत्र को बनाए रखने में सहयोग कर सकते हैं। सभी अपने आस-पास अधिक से अधिक वृक्ष लगाए जिससे कि पर्यावरण का संरक्षण हो सके, तभी पर्यावरण को सुरक्षित और स्वच्छ बनाने के लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है।

इस मौके पर पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने के साथ ही पर्यावरण को स्वच्छ और सुन्दर रखने के लिए ज़्यादा से ज़्यादा वृक्षारोपण कर पर्यावरण को हरा-भरा बनाए रखने का संकल्प लिया गया तथा वृक्षारोपण कर जनपदवासियों से अधिक से अधिक वृक्ष लगाकर वृक्षारोपण के इस महाअभियान को सफल बनाने की अपील की गयी।

वृक्षारोपण कर पुलिस अधीक्षक के द्वारा जनपद के पुलिस अधिकारियों को निर्देश दिया गया कि वृक्षारोपण के प्रति जागरूकता फैलाएं, इसके लिए स्कूलों, कॉलेजों, संस्थानों, और सामाजिक संगठनों के साथ मिलकर भी काम करें। वृक्षारोपण अभियानों का आयोजन करना और लोगों को इसके लाभों के बारे में जागरूक करना आवश्यक है। वृक्षारोपण न केवल पर्यावरण के लिए बल्कि मानव जीवन के लिए भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। हमें अधिक से अधिक पेड़ लगाने चाहिए और उनकी देखभाल करनी चाहिए ताकि आने वाली पीढ़ियों को एक स्वस्थ और सुरक्षित पर्यावरण मिल सके। वृक्षारोपण एक ऐसा कार्य है जिसे हम सभी मिलकर कर सकते हैं और पर्यावरण को सुरक्षित रखने में अपना योगदान दे सकते हैं।

इस अवसर पर अपर पुलिस अधीक्षक जनपद हमीरपुर, क्षेत्राधिकारी सदर, क्षेत्राधिकारी यातायात, प्रतिसार निरीक्षक रिजर्व पुलिस लाइन्स जनपद हमीरपुर व अन्य अधिकारी/कर्मचारी मौजूद रहे।

कल्टीवेटर खरीद लौट रहे किसान का ट्रैक्टर खेत में पलटा, किसान की मौत

समय जगाए मौदहा,हमीरपुर। मौदहा कोतवाली क्षेत्र में एक दर्दनाक हादसा हुआ। बजरंगी डेरा के पास मंगलवार रात एक ट्रैक्टर खेत में पलट गया। हादसे में ट्रैक्टर के नीचे दबकर किसान की मौत हो गई। ट्रैक्टर चालक और एक अन्य व्यक्ति बच गए।

जानकारी के अनुसार रामप्रकाश पुत्र भोला निषाद (उम्र लगभग 47 वर्ष) व रामऔतार पुत्र छिद्दू (उम्र लगभग 60 वर्ष) और दिन्ना पुत्र सोहन (उम्र लगभग 32 वर्ष) ट्रैक्टर (स्वराज) पर सवार होकर मौदहा से कल्टीवेटर खरीद कर वापस अपने गांव लौट रहे थे। वापसी के दौरान बजरंगी डेरा-पढ़ौरी रोड पर ट्रैक्टर असंतुलित होकर पलट गया,इस दुर्घटना में रामप्रकाश पुत्र भोला निषाद को गंभीर चोटें आई। स्थानीय लोगों की सहायता से उन्हें तत्काल छ्याष्ट मौदहा लाया गया, जहां से प्राथमिक उपचार के उपरांत उन्हें जिला अस्पताल हमीरपुर रेफर किया गया। मृतक के पुत्र श्रीराम ने बताया कि रामप्रकाश की जिला अस्पताल ले जाते समय रास्ते में ही मृत्यु हो गई। पुलिस द्वारा शव को कब्जे में लेकर पंचायतनामा/पोस्टमार्टम को भेज दिया अचानक हुई इस घटना से मृतक के परिवार में कोहराम मचा हुआ है।

जय बुन्देलखण्ड महाविद्यालय में पौधे लगाकर पर्यावरण बचाओ का दिया संदेश

कुलपहाड़ (महोबा)। वृहद पौधारोपण अभियान के तहत नगर के जय बुन्देलखण्ड महाविद्यालय में एक पेड़ मां के नाम पौधे लगाकर पर्यावरण बचाओ का संदेश दिया।बता दें कि पौधारोपण अभियान को सफल बनाने के लिए जगह-जगह पौधारोपण कार्यक्रम किए जा रहे हैं।इसी के तहत नगर के जय बुन्देलखण्ड महाविद्यालय में एक पेड़ मां के नाम कार्यक्रम के तहत समस्त स्टाफ द्वारा विभिन्न किस्म के पौधारोपण कर वृक्ष लगाओ पर्यावरण बचाओ का संदेश दिया गया।इस अभियान में शामिल विधालय निदेशक छोटेलाल, कृष्णकांत, इखलाक अहमद, विपिन मिश्रा, अनूप यादव, नीरज, पुष्पा, फरहद, सचिन, दशरथ, अशोक सोनी, टुट्टी आदि स्टाफ मौजूद रहा।

राजस्व कार्यों की समीक्षा बैठक आयोजित

बांदा। जिलाधिकारी की अध्यक्षता में कलेक्टेउट सभागार में कर-करेत्तर एवं राजस्व कार्यों की समीक्षा बैठक हुई।बैठक में जिलाधिकारी ने स्टाम्प देयकों, आबकारी, व्यापार कर, परिवहन आदि विभागों की कर-करेत्तर वसूली की समीक्षा करते हुए संबंधित विभागों के अधिकारियों को निर्देश दिये कि कर करेत्तर वसूली में तेजी लायें तथा लक्ष्य के अनुरूप करों की वसूली को पूर्ण करें।परिवहन एवं आबकारी की वसूली बढाये जाने तथा प्रवर्तन कार्यों में तेजी लाने के निर्देश दिये।मण्डी की वसूली की समीक्षा में बबेरू एवं अतर्रा में करों की वसूली में तेजी लाने के निर्देश दिये।अमीन व आरसी की वसूली कराये जाने के निर्देश उप जिलाधिकारी एवं तहसीलदार को दिये।10 बडे बकायेदारों से धनराशि की वसूली किये जाने के संबंध में तेजी लाकर वसूली करने के निर्देश दिये।राजस्व कार्यों की समीक्षा करते हुए राजस्व वादों के निस्तारण में पुराने वादों का तेजी से निस्तारण किये जाने के निर्देश राजस्व विभाग के अधिकारियों को दिये।तहसीलदार एवं नायब तहसीलदार राजस्व वादों का तेजी से निस्तारण करें, पुराने कोई भी वाद लंबित नही रहने पायें।तहसीलों में कम्प्यूटर क्रय किये जाने तथा लेखपालों के बैठने हेतु फर्नीचर उपलब्ध कराये जाने के निर्देश दिये।

एडीएम ने दी निर्वाचन आयोग के प्रावधानों की जानकारी एवं बीएलओ ऐप का प्रशिक्षण

धौलपुर में बीएलओ प्रशिक्षण शिविर किया गया आयोजित

धौलपुर। जिला निर्वाचन अधिकारी श्रीनिधि बीटी के निर्देशन में उप जिला निर्वाचन अधिकारी हरिराम मीना की मौजूदगी में नगर परिषद सभागार मचकुंड रोड़ धौलपुर में बीएलओ प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया।

उप जिला निर्वाचन अधिकारी ने बताया कि मतदान केंद्र स्तर पर निर्वाचन संबंधी कार्यो के निष्पादन में बूथ लेवल ऑफिसर की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने बीएलओ और सुपरवाइजर को उनके दायित्व एवं शक्तियों की जानकारी दी। प्रशिक्षण शिविर में धौलपुर विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र 79 के भाग संख्या 101 से 150 के बूथ लेवल अधिकारियों को प्रशिक्षण दिया गया। मास्टर ट्रेनर डीएलएमटी अतुल चौहान और देवेंद्र बघेला, बालमुकुंद बंसल और श्याम बघेला ने प्रोजेक्टर के माध्यम से बीएलओ ऐप और वोटर हेल्पलाइन ऐप सहित प्रपत्र 6, 6क, 7 और 8 संबंधित प्रशिक्षण दिया। एईआरओ, रजिस्ट्रीकरण पदाधिकारी तहसीलदार धौलपुर अल्का श्रीवास्तव ने प्रशिक्षण शिविर को संबोधित करते हुए बीएलओ के दायित्व, जिम्मेदारी तथा निर्वाचन कौन कर सकता है और कौन नहीं संबंधी जानकारी दी गई। निर्वाचक नामावली से संबंधित क्षेत्र, भाग में आवंटित सेक्शन, मोहल्लों और आवंटित निर्वाचकों के संख्या की जानकारी प्राप्त करने की जानकारी दी। कार्यक्रम में ईआरओ कार्यालय के बृजमोहन कुलश्रेष्ठ, पुनीत, मनीष, स्वीप मीडिया सेल के भगवान सिंह मीना सहित सभी बीएलओ मौजूद रहे। अधिकारियों ने निर्वाचन आयोग के प्रावधानों की विस्तृत जानकारी भी प्रतिभागियों को दी। सभी बीएलओ ने 5 -5 के ग्रुप बनाकर रोल प्ले, समूहों का गठन कर घर घर सर्वेक्षण गतिविधियों का आयोजन किया गया।

झांसी ने निभाई धरती मां के प्रति जिम्मेदारी जिलेभर में हुआ बृहद वृक्षारोपण

एक पेड़ मां के नाम अभियान-पर्यावरणीय उत्तरदायित्व और मातृ सम्मान का अद्भुत संगम : प्रभारी मंत्री

समय जगत , झांसी । उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा संचालित ष्एक पेड़ मां के नामष् अभियान के द्वितीय चरण के अंतर्गत आज जनपद में एनएच-44 बीएचईएल के समीप जिला स्तरीय वृक्षारोपण कार्यक्रम भव्य रूप से आयोजित किया गया।

राज्यमंत्री(स्वतंत्र प्रभार) होमगार्ड्स एवं नागरिक सुरक्षा विभाग उत्तर प्रदेश तथा जिले के प्रभारी मंत्री श्री धर्मवीर प्रजापति और शासन द्वारा नामित प्रमुख सचिव, माध्यमिक शिक्षा विभाग एवं जनपद नोडल अधिकारी श्री चंद्र भूषण सिंह एवं जनपद के समस्त जन प्रतिनिधियों की उपस्थिति में जिलेभर में वृक्षारोपण अभियान का भूमि पूजन करते हुए शुरुआत हुई, जिसमें सभी ग्राम पंचायतों और नगर निकायों में नागरिकों की सहभागिता से वृहद स्तर पर वृक्षारोपण किया गया।

कार्यक्रम में राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) होमगार्ड्स एवं नागरिक सुरक्षा विभाग तथा जिले के प्रभारी मंत्री श्री धर्मवीर प्रजापति ने प्रतिभाग करते हुए कहा कि प्रकृति का संरक्षण एवं संवर्धन करना हम सभी की नैतिक जिम्मेदारी है। उन्होने कहा कि पर्यावरण हमारे जीवन का अंग बनना चाहिए। वृक्ष मानव जीवन के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं क्योंकि यह जल संरक्षण, कार्बन डाइऑक्साइड अवशोषण, पर्यावरण संतुलन, छाया, फल, औषधीय गुण एवं भवन निर्माण सामग्री के प्रमुख स्रोत हैं। वृक्षों के बिना जीवन की कल्पना संभव नहीं है। प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है कि पौधों की नियमित सिंचाई, सुरक्षा और देखभाल सुनिश्चित करें। उन्होंने मा0 मुख्यमंत्री जी की मंशा को दोहराते हुए कहा कि प्रदेश में 37 करोड़ पौधों का लक्ष्य निर्धारित किया गया है इसके लिए हर व्यक्ति को पौधे लगाने के संकल्प के साथ आगे आना होगा ताकि उत्तर प्रदेश में हरित क्रांति लाई जा सके राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) होमगार्ड्स एवं नागरिक सुरक्षा विभाग श्री धर्मवीर प्रजापति ने अपने उद्बोधन में उपस्थित स्कूली बच्चों को प्रकृति से जुड़ने के लिए वृक्षारोपण करने का आव्हान किया और लगाए गए पौधे को अपने परिजन की तरह पालन पालन करने का सुझाव दिया। उन्होंने कहा कि कोरोना काल में सभी शुद्ध वातावरण में रहने लगे थे। प्रकृति शुद्ध हो गई थी, क्या हम उसका अनुसरण नहीं कर सकते? उन्होंने उपस्थित बच्चों को प्लास्टिक मुक्त जनपद बनाए जाने के लिए प्रेरित करते हुए कपड़े के थैले इस्तेमाल करने का सुझाव दिया। उन्होंने कोरोना काल के दौरान पेड़ के महत्व को बताते हुए कहा कि पीपल, नीम, तुलसी के पौधे 24 घंटे आक्सीजन देते हैं और इसके लिए हमें एक भी पैसा खर्च नहीं करना पड़ता, जबकि पंखा/एसी चलाने पर बिजली का पैसा देना पड़ता है।वृक्षारोपण कार्यक्रम में जिलाधिकारी श्री मृदुल चौधरी ने कहा कि ष्एक पेड़ माँ के नामष् अभियान पर्यावरणीय उत्तरदायित्व और मातृ सम्मान का अद्भुत संगम है। प्रदेश में 37 करोड़ वृक्षारोपण का लक्ष्य निर्धारित है, 01 करोड़ पौधों के रोपण में झांसी वासियों की सहभागिता है। उन्होंने कहा कि पूर्व के अधिकारियों द्वारा अच्छा कार्य करने पर ही यह लक्ष्य आवंटित किया गया है। यह एक चुनौती है इसे सरकारी विभागों के साथ ही जन सहभागिता से पूर्ण किया जाएगा।

जिलाधिकारी ने इस अवसर पर प्रकृति के अधाधुंध दोहन से होने वाले कुप्रभाव की जानकारी दी और आने वाली पीढ़ी को सुखद भविष्य और शुद्ध पर्यावरण देने के लिए वृक्षारोपण किए जाने का अनुरोध भी किया। जिलाधिकारी ने उपस्थित स्कूली बच्चों सहित आमजन को संबोधित करते हुए कहा कि हमें दैनिक दिनचर्या में बदलाव लाना होगा। प्रकृति का जो दोहन करते हैं उससे हमें नुकसान हो रहा, इससे बचने के लिए हमें अधिक से अधिक वृक्षारोपण करना होगा।

जिलाधिकारी ने बताया कि इस अभियान की निगरानी ओपन सोर्स सैटेलाइट इमेजिंग से की जाएगी। इससे प्रत्येक क्षेत्र में पौधों की संख्या, वृद्धि एवं जीवित रहने की दर का आंकलन सम्भव होगा। कार्यक्रम के दौरान उन्होंने बताया कि पुलिस लाइन परिसर सहित नगर पंचायत क्षेत्रों में फलदार, औषधीय एवं छायादार पौधों का चयनित रोपण किया गया है। सभी विभागाध्यक्ष, स्वयंसेवी संस्थाएं, ग्राम प्रधान एवं युवा संगठन भी इस महाअभियान में योगदान दे रहे हैं। अभियान का उद्देश्य केवल रोपण तक सीमित न होकर पौधों की देखरेख, सिंचाई, सुरक्षा, ट्री गार्ड की व्यवस्था और दीर्घकालीन निगरानी सुनिश्चित करना है। मा0 मुख्यमंत्री जी के नेतृत्व में उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा हरित प्रदेश के निर्माण हेतु यह अभियान मिशन मोड में संचालित किया जा रहा है।

जिलाधिकारी ने कहा कि ÷एक पेड़ मां के नाम÷ अभियान केवल वृक्षारोपण तक सीमित न होकर मां के प्रति श्रद्धा, परिवार के प्रति उत्तरदायित्व और धरती मां के प्रति कृतज्ञता का प्रतीक बन गया है। पौधे को मां के नाम समर्पित करने से नागरिकों में आत्मीयता, लगाव और संरक्षण का भाव विकसित हो रहा है, जो किसी भी नीति को जनआंदोलन में बदलने का वास्तविक मंत्र है।

इस अवसर पर जिला पंचायत अध्यक्ष श्री पवन गौतम, विधायक सदर श्री रवि शर्मा, विधायक मऊरानीपुर डॉ रश्मि आर्या, सदस्य विधान परिषद श्रीमती रमा निरंजन, सदस्य विधान परिषद श्री रामतीर्थ सिंघल ने भी पर्यावरण संरक्षण और संवर्धन का संदेश देते हुए वृक्षारोपण के महत्व को बताया और ष्एक पेड़ माँ के नामष् कार्यक्रम स्थल पर वृक्षारोपण कर जनपद वासियों को भी वृक्षारोपण करने का संदेश दिया।

कार्यक्रम में जिलाधिकारी श्री मृदुल चौधरी ने नीम का पौधा लगाया, मुख्य विकास अधिकारी जुनैद अहमद, अपर जिलाधिकारी वित्त एवं राजस्व श्री वरुण कुमार पाण्डेय, अपर जिलाधिकारी नमामि गंगे श्री योगेन्द्र कुमार, नगर मजिस्ट्रेट श्री प्रमोद झा, उप जिलाधिकारी सदर श्री गोपेश तिवारी, मण्डलीय कमाडेण्ट होमगार्ड्स श्री पीयूष कान्त, उप कृषि निदेशक श्री एम0पी0सिंह, सहायक निदेशक सूचना श्री सुरजीत सिंह, बीएचईएल के अधिकारियों सहित सभी विभागीय अधिकारी, स्वयंसेवी संस्थाओं के प्रतिनिधि और स्कूली बच्चों ने भाग लेकर पौधारोपण किया। सभी ने 'एक पेड़ मां के नाम' को जन आंदोलन बनाने का संकल्प लिया, ताकि उत्तर प्रदेश हरित आच्छादन के क्षेत्र में देश का अग्रणी राज्य बन सके।

कार्यक्रम के समापन पर विभागीय वनाधिकारी श्री नीरज कुमार आर्य ने मा0 प्रभारी मंत्री, नोडल अधिकारी सहित समस्त जन प्रतिनिधियों के प्रति आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर कलाकार हरविन्द कुमार नीरज एवं रीना यादव ने सांस्कृतिक कार्यक्रम/लोकगीत के माध्यम से वृक्षारोपण करने हेतु सभी का आव्हान किया गया। कार्यक्रम का सफल संचालन लोकभूषण श्री पन्नालाल असर ने किया।

गुरुओं का हुआ सम्मान एवं विचार गोष्ठी संपन्न

समय जगत झाँसी। श्रावण मास समारोह महासमिति एवं युवा ब्राम्हण महासंघ के संयुक्त तत्वावधान में गुरु पूर्णिमा पर्व की पूर्व संध्या पर रानीमहल स्थित गोपीनाथ जी का मंदिर में गुरू सम्मान समारोह एवं विचार गोष्ठी का आयोजन राज्यमंत्री हरगोविन्द कुशवाहा के मुख्य आतिथ्य तथा अध्यक्ष रवीश त्रिपाठी की अध्यक्षता में हुआ।

सर्वप्रथम कुछ गुनगुन पाठक ने गुरू वंदना प्रस्तुत की। मुख्य अतिथि हरगोविन्द कुशवाहा ने कहा कि गुरु के बताये हुए मार्ग से ही मनुष्य का कल्याण संभव है तथा बिना गुरु के जीवन व्यर्थ है। गुरू का सम्मान अनादि काल से होता चला आ रहा है। आज के युवाओं को गुरू का सम्मान करना अति आवश्यक है। गुरू ही मनुष्य को अंधकार से प्रकाश की ओर ले जा सकता है।

गुरूओं का सम्मान सर्वश्रेष्ठ सम्मान है।अध्यक्षता कर रहे रवीश त्रिपाठी ने कहा कि नयन अमीय द्रव्य दोष, विभिन्जन गुरू कृपा के द्वारा व्यक्ति के जीवन की कालिका (दोष, पाप, संताप) आदि नष्ट हो जाते हैं। ज्ञान के उदय का कारक भी गुरू ही है। गुरू के बिना संसार रूपी समुद्र से कोई व्यक्ति पार नहीं हो सकता।गुरू सम्मान समारोह में जिलाधर्माचार्य महन्त पं0 विष्णु दत्त स्वामी, महानगर धर्माचार्य पं0 हरिओम पाठक, पं0 रामेश्वर प्रसाद उपाध्याय, पं0 जगदीश मिश्रा, कालीचरन जारौलिया, चिन्तामणि दुबे, सुरेन्द्र तिवारी, पं0 कमल व्यास, मनोज चतुर्वेदी, महेश पाण्डे, बालकृष्ण नायक, विनोद समाधिया, सुरेश खेबरिया, हरिशंकर चतुर्वेदी, अनूप पाठक, राधे चौबे, संजीव दुबे, कुलदीप शर्मा, शिव नायक, शुभम दुबे, मार्तण्ड स्वामी, राजेश तिवारी, अभिमन्यु व्यास, सुरेश कुमार शर्मा, अनिल शर्मा, डब्बू गोस्वामी, संगम शर्मा, राघवेन्द्र पटवारिया आदि गुरूओं को हरगोविन्द कुशवाहा तथा अध्यक्ष रवीश त्रिपाठी ने पीताम्बर एवं श्रीफल भेंटकर सम्मानित किया।गोष्ठी में धर्म गुरूओं के चरणों में शीश झुकाते हुए विनोद अग्रवाल, राजकुमार अमरया, रजत त्रिपाठी, मयंक श्रीवास्तव पार्षद, अंकुर अग्रवाल, पी के उपाधयाय, मुकेश सिंघल, चन्द्रप्रकाश मिश्रा आदि ने कहा कि गुरू के बिना ज्ञान असंभव है। जन्म से माता, कर्म में पिता, धर्म में शिक्षक, मर्म में गुरू ही जीवन के प्रदाता हैं। गुरू ज्ञानियों के नेत्र का स्वच्छ अंजन है। गुरू के बिना कोई पार नहीं हो सकता है।

वभिन्न वक्ताओं ने गुरू की महिमा का गुणगान करते हुए गुरू के तेज पुंज अस्तित्व आशीष एवं दया करूणा का विस्तृत उल्लेख करते हुए गुरू चरणों में नमन करने की अपील की। संचालन संजीव त्रिपाठी ने किया अन्त में आभार मार्तंड स्वामी ने व्यक्त किया।

प्रथम नगर आगमन पर स्वर्ण पदक विजेता इमरोज का किया भव्य स्वागत एवं अभिनंदन

समय जगत झांसी। इमरोज खान ने अमेरिका में विश्व पुलिस बॉक्सिंग गेम में स्वर्ण पदक विजेता ने देश का नाम रोशन करने के साथ-साथ झांसी की माटी का गौरव बढ़ाने पर ओरछा गेट व्यापार मंडल द्वारा एवं पदाधिकारी द्वारा भव्य स्वागत एवं अभिनंदन किया गया !

यह सम्मान समारोह उत्तर प्रदेश व्यापार मंडल के प्रदेश अध्यक्ष एवं कैट के राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष संजय पटवारी के मुख्य अतिथि में संपन्न हुआ ! सम्मान समारोह में ओरछा गेट व्यापार मंडल के अध्यक्ष हाजी चौधरी नफीस कूलर वाले, महामंत्री राजू बसरानी, सीताराम कुशवाहा ने एवं अन्य पदाधिकारी ने इमरोज को झांसी रानी की मूर्ति, शाल, श्रीपाल देकर सम्मानित किया !

इस अवसर पर स्वर्ण पदक विजेता इमरोज ने कहा कि झांसी की ऊर्जावान माटी व माता-पिता के सहयोग से में इस मुकाम पर पहुंची हूं भविष्य में झांसी और देश का नाम रोशन करते हुए मुक्केबाजी में और की पदक देश के लिए लाऊंगी इस अवसर पर बृजेश पाखरे, जयंत कुशवाहा, मेवालाल, राहुल साहू, मंगल मिठाई, कुलदीप सिंह दांगी दिलीप अग्रवाल आदि ने भी इमरोज को सम्मानित किया ।

जे.सी.आई झांसी उड़ान ने बताया राजकीय कन्या इंटर कॉलेज भोजला में स्वच्छता का महत्व व बांटी सैनिटरी नैपकिन

समय जगत झाँसी। जे.सी.आई झांसी उड़ान द्वारा मासिक धर्म जैसे संवेदनशील विषय पर किशोरियों में जागरूकता फैलाने के उद्देश्य से राजकीय कन्या इंटर कॉलेज, भोजला, झाँसी में एक विशेष प्रशिक्षण एवं संवाद कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में मुख्य प्रशिक्षक के रूप में प्रसिद्ध स्त्री रोग विशेषज्ञ डा. प्रिया दीक्षित (होम्योपैथी चिकित्सक, झाँसी) ने भाग लिया और किशोरियों को मासिक धर्म के दौरान स्वच्छता बरतने, सावधानियों, मिथकों और वैज्ञानिक तथ्यों पर आधारित गहन जानकारी प्रदान की।कार्यक्रम विद्यालय की छात्राओं के साथ-साथ शिक्षिकाएं भी सक्रिय रूप से उपस्थित रहीं। डॉ. दीक्षित ने मासिक धर्म से जुड़े मानसिक और शारीरिक बदलावों पर विस्तार से प्रकाश डाला।

उन्होंने सरल भाषा में किशोरियों को बताया कि मासिक धर्म कोई बीमारी नहीं, बल्कि एक सामान्य जैविक प्रक्रिया है, जिसे समझना और सही जानकारी रखना अत्यंत आवश्यक है। डा. अशोक कुमार वर्मा प्राधानाचार्य राजकीय बालिका इण्टर कॉलेज भोजला झांसी ने कार्यक्रम के प्रति संस्था की प्रतिबद्धता प्रकट करते हुए कहा कि हमारा प्रयास है कि समाज के प्रत्येक वर्ग विशेषकर किशोरियों को सही जानकारी और संसाधन उपलब्ध कराए जाएं, ताकि वे आत्मनिर्भर और जागरूक बन सकें।कार्यक्रम में जेसीआई झाँसी उड़ान के अध्यक्ष डॉ. प्रवीण गुप्ता ने भी किशोरियों को संबोधित करते हुए कहा कि इस प्रकार के आयोजनों से न केवल जागरूकता बढ़ती है, बल्कि समाज में महिलाओं की गरिमा और आत्मबल को भी मजबूती मिलती है। कार्यक्रम के अंतर्गत एक जागरूकता संवाद सत्र, प्रश्नोत्तर सत्र तथा सैनिटरी नैपकिन का निःशुल्क वितरण किया गया। उपस्थित सभी छात्राओं को हल्का जलपान भी प्रदान किया गया।

इस अवसर पर झाँसी की प्रतिष्ठित संस्था प्रवीण फर्मेसी एंण्ड मेडीकल्स जो कि एक मात्र निर्माता कम्पनी है ने निशुल्क सैनेटरी नेपकिन वितरण का कार्यक्रम जेसीआई के तत्वाधान में किया, प्रवीण फर्मेसी समय समय पर महिलाओं की स्वास्थ्य सुरक्षा के लिए समर्पित अभियान हेतु नेपकिन का यह निशुल्क वितरण करती आई है। कार्यक्रम में उपस्थित जेसीआई झांसी उड़ान के सदस्यों में प्रमुख रूप से दिलीप कुलदीप चौकसें, शैलेन्द्र गुप्ता, आकाश अग्रवाल, चन्द्रमोहन अग्रवाल, निधि अग्रवाल, दीप्ति गुप्ता, रश्मि अग्रवाल, आदि शामिल रहे। जिन्होंने आयोजन को सफल बनाने में सक्रिय भूमिका निभाई। इस सराहनीय पहल से विद्यालय में सकारात्मक ऊर्जा का संचार हुआ और छात्राओं ने खुलकर प्रश्न पूछे व समाधान प्राप्त किया। कार्यक्रम ने यह संदेश दिया कि मासिक धर्म पर खुलकर बात करना समय की मांग है, न कि शर्म का विषय।

बीकेडी में एक वृक्ष माँ के नाम कार्यक्रम के तहत फलदार एवं छायादार पौधे रोपे गये

समय जगत, झांसी। बुन्देलखण्ड कॉलेज झाँसी में उत्तर प्रदेश शासन के आदेश के अनुपालन में ''एक वृक्ष माँ के नाम'' कार्यक्रम के तहत फलदार एवं छायादार पौधा रोपण झाँसी जनपद के जिला पंचायत अध्यक्ष पवन गौतम के मुख्य आतिथ्य एवं पूर्व केंद्रीय राज्य मंत्री प्रदीप जैन आदित्य, पुरातन छात्र समिति अध्यक्ष प्रदीप सरावगी, पुरातन छात्र समिति के महामंत्री एड. विवेक कुमार बाजपेई तथा प्राचार्य प्रो. एस.के. राय के नेतृत्व में किया गया। इस कार्यक्रम में लगभग 500 पौधों का रोपण हुआ जिसमें सहजन, आंवला, आम एवं सागौन आदि प्रमुख वृक्ष थे।

मुख्य अतिथि ने वृक्षों को सुरक्षित करने हेतु सभी को संकल्पवद्ध किया। इस कार्यक्रम में डॉ. अरविन्द परमार, चन्द्रभान राय, भूपेन्द्र आर्य, एड. बी.एल. भास्कर, संजीव अग्रवाल, हरीश लाला, संतराम चौधरी, अमित पचौरी, नितिन बाजपेई, शैलेंद्र प्रताप सिंह, सुदर्शन शिवहरे, डॉ. मनमोहन मनु, नन्दकिशोर भिलवारे, नीलू साहू, अनुराधा सिंह, रितु हंस, श्रद्धा यादव, अनिल रिछारिया आदि उपस्थित रहे। प्रो. एल.सी. साहू ने संचालन तथा प्रो. जितेंद्र कुमार तिवारी ने आभार व्यक्त किया।

खराब हैंड पंप को ठीक कराए जाने की मांग

गुरसरांय। मु0 गाँधी नगर वार्ड नं 3 ब्लॉक के पीछे परशुराम कोरी के मकान के पास लगा हैंड पंप दस दिन से खराब पड़ा हुआ है। जिससे मुहल्ला वासियों काफी परेशानी हो रही है। वार्ड के पार्षद राजीव कुमार ने जल संस्थान अधिकारी को खराब पड़े हैंडपंप ठीक करवाये जाने की मांग की है ।

गुरुपूर्णिमा पर संगीत गोष्ठी एवं गुरुपूजन आज

गुरसरांय। गुरुपूर्णिमा उत्सव पर संगीतगुरु पं परशुराम पाठक के शिष्यों द्वारा गुरुपूजन एवं संगीत गोष्ठी का आयोजन मैहर घराने की गुरुकुल पीठ माँ शारदा संगीत विद्यालय टीचर्स कॉलोनी गुरसरांय में आज 10 जुलाई को दोपहर 12 से होगा।उक्त जानकारी पं सरजू शरण पाठक सितारवादक ने दी।

आर्यन गोस्वामी का दिल्ली स्पोर्ट्स यूनिवर्सिटी में 100 मीटर में चयन, बढ़ाया बरूआसागर नगर का मान

फिजिकल एजुकेशन सोशल बेलफेयर फाउंडेशन ग्रामीण स्तर की खेल प्रतिभाओं को दे रहा निशुल्क प्रशिक्षण

समय जगत, बरूआसागर । नगर का गौरव बढ़ाने वाले आर्यन गोस्वामी का दिल्ली स्पोर्ट्स यूनिवर्सिटी में 100 मीटर इवेंट के लिए कक्षा 8वी चयन हुआ है।आर्यन फिजिकल एजुकेशन सोशल बेलफेयर फाउंडेशन संबद्धता उत्तर प्रदेश ऑलंपिक एसोसिएशन में विगत 5 वर्षो से निशुल्क प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे, आर्यन गोस्वामी के कोच रिंकू परिहार ने बताया कि आर्यन संस्कृति संस्कार पब्लिक स्कूल में कक्षा 7 में अध्यनरत है आर्यन को बचपन से ही एथलेटिक्स में शौक था लगातार कठिन मेहनत कर एक बड़ा मुकाम हासिल कर नगर का गौरवान्वित किया,उनके पिता एक टावर पर कार्य करते है यह खबर न केवल आर्यन के लिए बल्कि पूरे नगर के लिए खुशी की बात है।आर्यन की इस उपलब्धि से नगर के बच्चों,युवाओं को प्रेरणा मिलेगी और वे भी खेलों में अपना भविष्य बनाने के लिए प्रोत्साहित होंगे खुसी के अवसर पर फाउंडेशन चेयरमैन हैप्पी चावला एवं डॉ रोहित पांडे ने बधाई देते हुए बताया कि आर्यन की मेहनत और समर्पण ने उन्हें इस मुकाम तक पहुंचाया है,और हमें उम्मीद है कि वह गाव से निकल कर दिल्ली स्पोर्ट्स यूनिवर्सिटी में अपने खेल का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करेंगे।बरूआसागर नगर के लोगों को अपनी इस प्रतिभा पर गर्व है और हमें उम्मीद है कि आर्यन आगे भी नगर का नाम रोशन करेंगे ।

वही एथलेटिक्स झाँसी सचिव अर्जुन सिंह चौहान ने भी बधाई देते हुए बताया आर्यन की इस सफलता से जिले में खेलों के प्रति रुचि बढ़ेगी और युवाओं को अपने सपनों को पूरा करने के लिए प्रेरित किया जा सकेगा। हमें आर्यन की इस उपलब्धि पर गर्व है और हमें उम्मीद है कि वह भविष्य में भी अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करते रहेंगे,नगर के गणमान्य नागरिक जिला पंचायत सदस्य विनीता अमर सिंह कुशवाहा, नगर पालिका अध्यक्ष सुशीला कुशवाहा ,मीनु राजावत ,उदय पांडे एडगर जेरालड़,डॉ सोनी द्वारा आर्यन को बधाई सम्मान किया गया ।

इस मौके पर संरक्षक अशोक अग्रवाल,प्रमोद कुमार अग्रवाल रविकांत मिश्रा उपाध्याय बृजेंद्र यादव,मीनु राजावत दिनेश मिश्रा,दीपक कुशवाहा फाउंडेशन सह सचिव श्वेता राय,शिवानी राय एवं डॉ जितेंद्र सिद्धार्थ जयदेवी अभय सिंह,अनुराग सिंह अभिषेक देवेन्द्र राजपूत,देवेन्द्र कुशवाहा ,दीक्षा, हरि कुशवाहा मनोज कुशवाहा आदि लोगों ने बधाई शुभकामनाएं दीं ।

बाल मंदिर के अध्यक्ष संजय पटवारी महामंत्री के. के. गुप्ता बने

समय जगत, झांसी। महारानी लक्ष्मीबाई बाल मंदिर जूनियर हाईस्कूल झांसी की कार्यकारिणी की बैठक आहूत की गयी जिसमें 2025-2027के लिये नवीन कार्यकारिणी के पदाधिकारियों का निर्वाचन किया गया ।

जिसमें अध्यक्ष -श्री संजय पटवारी वरिष्ठ उपाध्यक्ष -श्री जितेन्द्र लहारिया कनिष्ठ उपाध्यक्ष -श्री राहुल सक्सेना प्रबंधक -श्री कृष्ण कांत गुप्ता उपप्रबंधक -श्री धर्मेंद्र कुशवाहा कोषाध्यक्ष -श्री के के अग्रवाल आडीटर-श्री सिध्दार्थ अग्रवालसदस्यश्री गिरिजा शंकर तिवारी, नाथूलाल मट्ठा, देवी सिंह कुशवाहा,सालिगराम राय, अशोक कुमार गुप्ता, जगदीश कौशल, विक्रांत सेठ, संतोष कुमार गुप्ता, राजेश अग्रवाल, ओमप्रकाश कोहली,सुनील कोहली, विशेष आमंत्रित सदस्य प्रशांत तिवारी, रामू गुप्ता, सुदर्शन शिवहरे, मनमोहन मनु, जयप्रकाश अग्रवाल, अरविन्द मट्ठा ! उक्त निर्वाचन मातृसंस्था बुंदेलखंड सेवा मंडल के पर्यवेक्षक गजानन खानवलकर एवं महामंत्री श्री नरोत्तम दास अग्रवाल की विशेष उपस्थिति में संपन्न हुआ !

सितारवादक पं. सरजू शरण पाठक आकाशवाणी की शास्त्रीय एवं सुगम संगीत की चयन समिति में हुए नामित

समय जगत, झांसी। भारत सरकार का लोक सेवा प्रसारक प्रसार भारती के आकाशवाणी छतरपुर के उप महानिदेशक द्वारा नगर के खेर इंटर कॉलेज के संगीत विभागाध्यक्ष एवं प्रसिद्ध सितार वादक तथा संगीतकार पंडित सरजू शरण पाठक को आकाशवाणी छतरपुर की शास्त्रीय संगीत एवं सुगम संगीत के स्वर परीक्षण हेतु निर्णायक मंडल में नामित किया गया है ।आकाशवाणी के प्रसार निष्पादक रविन्द्र कुमार प्रजापति ने उनका चयन पत्र देकर उन्हें बधाई

दी।आकाशवाणी द्वारा उनके नामित किए जाने पर बुंदेलखंड के शास्त्रीय संगीत एवं सुगम संगीत के कलाकारों को नई दिशा एवं प्रोत्साहन मिलेगा ।उनके चयन पर नगर के देवेश पालीवाल,प्रधानाचार्य धनप्रकाश तिवारी, मेजर अखिलेश पिपरैया, पूर्व जिलाध्यक्ष जगमोहन समेले,पत्रकार राम कुमार सिंह,साहित्यकार डॉ सुकदेव व्यास,रमेश मौर्य,अशोक सेन ,देवेंद्र घोष सहित बुद्ध जीवियों,साहित्यकारों,पत्रकारों एवं संगीतकारों ने हर्ष व्यक्त किया है।

राजकीय इंटर कॉलेज खड़ौरा में हुआ वृक्षारोपण

समय जगत, गुरसरांय। राजकीय इंटर कॉलेज खड़ौरा में वृक्षारोपण कार्यक्रम किया गया, जिसमें विधार्थियो नें विभिन्न प्रकार के पौधे रोपे पौधा रोपण करने के बाद प्रधानाचार्य हेम कुमार प्रजापति ने कहा कि पौधों का रोपण एवं उनका रखरखाव करना हम सभी का दायित्व है।सभी अधिक से अधिक पौधों को लगाएं। इस मौके पर शिक्षक हरिशंकर सोनी, हेमन्त मिश्रा, सुधीर गौतम,ओमप्रकाश मिश्रा,चौकीदार गणेश उपस्थित रहे।

ओवरएज्ड वाहनों पर लगा फ्यूल बैन हटा

सिरसा ने लिखा था सीएक्यूएम को पत्र

नई दिल्ली। बता दें कि राजधानी में 10 साल से अधिक पुराने डीजल, 15 साल से अधिक पुराने पेट्रोल वाहनों को ईंधन देने से रोक लगा दी गई थी। जिस पर दिल्ली सरकार ने यू-टर्न लेते हुए पुराने वाहनों की जब्ती का अभियान रोक दिया था। राजधानी में 15 साल पुरानी पेट्रोल और 10 साल पुरानी डीजल गाड़ियों पर लगी ईंधनबंदी फिलहाल हटा दी गई है। यह फैसला वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग (सीएक्यूएम) की 24वीं बैठक में मंगलवार को लिया गया। ऐसे में आयोग ने अपने फैसले में कहा है कि एएनपीआर कैमरा सिस्टम या ईंधन पंप स्टेशनों पर स्थापित अन्य ऐसी प्रणालियों के माध्यम से पहचाने गए सभी समय पूरा कर चुके वाहन (ईओएल) वाहनों को दिल्ली, गुरुग्राम, फरीदाबाद, गाजियाबाद, गौतमबुद्ध नगर और सोनीपत के पांच उच्च वाहन घनत्व वाले जिलों में 1 नवंबर, 2025 और शेष एनसीआर में 1 अप्रैल, 2026 से ईंधन भरने से मना कर दिया जाएगा। आयोग ने कहा है कि ऐसे ईओएल वाहनों के संबंध में तत्काल कानूनी कार्रवाई की जाएगी, जिसमें आरवीएसएफ नियम, 2021 और अन्य मौजूदा प्रावधानों के अनुसार जब्त करना और आगे का निपटान करना शामिल है। इसके अलावा, दिल्ली सरकार और एनसीआर राज्यों के परिवहन विभाग को एएनपीआर प्रणाली की उचित स्थापना और संचालन सुनिश्चित करने का निर्देश दिया गया है। परिवहन विभागों को यह भी सुनिश्चित करने का निर्देश दिया गया है कि एएनपीआर प्रणाली का परीक्षण किया जाए और समय पर जनशक्ति का प्रशिक्षण किया जाए। वे ईंधन स्टेशनों सहित सभी हितधारकों के बीच इस निर्देश का व्यापक प्रचार-प्रसार करेंगे और प्रभावी प्रवर्तन उपायों के माध्यम से इसका सख्त अनुपालन सुनिश्चित करेंगे। साथ ही, ईओएल के बड़े बेड़े के परिसमापन की दिशा में सभी संबंधित एजेंसियों की तरफ से शुरू की गई समन्वित कार्रवाइयों की रिपोर्ट मासिक आधार पर आयोग को दी जाएगी। बता दें कि पिछले दिनों राजधानी में ओवरएज हो चुके वाहनों को फ्यूल देने पर रोक लगा दी गई थी। इस नियम की काफी आलोचना हो रही थी। यहां तक कि इसको लेकर सियासत भी खूब हो रही थी। आम आदमी पार्टी लगातार दिल्ली की रेखा गुप्ता सरकार पर हमले बोल रही थी। इसके बाद दिल्ली सरकार ने प्रदूषण नियंत्रण निकाय से इस नियम को वापस लेने के लिए पत्र लिखा था। दिल्ली सरकार के पर्यावरण मंत्री मनजिंदर सिंह सिरसा ने प्रदूषण नियंत्रण निकाय को पत्र लिखकर ओवरएज हो चुके वाहनों के लिए ईंधनबंधी के फैसले पर रोक लगाने को कहा था। उन्होंने कहा था कि आग्रह है कि आदेश को तत्काल प्रभाव से तब तक के लिए रोक दिया जाए जब तक कि ऑटोमेटिक नंबर प्लेट पहचान (एएनपीआर) सिस्टम पूरे एनसीआर में इंटिग्रेट नहीं हो जाता। आदेश की लगातार हो रही आलोचना और सियासी हमलों के बीच उपराज्यपाल वीके सक्सेना ने भी इस मसले पर मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता को एक पत्र लिखा था। उन्होंने ओवरएज वाहनों को फ्यूल नहीं देने की योजना पर गंभीर आपत्ति जताते हुए कहा था कि दिल्ली अभी इस तरह के प्रतिबंध के लिए तैयार नहीं है। इस फैसले से आम लोगों खास तौर पर मध्यम वर्गीय लोगों को भारी नुकसान होगा।

यह फैसला सामाजिक और आर्थिक दोनों ही लिहाज से उचित नहीं लगता। इसके बाद मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता का भी बयान सामने आया था। उन्होंने कहा था कि उनकी सरकार इस मामले में सुप्रीम कोर्ट का रुख करेगी। दिल्ली सरकार शीर्ष अदालत को प्रदूषण की रोकथाम के लिए उठाए गए कदमों की जानकारी देगी। साथ ही, गुजारिश करेगी कि वह राजधानी में ओवरएज वाहनों पर श के बाकी हिस्सों की तरह समान नियम लागू करने की इजाजत दे।

सार-समाचार

बेकाबू कार ने कांवड़िये को मारी टक्कर

गाजियाबाद। बेकाबू कार ने कांवड़ियि को टक्कर मार दी। जिस कारण कावड़ खंडित हो गई। इसके बाद कांवड़ियों ने कार चालक की धुनाई कर वाहनों में तोड़फोड़ शुरू कर दी। दिल्ली-मेरठ मार्ग पर राज चौपला के पास बेकाबू कार ने कांवड़िये को टक्कर मार दी। कावड़ खंडित होने से गुस्साए कांवड़ियों ने जमकर हंगामा कर वाहनों में तोड़फोड़ कर दी इस दौरान दिल्ली मेरठ मार्ग पर जाम लग गया। पुलिस ने आक्रोशित कांवडियो को कार्रवाई का भरोसा देकर शांत किया। राजस्थान स्थित मेवात के रहने वाले अनुज, ओम व हरकेश सहित कई शिवभक्त हरिद्वार से कांवड़ लेकर गंतव्य की तरफ जा रहे थे। मंगलवार रात करीब 10 बजे जब वह दिल्ली मेरठ मार्ग पर राज चौपला के पास पहुंचे तो बेकाबू कार ने टक्कर मार दी। जिस कारण कावड़ खंडित हो गई। इसके बाद कांवड़ियों ने कार चालक की धुनाई कर वाहनों में तोड़फोड़ शुरू कर दी। मौके पर पहुंची पुलिस ने किसी तरह स्थिति को संभाला और कांव डियो को गतव्य के लिए रवाना किया। करीब 15 मिनट तक दिल्ली मेरठ मार्ग पर जाम लगा रहा।

अघोषित बिजली कटौती से उपभोक्ता हो रहे हैं परेशान

फरीदादाद। गर्मी में अघोषित बिजली कटौती ने दिन का चैन और रात की नींद छीन ली है। लो-बोल्टेज के साथ ट्रिपिंग की समस्या से हाल-बेहाल हो गया है। बिजली निगम के अधिकारियों ने बेहतर आपूर्ति के लिए गर्मी से पहले ही व्यवस्था करने का दावा किया था, लेकिन बिजली आपूर्ति को लेकर यह दावे ध्वस्त होते नजर आ रहे हैं। निगम के कर्मचारियों को भी मशक्कत करनी पड़ रही है। ऐसे में उपभोक्ताओं को पांच से छह घंटों तक अघोषित कटौती, ट्रिपिंग व लो-वोल्टेज की समस्या से जूझना पड़ रहा है। मंगलवार को लो-वोल्टेज एवं बार-बार ट्रिपिंग होने से स्मार्ट सीटी के औद्योगिक क्षेत्र सहित करीब एक दर्जन क्षेत्रों में बिजली आपूर्ति प्रभावित रही। बिजली निगम के नियंत्रण कक्ष के अनुसार मांग के अनुरूप बिजली की सप्लाई नहीं हो पा रही है। बिजली निगम के अधीक्षण अभियंता जितेंद्र ढुल का कहना है कि गर्मी के कारण बिजली की मांग बढ़ गई है। ट्रांसफार्मर ओवरलोड होने के कारण काम करना बंद कर देता है। इसके साथ ही फाल्ट आ जाता है। इसकी सूचना मिलते ही उसे तुंरत दुरुस्त करने का प्रयास किया जा रहा है।

एक्सीडेंट में हुई युवक की मौत

फरीदाबाद। सुभाष कॉलोनी निवासी युवक की बाइक सोमवार रात को दीवार से टकरा गई। इस हादसे में युवक गंभीर रूप से घायल हो गया। उसे सरकारी अस्पताल में भर्ती करवाया गया, जहां उपचार के दौरान डॉक्टरों ने मृत घोषित कर दिया। मृतक की पहचान सुभाष कॉलोनी निवासी विक्की उर्फ विकास के रूप में हुई है। थाना आदर्श नगर पुलिस ने शव का पोस्टमार्टम करवाने के बाद परिजनों को सौंप दिया है।

निवाड़ी में तालाब किनारे मिला युवक का शव

गाजियाबाद। निवाड़ी क्षेत्र में गांव एमपी सिखैड़ा स्थित तालाब के पास मंगलवार सुबह एक अज्ञात युवक का शव बरामद हुआ। युवक के चेहरे पर चोट के निशान थे। मौके पर पहुंची पुलिस ने छानबीन कर शव पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। एसीपी ज्ञानप्रकाश राय ने बताया कि मंगलवार सुबह गांव एमपी सिखैड़ा में तालाब के पास युवक का शव पड़ा होने के सूचना मिली। जानकारी के बाद मौके पर पंहुची निवाड़ी पुलिस ने शव की शिनाख्त का प्रयास किया, मगर सफलता नहीं मिली। पुलिस के अनुसार मृतक की उम्र 35 वर्ष के आसपास है। ग्रामीणों ने पुलिस को बताया कि युवक पिछले तीन-चार दिन से तालाब के आसपास ही घूम रहा था। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार युवक के चेहरे पर चोट के निशान थे और चेहरा खून से सना हुआ था। उन्होंने हत्या की आशंका जताई। एसीपी ने बताया कि पोस्टमार्टम रिपोर्ट से मौत का कारण स्पष्ट होगा। शव की शिनाख्त का प्रयास किया जा रहा है।

सेल्समैन पर 17.37 लाख के गबन का लगा आरोप

इंदिरापुरम। कनावनी क्षेत्र में देसी शराब का ठेका संचालित करने वाले मेरठ के लालकुर्ती बाजार निवासी यादवेंद्र पांडे ने दुकान के सेल्समैन पर 17.37 लाख रुपये के गबन का आरोप लगाया है। आरोपी क्षेत्र का ही रहने वाला विनय जायसवाल है। आरोप है कि उसने दुकान की कमाई में से 26,87,985 रुपये का गबन किया। पकड़े जाने पर 9.50 लाख रुपये वापस किए, लेकिन बकाया रकम चुकाने से पहले ही भाग गया। पुलिस ने आरोपी की तलाश शुरू कर दी है। मामला एक जुलाई का है, हालांकि पुलिस ने सात जून को मुकदमा दर्ज कर आरोपी की तलाश शुरू की है। दर्ज मुकदमे में यादवेंद्र पांडे ने बताया कि कनावनी गांव के पुस्ता रोड पर उनका देसी शराब का ठेका है। ठेके पर विनय जायसवाल नामक सेल्समैन भी नौकरी करता था।

पेपर फैक्टरी में लगी आग बुझाने की जारी है मशक्कत

साहिबाबाद। लिंकरोड के औद्योगिक क्षेत्र साइट चार स्थित ईशान पेपर्स फैक्टरी में धधकी आग 36 घंटे बाद मंगवार को भी नहीं बुझ सकी। सोमवार सुबह करीब 3:30 बजे लगी आग को बुझाने के लिए मंगलवार शाम पांच बजे तक दमकल की टीमें कोशिश करती रहीं। बेसमेंट में भरे पेपर रोल में लगी आग बुझने का नाम नहीं ले रही है। वर्तमान में दमकल के पांच वाटर टेंडर मौके पर तैनात हैं। वहीं दमकल विभाग ने अग्निशमन मानकों का उल्लंघन मिलने पर पेपर व गत्ता फैक्टरी को नोटिस भेजने की तैयारी कर ली है। साथ ही आग किस तरह लगी इसकी जांच भी का जा रही है। सोमवार सुबह तड़के साइट चार में संचालित पेपर फैक्टरी ईशान पेपर्स और गत्ता फैक्टरी विकास ओवरसीज क्राफ्ट में आग लग गई थी। दमकल की 18 गाड़ियों की मदद से गत्ता फैक्टरी की आग को तो कर्मचारियों ने दीवार तोड़कर करीब तीन घंटे में बुझा दिया, लेकिन पेपर फैक्टरी की आग बेकाबू हो गई। इसकी वजह से थी बेसमेंट में मानकों का उल्लंघन करते हुए भरे गए पेपर रोल। यहां तक कि फैक्टरी के बेसमेंट में अग्निशमन उपकरणों की भी कमी थी। यहां तक कि फैक्टरी संचालकों ने दमकल विभाग से अनापत्ति प्रमाणपत्र (एनओसी) भी नहीं ली गई थी। मुख्य अग्निशमन अधिकारी राहुल पाल ने बताया कि दोनों फैक्टरी एक ही परिसर में संचालित हो रही थीं। बताया कि पेपर फैक्टरी में लगी आग अभी तक नहीं बुझ पाई है। जेसीबी की मदद से जले हुए रोल को हटाकर दमकल की टीम बेसमेंट के अंदर घुसकर बुझाने की कोशिश कर रही है। इसके लिए पांच वाटर टेंडर मौके पर रखे गए हैं। यहां तक कि आसपास में स्थित फैक्टरियों से उन्हें रिफिल करने का काम किया जा रहा है। बताया कि दोनों फैक्टरी के संचालकों को नोटिस भेजकर मानकों के उल्लंघन को लेकर जवाब मांगा जा रहा है।

दिल्ली में प्रेमी युगल ने की आत्महत्या

पिता ने लगाया बेटे की हत्या करने का आरोप

नई दिल्ली। दिल्ली के नजफगढ़ इलाके में दो नाबालिग लड़का-लड़की की संदिग्ध हालत में मौत हो गई। लड़की के घर की तीसरी मंजिल पर स्थित एक कमरे में दोनों फंदे से लटके मिले। शुरुआती जांच में पता चला कि दोनों एक दूसरे से प्यार करते थे। इस बात को लेकर दोनों परिवार के बीच विवाद हुआ था, लेकिन बाद में समझौता हो गया। लड़के के पिता ने लड़की पक्ष पर उनके बेटे को बुलाकर दोनों की हत्या करने का आरोप लगाया है। पुलिस अधिकारी का कहना है कि प्रथम दृष्टया मामला खुदकुशी का है। पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद ही मौत के कारणों का खुलासा हो पाएगा। पुलिस के अनुसार रविवार शाम चार बजे नजफगढ़ थाना पुलिस को अर्जुन पार्क में एक लड़के और लड़की के फांसी लगाए जाने की जानकारी मिली। सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची। घटना इमारत की तीसरी मंजिल पर हुई थी। पुलिस ने देखा कि कमरे में जाने का एक रास्ता है, जिस पर लोहे का दरवाजा लगा हुआ था। दरवाजे को मौके पर पहुंचे दमकल कर्मियों ने तोड़ा था। दमकल कर्मियों ने बताया कि दरवाजा अंदर से बंद था। दोनों 16 साल का लड़का लड़की चुन्नी की मदद से पंखे से लटके मिले। उन्होंने दोनों को नीचे उतार लिया। तब तक दोनों की मौत हो चुकी थी। पुलिस ने लड़के के परिवार वालों को घटना की जानकारी दी। सूचना मिलते ही लड़के के पिता और परिवार के अन्य सदस्य वहां पहुंच गए। पुलिस ने दोनों परिवार वालों से पूछताछ की। सूत्रों के मुताबिक परिवार वालों से पता चला कि इनके बीच प्रेम प्रसंग चल रहा था। इस वजह से दोनों परिवार के बीच विवाद हुआ था। मामला कानूनी कार्रवाई तक पहुंच गया था, लेकिन बाद में आपसी समझौते से इसे सुलझा लिया गया। द्वारका जिला पुलिस उपायुक्त अंकित सिंह ने बताया कि शवों की जांच में दोनों के शरीर पर कोई बाहरी चोट नहीं थी। डॉक्टर ने भी प्राथमिक रिपोर्ट में फांसी की बात कही है। इसके साथ ही दोनों ने जिस कमरे में खुदकुशी की है, वह अंदर से बंद था। इससे प्रथम दृष्टया मामला खुदकुशी का है, हालांकि पुलिस फिलहाल पोस्टमार्टम रिपोर्ट का इंतजार कर रही है। मृत लड़के के पिता ने लड़की के परिवार वालों पर बेटे को बुलाकर उसकी हत्या करने का आरोप लगाया है। उन्होंने बताया कि दोनों परिवारों में विवाद के बाद समझौता के दौरान लड़की के चाचा ने एक साल के भीतर उसे जान से मारने की धमकी दी थी। उन्होंने कहा कि लड़की वालों ने धमकी के मुताबिक उसकी हत्या कर दी। उन्होंने बताया कि वह मूलतः-यूपी के रहने वाले हैं, जबकि लड़की के परिवार वाले राजस्थान के रहने वाले हैं। उनके तीन बच्चे हैं और वह प्लंबर का काम करते हैं। पिता ने बताया कि दोनों बच्चे रिलेशन में थे।

संजय और जवाहर कॉलोनी को जलभराव से मिलेगी राहत

बकेट टाइप मशीनों से की जाएगी सीवर लाइन की सफाई

फरीदाबाद। नगर निगम ने संजय कॉलोनी व जवाहर कॉलोनी की गलियों में जलभराव और सीवर जाम की पुरानी समस्या को खत्म करने के लिए एक अहम कदम उठाया है। लाखों रुपये की लागत से यहां बकेट टाइप मशीनों के माध्यम से सीवर लाइन की गहराई तक सफाई कराई जाएगी। यह कार्य आगामी 5 महीने में पूरा किया जाएगा। संजय कॉलोनी शहर के उन इलाकों में शामिल है जहां बरसात के दिनों में गलियों में घुटनों तक पानी भर जाता है। गंदगी के चलते मच्छर, बदबू और बीमारियों का खतरा बना रहता है। हर बार लोग शिकायत करते हैं, लेकिन सफाई के पारंपरिक उपायों से स्थायी राहत नहीं मिलती। इस बार निगम ने तकनीकी समाधान की तरफ कदम बढ़ाया है। बकेट टाइप मशीनें संकरी गलियों में गहराई तक जमा गाद को बाहर निकालेंगी, जिससे सीवर की निकासी प्रणाली पहले से बेहतर होगी। इससे न सिर्फ बरसात में जलभराव रुकेगा बल्कि कॉलोनी में दुर्गंध, सीवर ओवरफ्लो और पानी के जमा होने की समस्या से भी छुटकारा मिलेगा। फरीदाबाद के ब्लैक स्पॉट में शामिल संजय कॉलोनी घनी आबादी वाला इलाका है। यहां जलभराव की समस्या अब आम हो चुकी है। बारिश होते ही यहां की सड़कों व गलियों में जलभराव की समस्या की लोगों को आदत पड़ चुकी है। सोमवार को हुई बारिश में भी कई जगहों पर दो फीट तक पानी भर गया था। इसमें वाहन चालकों व लोगों को काफी परेशानी हुई थी। बकेट टाइप मशीन से सीवर की सफाई करवाने पर लोगों के साथ सफाई कर्मचारियों को भी काफी लाभ होगा। जहां एक तरफ मशीन संकरी गलियों में बने गहरे सीवर को भी आसानी से और जल्दी साफ कर देगी वहीं कर्मचारियों को अब सीवर लाइन के अंदर नहीं उतरना पड़ेगा।

दुनिया के व्यस्ततम हवाईअड्डों में शामिल हुआ आईजीआई एयरपोर्ट

2023 के मुकाबले एक पायदान पहुंचा ऊपर

नई दिल्ली। एयरपोर्ट्स काउंसिल इंटरनेशनल (एसीआई) की ओर से मंगलवार को जारी रिपोर्ट के अनुसार, दिल्ली एयरपोर्ट पिछले साल 7.78 करोड़ से अधिक लोगों ने यात्रा की, जिससे यह 2023 के मुकाबले एक पायदान ऊपर चढ़ गया। दिल्ली का इंदिरा गांधी अंतरराष्ट्रीय हवाईअड्डा 2024 में दुनिया का 9वां सबसे व्यस्त हवाईअड्डा बन गया है। एयरपोर्ट्स काउंसिल इंटरनेशनल (एसीआई) की ओर से मंगलवार को जारी रिपोर्ट के अनुसार, दिल्ली एयरपोर्ट पिछले साल 7.78 करोड़ से अधिक लोगों ने यात्रा की, जिससे यह 2023 के मुकाबले एक पायदान ऊपर चढ़ गया। एसीआई की सूची में अमेरिका का अटलांटा हवाईअड्डा 10.8 करोड़ यात्रियों के साथ पहले स्थान पर रहा। दूसरे और तीसरे स्थान पर दुबई एयरपोर्ट (9.23 करोड़ यात्री) और अमेरिका का डलास/फोर्ट वर्थ एयरपोर्ट (8.78 करोड़ यात्री) रहे। रिपोर्ट के मुताबिक, 2024 में वैश्विक यात्री यातायात 9.4 अरब तक पहुंचा, जो 2023 से 8.4 प्रतिशत अधिक और कोविड-पूर्व स्तर (2019) से 2.7 प्रतिशत ज्यादा है। दिल्ली के अलावा, चीन का शंघाई पुडोंग एयरपोर्ट 11 पायदान चढ़कर 10वें स्थान पर पहुंच गया। विमान आवाजाही के मामले में दिल्ली एयरपोर्ट 15वें स्थान पर पहुंच गया, जबकि 2023 में यह 17वें स्थान पर था। 2024 में यहां 4,77,509 विमानों की आवाजाही दर्ज की गई। इस मामले में अटलांटा एयरपोर्ट 7,96,224 विमानों के साथ शीर्ष पर रहा। एसीआई ने कहा कि 2024 में विमानों की आवाजाही वैश्विक स्तर पर 10.6 करोड़ से अधिक हो गई। यह 2019 के स्तर का 96.8त्न है। इसमें साल-दर-साल 3.9 प्रतिशत का इजाफा हुआ है। एसीआई 170 देशों में 2,181 हवाई अड्डों का संचालन करने वाले 830 सदस्यों का प्रतिनिधित्व करता है। एसीआई वर्ल्ड के महानिदेशक जस्टिन एर्बासी ने कहा कि यह रैंकिंग वैश्विक विमानन के पैमाने और उद्योग की लचीलापन को दर्शाती है जो जटिल वैश्विक वातावरण के बावजूद लगातार बढ़ रही है।

कालोनीवासियों के पुनर्वास की होगी व्यवस्था

फरीदाबाद। नेहरू कॉलोनी में तोड़-फोड़ की कार्रवाई के फिलहाल रुकने की उम्मीद जताई जा रही है। प्रशासन की तरफ से लोगों को बड़ी राहत दी गई है। निगम आयुक्त ने निवासियों के पुनर्वास की व्यवस्था करने की बात कही है। नगर निगम आयुक्त धीरेंद्र खड़गटा ने जानकारी देते हुए बताया कि नेहरू कॉलोनी में प्रस्तावित तोड़फोड़ की कार्रवाई के संबंध में हाल ही में कॉलोनी के निवासियों एवं प्रतिनिधियों के साथ संवाद किया गया। इस दौरान कॉलोनी के लोगों की चिंताओं और सुझावों को गंभीरता से सुना गया। नगर निगम आयुक्त धीरेंद्र खड़गटा ने नेहरू कॉलोनी के प्रतिनिधियों को आश्वस्त करते हुए बताया कि किसी भी प्रकार की तोड़फोड़ की कार्रवाई से पूर्व इस विषय को राज्य सरकार के समक्ष प्रस्तुत किया जाएगा। उन्होंने कहा कि यदि उनके पास पात्र कॉलोनीवासियों द्वारा इस संदर्भ में कोई प्रस्ताव आएगा तो वे सरकार को भेजेंगे और उनका प्रयास रहेगा कि नेहरू कॉलोनी के पात्र निवासियों को वैकल्पिक आवास उपलब्ध करवाया जाए। निगम आयुक्त की तरफ से मिले आश्वासन के बाद इलाके के लोगों में खुशी का माहौल है। लोगों का कहना है कि प्रशासन की तरह सरकार का भी सहयोग मिलेगा तो उनके घर उजड़ने से बच जाएंगे। नगर निगम के आयुक्त की तरफ से पुनर्वास की बात के बाद मंगलवार शाम को नेहरू कॉलोनी में दोबारा धरना शुरू कर दिया है। धरने पर बैठी महिलाओं का कहना है कि पुनर्वास का मतलब हम लोगों को यहां से हटाया जाएगा। हम लोग अपने घरों को नहीं छोड़ना चाहते। हम लोग यहीं पर रहना चाहते हैं। लोगों ने सरकार व प्रशासन से मांग की है कि हमें स्थायी समाधान चाहिए। जब हम लोगों की अधिकारियों से बात हुई थी तो उन्होंने कहा था कि केवल तीन घरों को तोड़ा जाएगा। यह तीन घर उन लोगों के हैं जो नशे का कारोबार करते हैं। लोगों का कहना है कि अगर केवल तीन घर तोड़ने हैं तो 10 तारीख का इंतजार क्यों करना। इसके अलावा क्या गारंटी है कि दूसरे मकान नहीं टूटेंगे।

करोल बाग अग्नि मामले की न्यायिक जांच के लिए हाईकोर्ट में याचिका हुई दायर

नई दिल्ली। दिल्ली के करोल बाग स्थित विशाल मेगा मार्ट में चार जुलाई को हुई भीषण आग की घटना के संबंध में दिल्ली हाईकोर्ट में एक याचिका दायर की गई है। इस हादसे में दो लोगों की जान चली गई थी। याचिका गैर-सरकारी संगठन कुटुंब ने दायर की है जिसमें अदालत की निगरानी में मामले की स्वतंत्र जांच की मांग की गई है। वहीं, हाईकोर्ट ने एनजीओ कुटुंब को दिल्ली के करोल बाग स्थित विशाल मेगा मार्ट में लगी आग की जांच के लिए एक नई याचिका दायर करने को कहा है। याचिका में विशाल मेगा मार्ट के प्रबंधन, दिल्ली पुलिस, दिल्ली अग्निशमन सेवा और दिल्ली नगर निगम (एमसीडी) पर लापरवाही का आरोप लगाया गया है। एनजीओ ने मांग की है कि इन एजेंसियों की भूमिका और कथित चूक की जांच कराई जाए। याचिका जुलाई 2024 में ओल्ड राजेंद्र नगर में हुई बाढ़ की घटना से संबंधित एक चल रहे जनहित याचिका मामले के तहत दाखिल की गई। उस घटना में यूपीएससी कोचिंग सेंटर के बेसमेंट में नाले के फटने से अचानक बाढ़ आ गई थी, जिसमें तीन छात्रों की मौत हो गई थी। याचिका में सवाल उठाया गया है कि किस आधार पर भीड़-भाड़ वाले क्षेत्रों में संचालित वाणिज्यिक प्रतिष्ठानों को लाइसेंस और नो ऑब्जेक्शन सर्टिफिकेट (एनओसी) जारी किए जा रहे हैं, जबकि सुरक्षा मानकों का पालन नहीं किया जा रहा। इसमें एमसीडी, पुलिस और अग्निशमन विभाग के अधिकारियों की जवाबदेही तय करने की मांग की गई है, जो कथित रूप से सुरक्षा प्रोटोकॉल लागू कराने में विफल रहे। याचिका में यह सुनिश्चित करने की मांग की गई है कि विशाल मेगा मार्ट और आसपास की अन्य वाणिज्यिक इकाइयों के पास वैध एनओसी है या नहीं, इसकी जांच हो। इसके अतिरिक्त, करोल बाग और आसपास के क्षेत्रों में बिना लाइसेंस संचालित हो रहे शॉपिंग सेंटर, रेस्तरां, कोचिंग संस्थानों और अन्य प्रतिष्ठानों को अस्थायी रूप से बंद करने की मांग की गई है, जब तक कि इस विषय पर विस्तृत रिपोर्ट अदालत के समक्ष पेश न की जाए।

गुरु–शिष्य परंपरा भारतीय शिक्षा पद्धति का आधार, गुरुवंदन कार्यक्रम में वक्ताओं ने रखे विचार

मुरैना। गुरु ही एक शिक्षार्थी में उच्च आदर्शों की स्थापना करते हैं उनमें प्रेरणा और ज्ञान का संचार कर सही मार्ग दिखाते हैं। एक शिक्षार्थी को अपने शिक्षक या गुरु के प्रति सदा आदर और कृतज्ञता का भाव रखना चाहिए। गुरु-शिष्य परंपरा भारतीय शिक्षा पद्धति का आधार है, जो सदियों से ज्ञान और संस्कारों का संचार करती आई है। गुरु केवल एक शिक्षक नहीं होता, वह शिष्य का जीवन निर्माता होता है। वह ज्ञान का संप्रेषक, आचरण का आदर्श, और आत्मबोध का पथप्रदर्शक होता है। यह बिस्मिल फाउंडेशन के अध्यक्ष डॉ नरेश सिंह सिकरवार ने कही। डॉ सिकरवार बुधवार को शासकीय हाइस्कूल गलेथा परिसर में गुरु पूर्णिमा उत्सव के तहत आयोजित गुरुवंदन कार्यक्रम में पुरातन भारतीय शिक्षा पद्धति पर बोल रहे थे। इस अवसर पर शिक्षक, बिस्मिल शिक्षा एवं जनकल्याण सेवा संस्थान एवं मप्र शिक्षक संघ के पदाधिकारी, प्रबुद्ध नागरिक , युवा शामिल रहे। कार्यक्रम का शुभारंभ महर्षि वेदव्यास जी के चित्र पर माल्यार्पण, पूजा अर्चना कर दीप प्रज्वलित के साथ हुआ। डॉ. सिकरवार ने कहा कि महर्षि वशिष्ठ और विश्वामित्र से लेकर सांदीपनि, रामकृष्ण परमहंस और स्वामी विवेकानंद तक, हमारी परंपरा में ऐसे असंख्य गुरुओं ने समाज को दिशा दी है। विश्व में केवल भारत ही ऐसा देश है जहा पर शिक्षक अपने शिक्षार्थी को ज्ञान देने के साथ चरित्र निर्माण व जीवन मूल्य सिखाते हैं, जो विद्यार्थी में उच्च मूल्य स्थापित करने में बहुत उपयोगी है। समाज में जीवन मूल्यों को फिर से स्थापित करने गुरु शिष्य परम्परा को पुनर्जीवित करना होगा है। आधुनिक संदर्भ में भी महत्व और प्रासंगिकता बनी हुई है। इस परंपरा को जीवित रखना और इसे अगली पीढ़ी को सौंपना हमारी जिम्मेदारी है।

करह धाम पर आने वाले भक्तगणों के लिए यातायात विभाग ने जारी की ट्रैफिक व्यवस्था की जानकारी

समय जगत, मुरैना। प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी गुरुपूर्णिमा के अवसर पर पटिया वाले बाबा करह धाम आश्रम पर एक दिवसीय मेले एवं भण्डारे का आयोजन किया जा रहा है। जिसमें विशाल भण्डारा (प्रसादी) एवं पटिया वाले बाबा (रतनदास महाराज जी) के दर्शन हेतु लाखों की संख्या में श्रद्धालुओं के विभिन्न प्रकार के वाहनों से आने की प्रबल संभावना है, श्रद्धालुओं के आवागमन को दृष्टिगत रखते हुये यातायात का सुचारू रूप से संचालन हो सके, इस हेतु डायवर्सन रूट प्लान तैयार किया गया है, जिससे कि आमजन को आवागमन में असुविधा न हो सके। इसके लिए ग्वालियर तरफ से आने वाले श्रद्धालुओं के लिये करहधाम जाने हेतु टेकरी तिराहा से होकर जाने वाला मुख्य मार्ग निर्धारित किया गया है। अतः सभी श्रद्धालुगण करहधाम पहुंचने हेतु टेकरी तिराहा होते हुये मुख्य मार्ग का उपयोग करेंगे। वहीं मुरैना तरफ से आने वाले श्रद्धालुओं के लिये करहधाम जाने हेतु टेकरी तिराहा से होकर जाने वाला मुख्य मार्ग निर्धारित किया गया है। अतः सभी श्रद्धालुगण करहधाम पहुंचने हेतु टेकरी तिराहा होते हुये मुख्य मार्ग का उपयोग करेंगें। करहधाम से वापस बामौर ग्वालियर जाने वाले वाहन सीतापुर तिराहे होते हुये पमाया रोड होकर बामौर-ग्वालियर पहुंचेगें। करहधाम से मुरैना की ओर जाने वाले वाहन ग्राम धनेला होते हुये रामखिलाडी ढाबा एबी रोड होकर पहुंचेगें। टेकरी तिराहा होते हुये मुख्य मार्ग से करहधाम तरफ जाने वाले श्रद्धालु अपने भारी वाहन तथा ट्रेक्टर ट्रॉली, टाटा-407, केंटर, ट्रक, बस आदि सीतापुर तिराहा पर स्थित पार्किंग क्र. 03 में ही अपने वाहनों को पार्क करेंगे।

सार-समाचार

जीआरएस ने पिता सहित भाई के नाम पर आवंटित किया पीएम आवास

समय जगत, शहडोल। जिले की जनपद पंचायत ढोलर में भ्रष्टाचार अपने चरम पर है, पंचायत में पदस्थ रोजगार सहायक अमित सिंह द्वारा अपने निजी संबंधी का फर्जी तरीके से पीएम आवास का लाभ प्रदाय करने व पीएम आवास के राशि का प्राइवेट स्कूल के निर्माण कार्य करने को लेकर कलेक्टर से राममनोहर पाल ने कलेक्टर से शिकायत की है, शिकायतकर्ता ने बताया कि ग्राम पंचायत ढोलर रोजगार सहायक अमित सिंह द्वारा अपने परिवारजनों के नाम से पंचायत में पीएम आवास स्वीकृत कर दिया है तथा आज दिनांक तक अपने सगे संबंधी परिवारजनों के नाम से पीएम आवास का निर्माण नहीं कराया गया है, बल्कि उनका परिवार का निवास नगर पंचायत जयसिंहनगर के वार्ड नंबर 15 में पक्का मकान में निवासरत है तथा पीएम आवास राशि का उपयोग प्राइवेट विद्यालय अमृता पब्लिक स्कूल ग्राम लोडी बहरा के शासकीय भूमि खसरा नंबर 117/1 में बनाया जा रहा है, पीएम आवास परिवारजनों का फर्जी तरीके से अपने पिता सतेन्द्र सिंह पिता गणेश सिंह, बड़े भाई अजीत सिंह पिता सतेन्द्र सिंह, चाची निशा सिंह पति देवेन्द्र सिंह के नाम पीएम आवास स्वीकृत किया गया है। फरियादी ने पूरे मामले में जांच कर कार्यवाही की मांग की है।

शिक्षा के साथ व्यक्तित्व का निर्माण करते हैं गुरु

समय जगत, शहडोल। गुरू पूर्णिमा उत्सव के प्रथम दिवस के अवसर पर शहडोल जिले के विद्यालयों में प्रार्थना सभा के बाद गुरू पूर्णिमा के महत्व और पारंपरिक गुरू–शिष्य संस्कृति के बारे में, प्राचीन काल में प्रचलित गुरूकुल व्यवस्था एवं उसका भारतीय संस्कृति में प्रभाव पर निबंध प्रतियोगिता जैसे अन्य गतिविधिया आयोजित की गई। गुरू पूर्णिमा उत्सव के प्रथम दिवस के अवसर पर संभागीय मुख्यालय शहडोल के शासकीय लक्ष्मीबाई उच्चतर माध्यमिक विद्यालय शहडोल में कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के दौरान प्राचार्य शासकीय लक्ष्मीबाई कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय श्रीमती साधना जैन ने गुरू पूर्णिमा का महत्व बताते हुए कहा कि यह पर्व महर्षि वेदव्यास की जयंती के रूप में भी मनाया जाता है, जिन्होंने वेदों का संकलन एवं महाभारत की रचना की। गुरु का कार्य केवल पाठ पढ़ाना नहीं, बल्कि व्यक्तित्व का निर्माण करना भी है। कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए शिक्षिका श्रीमती अरूणिमा सिंह ने गुरु पूर्णिमा का महत्व बताते हुए कहा कि गुरु हमारे जीवन में मार्गदर्शन करने वाले दीपक के समान होते हैं, जो अज्ञानता रूपी अंधकार को दूर करके ज्ञान का प्रकाश फैलाते हैं। इस दिन महर्षि वेदव्यास के जन्म को भी स्मरण किया जाता है। गुरु हमें जीवन के हर मोड़ पर सही निर्णय लेने की समझ देते हैं और आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ना सिखाते हैं। इस अवसर पर श्रीमती सुनीता दादोरिया, श्री महेंद्र सिंह बेस, छाया प्रधान, राजेश श्रीवास्तव लाल जी तिवारी एवं विद्यालय के सभी शिक्षक शिक्षिकाएं उपस्थित रहे। गुरू पूर्णिमा उत्सव के प्रथम दिवस के अवसर पर शहडोल जिले के पी.एम. श्री शासकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय ब्यौहारी, शासकीय हाई स्कूल महदेवा, शासकीय उत्कृष्ट उच्चतर माध्यमिक विद्यालय ब्यौहारी में निबंध प्रतियोगिता, गुरू पूर्णिमा का महत्व शिक्षकों द्वारा बताया गया। इस अवसर पर संबंधित विद्यालयों के प्राचार्य, शिक्षक, छात्र–छात्राएं उपस्थित थें।

दिव्यांग कैलाश को मिली ट्रायसिकल, आने-जाने में अब नहीं होगी परेशानी

समय जगत, हरदा। शासन की निर्देशानुसार प्रत्येक मंगलवार को सभी कार्यालयों में जनसुनवाई कार्यक्रम में नागरिकों की समस्याएं सुनी जाती है और अधिकारी उनका मौके पर ही निराकरण करने का प्रयास करते है। मंगलवार को जिला पंचायत के सभाकक्ष में आयोजित जनसुनवाई में हरदा की जोशी कॉलोनी निवासी दिव्यांग युवक कैलाश कनाडे ने कलेक्टर सिद्धार्थ जैन को आवेदन देकर ट्रायसिकल की मांग की। दिव्यांग कैलाश के पास ट्रायसाइकिल न होने से उसे आने जाने में परेशानी हो रही थी। कलेक्टर श्री जैन ने जनसुनवाई में उप संचालक सामाजिक न्याय कमलेश सिंह को दिव्यांग कैलाश को ट्रायसिकल दिलाने के निर्देश दिये। सामाजिक न्याय विभाग द्वारा दिव्यांग कैलाश कनाडे के आवेदन पर त्वरित कार्यवाही करते हुए जिला दिव्यांग पुनर्वास केन्द्र द्वारा चिकित्सकीय जांच व दस्तावेजों के परीक्षण उपरान्त कैलाश का दिव्यांगता प्रमाण पत्र बनवाया गया। बुधवार को चिकित्सक की अनुशंसा से कैलाश को ट्रायसिकल प्रदान की गई, जिससे कैलाश खुशी–खुशी अपने घर गया। कैलाश अपना दिव्यांगता प्रमाण–पत्र और ट्रायसिकल पाकर बहुत खुश है। कैलाश ने दिव्यांगता प्रमाण–पत्र और ट्रायसिकल के लिये मुख्यमंत्री डॉ.यादव व जिला प्रशासन को धन्यवाद दिया।

कलेक्टर- एसपी ने जेल की व्यवस्थाओं का जायजा लेकर किया पौधरोपण

जिला जेल में 5 वीडियो कान्फ्रेंसिंग रुम की शुरुआत, इसी से हो सकेगी पेशी

खरगोन। शहर के टेमला रोड़ स्थित जिला जेल ओर अधिक हाईटेक हो गई है। यहां बुधवार को कलेक्टर सुश्री भव्या मित्तल एवं एसपी धर्मराज मीना ने समारोहपूर्वक 5 विडियो कान्फ्रेसिंग कक्षों का अनावरण किया। जेल अधीक्षक वीबी प्रसाद ने बताया इन कक्षों के का उद्देश्य कैदियों को अदालत में पेशी के लिए जेल से बाहर ले जाने की आवश्यकता को कम करना है, और सुरक्षा और दक्षता में सुधार करना है। इसके अलावा, कैदी अब अपने परिजनों से वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से बात कर सकेंगे। इस व्यवस्था से जेल प्रशासन को भी सुविधा होगी।

जेल पहुंचे कलेक्टर- एसपी ने जेल की व्यवस्थाओं का जायजा भी लिया। इस दौरान किचन में साफ-सफाई एवं परिसर में किए गए वृहद स्तर पर पौधरोपण एवं सुंदरता के लिए कि गई रंगाई- पुताई और पेटिंग पर जेल प्रबंधन की सराहना की। इस दौरान रिकार्ड रुम का निरीक्षण के दौरान कलेक्टर ने कपड़ों में रखे गए रिकार्ड को कार्टून में सुरक्षित तरीके से रखने के निर्देश दिए। एसपी मीना ने जेल में लगे कैमरों की जानकारी लेने पर 12 अतिरिक्त कैमरे लगवाने के निर्देश दिए। जेल चिकित्सक अभिनव शर्मा ने जेल अस्पताल में बंदियों के किए जाने वाले उपचार, दवाईयों की जानकारी दी। पीआईयू द्वारा बनाए जा रहे तीन नई बैरक का भी निरीक्षण किया। निरीक्षण एवं कक्षों के लोकार्पण के बाद कलेक्टर- एसपी ने एक पेड़ मां के नाम अभियान के तहत जेल परिसर में पौधरोपण भी किया। जेल अधीक्षक ने अधिकारियों से शैक्षणिक क्रियाकलापों को बढ़ाने के लिए 5वीं से 8वीं तक कक्षाएं संचालित कराए जाने के साथ ही आईटीआई के माध्यम से व्यवसायिक प्रशिक्षण कराने की मांग रखी। इस पर कलेक्टर ने एसडीएम बीएस कलेश को जिला शिक्षा अधिकारी से चर्चा कर कार्रवाई करने के निर्देश दिए। इस दौरान उप अधीक्षक सुभद्रा ठाकुर ने जेल परिसर का सीमांकन कराने की मांग रखी।

यूरिया के लिए किसानों ने नेशनल हाईवे पर तीन घंटे किया चक्काजाम

खरगोन। उमरखली रोड़ स्थित विपणन संघ के खाद बिक्री काउंटर पर सैंकड़ों की संख्या में किसान खाद खरीदने पहुंचे इनमें कई किसान ऐसे थे, जिन्हें 7 जुलाई को टोकन दिया गया था। जब बुधवार करीब 11 बजे केंद्र खुला और मौजूद कर्मचारियों ने यूरिया नही होने की बात कहते हुए अन्य किस्म की खाद लेने के लिए को प्रेरित करना चाहा तो किसान भड़क गए। इसके बाद एकजुट होकर रैली के रुप में बिस्टान नाका पहुंचे। यहां चित्तौडगढ़–भुसावल नेशनल हाईवे पर धरना देकर चक्काजाम प्रदर्शन किया। करीब 3 घंटे तक हाईवे पर आवाजाही बाधित रही। चक्काजाम की सूचना पर पहुंचे एसडीएम बीएस कलेश, तहसीलदार दिनेश सोनरतिया, कृषि सहायक उपसंचालक प्रकाश ठाकुर, सीसीबी अधिकारियों सहित पुलिसकर्मियों ने किसानों को समझाईश का प्रयास किया, लेकिन किसान खाद दिए जाने की मांग पर अड़े रहे।

सांदीपनि विद्यालय नटेरन में विधानसभा शमशाबाद के बीएलओ एवं सुपरवाइजर्स के प्रशिक्षण का समापन

नटेरन। भारत निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार चल रहे बी एल ओ एवं सुपरवाइजर के प्रशिक्षण का आज समापन हुआ विधानसभा क्षेत्र शमशाबाद के 253 मतदान केंद्र के बीएलओ का प्रथम दिवस में 100 एवं दूसरे दिवस में 100 एवं तृतीय दिवस में 53 बी एल ओ एवं 26 सुपरवाइजर को प्रशिक्षण दिया गया प्रशिक्षण सत्रों में भारत निर्वाचन आयोग द्वारा प्रशिक्षित मास्टर ट्रेनर्स द्वारा मतदाता सूची में नाम जोड़ने हटाने एवं संशोधन हेतु कौन-कौन से फॉर्म प्रयुक्त करना उदाहरण के तौर पर सभी बीएलओ एवं सुपरवाइजर से फॉर्म भरवा गए प्रशिक्षण के दौरान बी एल ओ को अपने अनुभाग से भली भांति परिचित होना चाहिए एवं मतदाता सूची का बारीकी से अध्ययन करना चाहिए।

अपने अनुभाग में कौन से नाम जोड़ना है कौन से नाम हटाना है एवं मतदाताओं के नाम में संशोधन करना है बी एल ओ को अपने अनुभाग में घर-घर सर्वे करने पर अपनी वेशभूषा एवं कार्य व्यवहार एवं अपने साथ नियुक्ति पत्र एवं परिचय पत्र अपने साथ रखें एवं अपने मतदाताओं से किस प्रकार संवाद करना चाहिए इसका रोल प्ले भी किया गया तत्पश्चात मूल्यांकन के तौर पर भारत निर्वाचन आयोग द्वारा भेजी गई लिंक को ओपन कर उसमें समाहित 30 प्रश्नों के उत्तर भरकर सबमिट किए गए एसडीएम श्री अजय प्रताप सिंह पटेल द्वारा सभी बीएलओ को अपने अनुभाग की मतदाता सूची सही एवं त्रुटि रहित रखना चाहिए कोई भी पात्र मतदाता छूटे न एवं अपात्र मतदाता सूची में न रहे जिससे निर्वाचन प्रक्रिया निष्पक्ष एवं पारदर्शी रहे प्रशिक्षण में तहसीलदार नटेरन आनंद जैन शमशाबाद तहसीलदार श्रीमती प्रेमलता पाल एवं नायब तहसीलदार श्री दर्शन लाल नेगी एवं कानून गो राजकुमार शर्मा भी उपस्थित रहे।

धान लगाने जा रहे मजदूरों से भरा पिकअप पलटा, 28 घायल, 12 गंभीर भोपाल रेफर

सैयद मसूद अली पटेल, गै़रतगंज। ज़िले की गैरतगंज तहसील के देहगांव थाना क्षेत्र के मुड़िया खेड़ा गांव में बुधवार की सुबह 8 बजे का है ज़िले में एक बड़ा सड़क हादसा हुआ है जिसमे मज़दूरों को लेकर जा रहे एक पिकअप वाहन को पलटा दिया। इस दर्दनाक घटना में 28 मजदूर घायल हुए हैं जिनमें से 12 की हालत गंभीर होने पर उन्हें भोपाल हमीदिया अस्पताल रेफ़र किया गया है। यह हादसा देहगांव थाना क्षेत्र के मुड़िया खेड़ा के पास भोपाल-सागर मुख्य मार्ग पर हुआ। प्राप्त जानकारी के अनुसार, गढ़ी क़स्बे के खैरुआ मोहल्ले से लगभग 40 मजदूर धान लगाने एक पिकअप वाहन क्रमांक एमपी38जी0840 में बैठकर जा रहे थे। इसी दौरान सुबह क़रीब 8 बजे, पिकअप वाहन मुड़िया खेड़ा के पास तेज रफ़्तार होने के कारण अनियंत्रित होकर पलट गया। हादसे के बाद मौके पर चीख-पुकार मच गई। स्थानीय ग्रामीणों और राहगीरों ने फ़ौरन मदद के लिए हाथ बढ़ाया और घायलों को वाहन से बाहर निकाला। एम्बुलेंस और 100 डायल की सहायता से सभी घायलों को तत्काल रायसेन अस्पताल पहुंचाया गया, जहां उनका इलाज शुरू किया गया। पांच गंभीर घायलों को बेहतर उपचार के लिए भोपाल हमीदिया अस्पताल रेफ़र किया गया है।

घायलों में शामिल हैं: इस घटना में पिकअप सवार हरिराम कुशवाहा, दीपेश कुशवाहा, गंगाबाई अहिरवार, सोनू अहिरवार, रानी बाई, कमल ठाकुर, बलवान, केसर बाई अहिरवार, परशुराम कुशवाहा, राजेश बंसल, अंजलि, रागनी, शीला बाई, कमल सिंह, लक्ष्मी नारायण, अजय सिंह, सविता आदिवासी, कल्लू आदिवासी, पूनम बाई, हल्की अहिरवार, कमलेश आदिवासी, रूप सिंह अहिरवार, किशोरी, रानी बाई, राजकुमारी, दीपाली, लखन रैकवार, प्रवेश शामिल है। देहगांव पुलिस ने मामले की जांच शुरू कर दी है। जिन मजदूरों को गंभीर चोटें आई हैं और उन्हें भोपाल जानकारी अभी प्रतीक्षित है। यह घटना एक बार फिर ग्रामीण क्षेत्रों में मजदूरों की असुरक्षित परिवहन व्यवस्था पर सवाल खड़े करती है।

नगर पालिका सबलगढ़ द्वारा सीएम के आदेश के बाद भी की जा रही है अवैध वसूली

मुरैना/सबलगढ़। नगर पालिका सबलगढ़ द्वारा गरीब हाथ ठेला एवं बाजार बैठक दुकान दारों से 20 रू. प्रतिदिन बसूली की जा रही है जिसके लिये नगर पालिका सबलगढ़ द्वारा ऑनलाइन नीलामी विज्ञप्ति पत्र क्रमांक 808 दिनांक 05.06.2025 को जारी की गई थी। जारी कार्यदेश मै गुमठी ओर हाथ ठेला दुकानदारों से 10 रुपये प्रतिदिन एवं फुटपाथ पर बैठकर समान बेचने वाले दुकानदारो से 5 रुपये प्रतिदिन बसूल करना तय किया था जिसके उपरांत भी मनमानी अवैध बसूली की जा रही है । साथ ही सबलगढ़ नगर पालिका द्वारा नेशनल हाइवे 552 से गुजरने वाले प्रत्येक माल वाहन वाहन एवं यात्री बसों से 100 रू. से लेकर 300 रूपये की बसूली एक बार निकलने पर की जा रही है जो कि थाने से महज 200 मीटर की दूरी पर नाका लगाकर बसूल किये जा रहे है। जिसका किसी प्रकार का टेंडर नगर पालिका सबलगढ़ द्वारा नहीं किया गया है। जबकि तत्कालीन मुख्यमंत्री माननीय शिवराज सिंह चैहान द्वारा दिनांक 29.05.2023 को सी.एम.हाउस में हाथ ठेला चालको के साथ बैठक में नगरीय निकाय द्वारा जारी शुल्क नहीं लिये जाने के निर्देश जारी किये गये थे जिसके उपरान्त भी सबलगढ़ नगर पालिका द्वारा अवैध रूप से बसूली की जा रही है।

कलेक्टर सिद्धार्थ जैन ने किया गांवों का भ्रमण, सुनी ग्रामीणों की समस्याएं

‘एक पेड़ मां के नाम’ अभियान के तहत कलेक्टर ने किया पौधरोपण

समय जगत, हरदा। कलेक्टर सिद्धार्थ जैन ने बुधवार को जिले के ग्रामीण क्षेत्र सुल्तानपुर, जिनवानिया, खुदिया व पीपल्याखुदिया का भ्रमण किया। इस दौरान उन्होने वहां स्थित वेयर हाउस, स्कूल, उचित मूल्य की दुकान, उप स्वास्थ्य केन्द्र व छात्रावास का निरीक्षण कर वहां की व्यवस्थाएं देखीं। इस दौरान जिला शिक्षा अधिकारी डी.एस. रघुवंशी, जिला परियोजना समन्वयक बलवन्त पटेल, एसडीएम अशोक डेहरिया, जिला पंचायत के अतिरिक्त मुख्य कार्यपालन अधिकारी प्रवीण इवने सहित अन्य अधिकारी कर्मचारी उपस्थित थे। कलेक्टर श्री जैन ने ग्राम सुल्तानपुर में वेयर हाउस का निरीक्षण किया। उन्होने अधिकारियों को निर्देश दिये कि किसी भी ट्राली या किसान से ढाई सौ ग्राम से अधिक सैम्पल न लें। किसान का मोबाइल नम्बर एवं नाम लिखें तथा एक छोटा सा वीडियो बनाएं ताकि विवाद की स्थिति निर्मित न हों। उन्होने उपस्थित अधिकारियों को निर्देश दिये कि मूंग को बारिश से बचाव के लिये आवश्यक व्यवस्थाएं की जाए। इस दौरान उन्होने मूंग सेम्पलिंग व नमी मापने की प्रक्रिया का भी अवलोकन किया। निरीक्षण के दौरान कलेक्टर श्री जैन ने ग्राम जिनवानिया व खुदिया में हाई स्कूल का निरीक्षण किया। उन्होने इस दौरान उपस्थित शिक्षकों से रिजल्ट की जानकारी ली। ग्राम खुदिया में स्कूल के निरीक्षण के दौरान स्कूल में अव्यवस्था पाये जाने पर प्रभारी प्राचार्य सुखराम माणिक का नो वर्क नो पे के आधार पर 10 दिन का वेतन काटने के निर्देश जिला शिक्षा अधिकारी को दिये। उन्होने शिक्षकों को निर्देशित किया कि जिन विषयों में परीक्षा परिणाम कम रहा, उन विषयों में बेहतर परीक्षा परिणाम लाने के लिये प्रयास करें। उन्होने शिक्षकों को स्मार्ट क्लास के माध्यम से बच्चों की अतिरिक्त कक्षाएं लगाने के निर्देश भी दिये। उन्होने निर्देशित किया कि अध्यापन कार्य में लापरवाही बरतने वाले अतिथि शिक्षकों पर भी कार्यवाही की जाए। उन्होने अधिकारियों को निर्देशित किया कि स्कूलों में विद्यार्थियों की शत प्रतिशत उपस्थिति सुनिश्चित की जाए। कलेक्टर श्री जैन ने ग्राम खुदिया के हाई स्कूल में ''एक पेड़ माँ के नाम'' अभियान के तहत पौधरोपण किया। इस दौरान उन्होने आम का पौधा रोपा।